गुरुजी महाराज के सुनहरे वचन

गुरु वचन अमृत स्वरूप

परिचय

गुरुजी महाराज एक प्रैक्टिकल गुरु हैं।
गुरुजी कभी प्रवचन नहीं करते थे।

हम सबने संगत से सुना है कि गुरुजी कभी प्रवचन नहीं करते थे। वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के माध्यम से मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने जीवन की शिक्षा दी और व्यावहारिक निर्देशों द्वारा हमें अपना दैनिक जीवन जीने का तरीका सिखाया।

अपने भौतिक रूप में गुरुजी महाराज द्वारा प्रदान किये गए मार्गदर्शन को संकलित करने का और संगत के साथ साझा करने का, यह हमारा विनम्र प्रयास है। संगत ने हमें जिस रूप में यह वचन सौंपे हैं, यह वैसे ही प्रलेखित किए जा रहे हैं। (उनमें से कुछ व्यक्तिगत निर्देश और अनुदेश थे, उन संगत के लिए जिन्हें वे मिले - उन्हें साझा नहीं किया गया है और वे इस संग्रह में शामिल नहीं हैं।)

मल्टीलिंगुअल ग्रुप की शुरुआत गुरुजी महाराज की कृपा और निर्देश से हुई, जब २४ जुलाई २०२० सुबह के करीब पाँच बजे एक संगत, सुरेश वासन अंकल को स्वपन में गुरुजी महाराज ने एक फाइल सौंपी जिसमें गुरबाणी शबद थे और कुछ खाली कागज़ थे। तेज़ गति से बात करते हुए गुरुजी महाराज ने उन्हें दो बार कहा, "इस कम्म नूं अग्गे वधाओ" ("इस काम को तीव्र गति से आगे बढ़ाओ")। अंकल को ईश्वर ने हुक्म दिया और यह मार्ग दर्शाया।

गुरुजी महाराज के प्रति गहरी कृतज्ञता महसूस करते हुए और विस्तृत दृष्टि का मार्गदर्शन प्राप्त करके, वैश्विक स्तर पर विभिन्न धर्म, जाति, पंथ और भाषाओं में गुरुजी के प्रकाश, उनकी महिमा और वचनों के प्रसार की एक विनम्र पहल हुई। संगत का समर्थन पाकर, फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर "शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल" फेसबुक ग्रुप निर्मित किया गया। बहुभाषीय वैश्विक सेवादारों ने आगे बढ़कर कई भाषाओं में अनेक गतिविधियों में भाग लिया।

गुरुजी की कृपा से, वर्ष २०२१ में गुरुजी महाराज के सुनहरे वचनों का संग्रह करने की सेवा की शुरुआत हुई। सर्दी की एक शाम मुझे सुरेश वासन अंकल का फोन आया और उन्होंने मेरा मार्गदर्शन करते हुए कहा कि वचन संकलन आरम्भ करने का समय आ गया है। गुरुजी महाराज से यह उपहार पाकर मेरा हृदय प्रेम और कृतज्ञता से भर गया - यह संगत की सेवा का अवसर था।

हमने सेवा की शुरुआत संगत के उन सदस्यों से सम्पर्क करके की, जो गुरुजी महाराज से उनके भौतिक रूप में मिले थे और हमने उनसे निवेदन किया कि उन्हें कहे गए गुरुजी महाराज के अनमोल वचन वे हमारे साथ साझा करें। सबसे पहले हम उनके लिए अपनी कृतज्ञता और अभिवादन व्यक्त करते हैं कि उन्होंने गुरु परिवार के साथ यह अनमोल रत्न साझा किए।

यह यात्रा मेरे लिए एक अवर्णनीय आशीर्वाद रही है। जैसे-जैसे मैं गुरुजी के वचन पढ़ती गई, मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरे मन में नये दरवाज़े खुल रहे थे। पिछले कुछ वर्षों में इस सेवा की कालावधि

मैं मुझे इनसे शक्ति और मार्गदर्शन प्राप्त हुए हैं। गुरुजी महाराज अपनी संगत से क्या चाहते थे, वह कुछ बेहतर समझ आने लगा है। वचन संकलन की सेवा मुझे एक बेहतर इंसान बना रही है और व्यावहारिक तरीके से सार्थक जीवन जीना सिखा रही है।

इस अमृत धारा में भीगने के लिए, इस रस का आनंद उठाने के लिए, आपको अंदर से तर कर देने के लिए और आपकी अंतरात्मा की पूर्ती के लिए, मल्टीलिंगुअल ग्रुप आपको आमंत्रित करता है।

यह दिव्य वचन संकलन गुरुजी महाराज के साथ और गुरुजी महाराज की ओर, आपकी इस यात्रा में मार्गदर्शक प्रकाश प्रदान करें।

"गुरु वचनों को रखना संभाल के, गुरु वचनों में गहरा राज़ है। जिसने जानी है महिमा गुरु की, उसका डूबा कभी न जहाज़ है, उसका भव से बेड़ा पार है।"

गुरुजी के अपार आशीर्वाद के साथ हम इस यात्रा को जारी रखने की आशा करते हैं और कामना करते हैं कि गुरुजी महाराज के वचनो का और अधिक संग्रह कर सकें और आने वाली पीढ़ियों के लिए, भौगोलिक सीमाओं के पार, अनेक भाषाओं में इनका प्रचार कर सकें।

गुरुजी महाराज के अपार आशीर्वाद से वैश्विक संगत के लिए

'**गुरु वचन : अमृत स्वरूप**' संकलन जारी किया जा रहा है।

ॐ नमः शिवाय शिवजी सदा सहाय।
ॐ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय।

उनके आशीर्वाद और कृपा से ही, सेवा में :-

शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल फेसबुक पेज

सुरेश वासन अंकल और सूद आंटी

www.फेसबुक.कॉम/शुक्रानागुरुजीमहाराजदा

गुरुजीवचनकलेक्शन@जीमेल.कॉम

(GurujiVachanCollection@gmail.com)

रिलीज़ दिसंबर २०२४ (2024) वॉल्यूम १ और २

हिंदी अनुवादिका - सेवादार आंटीयां

प्रार्थना

शिवे भक्ति: शिवे भक्ति: शिवे भक्तिर्भवे भवे ।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।।

प्रत्येक जन्म में मेरी शिव में भक्ति हो,
शिव में भक्ति हो, शिव में भक्ति हो।
शिव के सिवा दूसरा कोई मुझे शरण देनेवाला नहीं।
महादेव! आप ही मेरे लिए शरणदाता हैं।

हे प्रभु, देवताओं के स्वामी!

कृपया मुझे अपनी शाश्वती भक्ति प्रदान कीजिये।

परमेश्वर! मैं सदा आपके भक्तोंसे मित्रता रखूँ,

दीनों पर सदा मेरा दयाभाव बना रहे और

अन्यान्य दुष्ट प्राणियों की मैं उपेक्षा करता रहूँ।

महेश्वर! कभी भी मुझमें

आसुरभाव का उदय न हो।

नाथ! निरन्तर आपके शुभ भजनमें तल्लीन रहकर

निर्भय बना रहूँ।

गुरु साहिब ने निर्दिष्ट किया कि
सुबह प्रार्थना करें।
एक सुरक्षित, घटना रहित रात के लिए
भगवान का शुक्रिया अदा करें
और एक सफल दिन के लिए प्रार्थना करें।
शाम को, दिन गुज़ारने में सक्षम होने के लिए और
उनके आशीर्वाद से घर वापस आने के लिए
भगवान का धन्यवाद करें।
उसके बाद, एक घटना रहित रात के लिए आशीर्वाद माँगें।

धरती माता का धन्यवाद करें
उस हवा के लिए जिसमें हम साँस लेते हैं,
उस खाने के लिए जिसे हम ग्रहण करते हैं
और उस ज़मीन के लिए जिस पर हम रहते हैं।

हमेशा कल्पना करो कि
मैं तुम्हारे पीछे खड़ा हूँ,
जब तुम ऐसा करोगे,
मैं प्रकट होऊंगा

विषयसूची

परिचय.......... 2

प्रार्थना.......... 6

गुरुजी महाराज के सुनहरे वचन.......... 14

1. आर. पी. सिंगला अंकल और गौरी आंटी.......... 15
2. तनुज कपूर आंटी.......... 26
3. सुखदेव कौर आंटी.......... 27
4. एयर मार्शल अनिल चोपड़ा अंकल.......... 33
5. आकाश सेठी अंकल.......... 36
6. रशिमा मल्ही आंटी.......... 37
7. राजेश चोपड़ा अंकल.......... 39
8. आरती कपूर आंटी.......... 40
9. महेंद्र प्रताप सिंह अंकल.......... 42
10. उषा सिंह आंटी.......... 44
11. सुकरात चोपड़ा अंकल.......... 49
12. सोनिया मल्होत्रा आंटी.......... 50
13. अश्विनी वशिष्ठ अंकल.......... 59
14. नरेन्द्र ढंड अंकल.......... 60
15. बब्बू संधु आंटी और संधु अंकल.......... 84
16. डॉ. नीलम सिंह आंटी.......... 85
17. सबीना कोचर आंटी.......... 86

18. रूपा सूद आंटी 113
19. सोनिया मेहता आंटी 114
20. शालिनी खेड़ा आंटी 116
21. गौरी त्यागी आंटी 126
22. ऋतु सेठ आंटी 128
23. डॉ. चंद्रकांत पांडव अंकल और स्मिता पांडव आंटी 129
24. पूनम भसीन आंटी 131
25. उषा भाटिया आंटी और परिवार 133
26. अनमोल कुमार अंकल 136
27. बैम्बी आंटी 137
28. नीतू भल्ला आंटी 160
29. जेठरा परिवार 163
30. अनिल सेठ अंकल 169
31. दीपिका गुप्ता आंटी और संजय गुप्ता अंकल 174
32. कृष्ण सेतिया अंकल 177
33. लीला जोशी आंटी 182
34. पंकज गौतम अंकल 184
35. डॉ बीना सिंह 189
36. सुकृति वंदना शर्मा आंटी 191
37. उमेश जैन अंकल और जूही जैन आंटी 193
38. अक्षय भल्ला अंकल 194

39. मेलोडी आंटी (रेनू शर्मा आंटी) 195
40. कमांडर शर्मा अंकल 199
41. गोल्डी रंधावा आंटी 201
42. शिव अंकल 202
43. रघुबीर अंकल 204
लेखक की टिप्पणी 208
बहुभाषीय दृष्टिकोण 210

गुरु संगत को
कहे गए
गुरुजी महाराज के
सुनहरे वचन :-

1. आर. पी. सिंगला अंकल और गौरी आंटी

1. जद तुस्सी मेरे कॉल आंदे हो तां जुत्ती नाल अपनी अकल ते रफल (यानि रुतबे का अहम्), बाहर छड कर आओ।
2. नथिंग इज़ बाय चांस, एवरीथिंग बाय चॉइस।
   - कुछ भी संयोग से नहीं है, सब कुछ उनकी मर्जी से है।
3. सूरज हैरान हो गया।
   - सूरज भी हैरान होकर गुरुजी के दर्शन को आता है।
4. किसी की निंदा चुगली मत करो, न ही सुनो। सुनने से भी उतना ही पाप लगता है।
5. किसी के भी दुःख न सुनो, उससे उसकी नेगेटिविटी तुम्हारे ऊपर ट्रांसफर हो जाती है।
6. हर पूर्णमासी को तुम्हें, मेरे (गुरुजी के) चाँद में दर्शन होंगे।
7. मेरे से (गुरुजी से) वन-टू-वन सीधा कनेक्शन रखो, न कि किसी और के माध्यम से।
8. अहंकार ते मैं (गुरुजी) इकट्ठे नहीं रह सकदे। इस लयी कदे अहंकार न करो।

9. मंदिर विच या मेरे कोल आकर फोन यूज़ न करो, इससे तुम्हारी ब्लेस्सिंग्स उसको ट्रांसफर हो जाएँगी।
10. मैं था, मैं हूँ, मैं रहूँगा हमेशा टु ब्लेस यू ऑल।
- मैं था, मैं हूँ, मैं रहूँगा हमेशा तुम सभी को आशीर्वाद देने के लिए।
11. इत्थे खाओगे तां दवाई है, घर ले जाओगे तां मिठाई।
12. जे फैमिली का इक मेम्बर भी आ के लंगर प्रशाद खा लेंदा है तां सारा कुटुंब ब्लेस हो जांदा है चाहे किन्नी दूर होवे।
- जब फैमिली का इक मेम्बर भी आ के लंगर प्रशाद खा लेता है तो सारा कुटुंब ब्लेस हो जाता है चाहे कितना भी दूर होये।
13. भक्ति ते रास्ते ते चलना बहुत औखा है, खंडे दी धार है। ज़रा भी टस से मस हुए तो कट्टे जाओगे।
- भक्ति के रास्ते पर चलना बहुत मुश्किल है, खंडे की धार जैसा है। ज़रा भी टस से मस हुए तो कट जाओगे।
- खंडे की धार - दोधारी तलवार, अच्छाई को बुराई से अलग करने का प्रतीक।

14. साधु भाव का भूखा होता है, भोजन का भूखा नहीं।
15. कीचड़ में कमल बनके रहो।
16. काजल की कोठरी में बिना कालख लगाये रह कर दिखाओ।
17. बड़ा मंदिर मेरी शिवपुरी है।
18. मेरे पास कोई बिना मेरी आज्ञा के नहीं आ सकता। जिसको मैं बुलाता हूँ सिर्फ वो ही आ सकता है।
19. कदे भी किसी नू फोन ते पुछ के, कि आज संगत में गुरुजी के दर्शन होंगे या नहीं, नहीं आणा चाइदा। जो भी आंदा है बेशक बाहर वाले गेट ते मत्था टेक कर जाए, पूरी ब्लेस्सिंग्स ले जाता है।
   - कभी भी किसी को फोन पर पूछ के, कि आज संगत में गुरुजी के दर्शन होंगे या नहीं, नहीं आना चाहिए। जो भी आता है बेशक बाहर वाले गेट से माथा टेक कर जाए, पूरा आशीर्वाद ले जाता है।
20. मैनु संगत बहुत प्यारी है।
21. सिर्फ किताबी पाठ, पाठ नहीं हुंदा। अपनी ड्यूटी नू सेवा-भाव नाल करना भी पाठ है।

- सिर्फ किताबी पाठ ही पाठ नहीं होता। अपने कर्तव्य को सेवा-भाव के साथ करना भी पाठ है।

22. पंडितां ते ज्योतिषियां दे चक्कर विच नहीं पैणा। उन्हां नू अपनी गल्ल ते सर्टेंटी नहीं हुंदी।

- पंडित और ज्योतिषियों के चक्कर में नहीं पढ़ना। उनको अपनी बात पर भरोसा नहीं होता।

23. कदे भी बर्थ स्टोन नहीं पाओणा चाइदा, इन्हां दा पुट्ठा असर हुंदा है।

- कभी भी बर्थ स्टोन नहीं पहनना चाहिए, इनका उल्टा असर होता है।

24. गुरुजी दी गल्ल कदे भी कटणी नहीं चाइदि, जो गुरुजी केन्दे ने ओहि दुनिया दा सच है।

- गुरुजी दी बात कभी भी काटनी नहीं चाहिए; जो गुरुजी कहते हैं, वही दुनिया का सच है।

25. घर दी सजावट वास्ते महँगी महँगी पेंटिंग भी नहीं लगानी चाहिदी क्योंकि इन्हा विच आर्टिस्ट दी नेगेटिविटी भी आ जांदी है।

- घर की सजावट में महँगी पेंटिंग्स भी नहीं लगानी चाहिए क्योंकि इनमें कलाकार की नकारात्मकता भी आ जाती है।

26. मैं सारे डाक्टर्स नू फेल कर देंदा हां।
   - मैं सारे डॉक्टरों को फेल कर देता हूं।

27. हालात बहुत माढ़े आ रहे हैं, जो गुरु चरणा नाल लगा रहेगा ओही बचेगा।
   - हालात बहुत खराब आ रहे हैं, जो गुरु चरणों में लगेगा वही बचेगा।

28. मैं तुहाडियां फाइलां खोलण नहीं, बंद करण आया हां।
   - मैं तुम्हारी फाइलें खोलने नहीं, बंद करने आया हूं।

29. सिर्फ गुरु ही त्वाडे बुरे कर्म मिटा के, नवे लेख लिख सकदा है।
   - सिर्फ गुरु ही तुम्हारे बुरे करम मिटा के, नये लेख लिख सकता है।

30. जदों तुस्सी गुरु चरणां विच आ के मत्था टेकदे हो तां त्वाडे पुट्ठे करम गुरु कृपा नाल सिद्धे हो जांदे हां।

- जब तुम गुरु चरणों में आ के माथा टेकते हो तो तुम्हारे उलटे कर्म गुरु कृपा से सीधे हो जाते हैं।।

31. लंगर ते चाय प्रशाद विच गुरुजी दियां ब्लेस्सिंग्स हां, इस नू प्रशाद समझ के ही खाणा है, न की एक आइटम समझ के।

- लंगर और चाय प्रसाद में गुरुजी का आशीर्वाद है, इसको प्रसाद समझ के ही खाना है, न कि एक पदार्थ समझ के।

32. अपने बर्थडे ते, सब नू पेड़ लगाओने चाइदे हां।

- अपने जनम दिन पर, सब को पेड़ लगाने चाहिए।

33. किन्ने कल्याण ता मैं बिना पता लग्गण दे ही कर दिंदा हां।

- कितने कल्याण तो मैं बिना पता लगे ही कर देता हूं।

34. जे कोई मेरी तरफ इक कदम बड़ाओंदा है मैं उसनूं सौ कदम अग्गे होके लैंदा हां।

- जो कोई मेरी तरफ एक कदम बड़ाता है उसे मैं सौ कदम आगे आके लेता हूँ।

35. मैं प्रैक्टिकल करके दसदां हां, खाली प्रवचन नहीं करदा।

- मैं प्रैक्टिकल करके बताता हुन, खाली प्रवचन नहीं करता।

36. गुरुजी नूं इतना प्यार करो कि हर वेले, सोंदे जागदे, खांदे पिंदे, गुरुजी याद होवण।

- गुरुजी को इतना प्यार करो कि हर वक्त, सोते जागते, खाते पीते, गुरुजी याद रहें।

37. गुरुजी दा कहना है कि मैं रसिक बैरागी हां, तुस्सी भी बनो। दुनिया दा रस एन्जॉय करो, पर इन्ना विच फंसो नहीं।

- दुनिया के रसो का आनंद लो, पर इनमें फँसो नहीं।

38. गुरुजी तों अपने कित्ते सब करम बख्शा लेने चाइदे क्योंकि सानूं नहीं पता साडा केढ़ा करम चंगा है ते केढ़ा मंदा।

- गुरुजी से अपने किए सब करम बक्शा लेने चाहिए क्योंकि हमें नहीं पता के हमारा कौनसा करम अच्छा है और कौनसा मंदा।

39. नॉन-वेज ना खाओगे तां चंगे रहोगे। अपने पेट नूं मुरदेआं दी कब्र ना बनाओ।

- नॉन-वेज नहीं खाओगे तो अच्छे रहोगे। अपने पेट को मुर्दों की क़बर बनाओ।

40. आत्महत्या करना महापाप है। रब ने ऐना सोणा ते बेशकीमती शरीर दित्ता है, इसदी कदर करो।

41. नेगेटिव गाने, पिक्चर्स, सीरियल ना देखो। इसदे नाल नेगेटिविटी भर जांदी है।

- नकारात्मक गाने, फिल्में, सीरियल नहीं देखो। इससे नकारात्मकता भर जाती है।

42. बच्चेयां उत्ते, पढ़ाई नूं लेके ज़्यादा ज़ोर नहीं पाओणा चाइदा।

- बच्चों के ऊपर पढ़ाई को लेकर ज्यादा ज़ोर नहीं देना चाहिए।

43. मैं पहलां उसनूं ब्लेस्स करदा हां जो त्वानु लेके औंदा है, उस्तों बाद त्वानु। हालाँकि मेरी रज़ा तों बिना कोई मेरे चरणा विच नहीं आ सकदा।

- मैं सबसे पहले उसको आशीर्वाद देता हूं जो तुम्हें लेके आता है, उसके बाद तुम्हें। हालाँकि मेरी रज़ा के बिना कोई मेरे चरणों में नहीं आ सकता।

44. गुरुजी दे ब्लेस करण दे तरीके पूरी दुनिया नालों वखरे हैं। गुरुजी नूं ही पता है किस कम विच कल्याण है।
   - गुरुजी के आशीर्वाद देने के तरीके पूरी दुनिया से अलग हैं। गुरुजी को ही पता है कि किस काम में कल्याण है।
45. जे मन चंगा ते नलके दा पानी भी गंगा।
46. रब तों डरो नहीं, रब नाल प्यार करो।
47. फुल सरेंडर, फुल प्रोटेक्शन।
48. गुरुजी का फुल फॉर्म गुरुजी ने बताया :-

- जब चारों तरफ अंधेरा हो,
- यकीन उठ गया तेरा हो,
- गुमसुम न हो, मत हो परेशान,
- रुके तेरे बनेंगे सारे काम,
- जीवन में कर बस गुरुजी का ध्यान।

- यह कार्ड गौरी सिंगला आंटी को स्वयं गुरुजी ने दिया था जब वे एम्पायर एस्टेट में संगत में अपने आसन पर विराजमान थे। तब से पूरे परिवार ने नमस्ते या नमस्कार के बजाय संगत को 'जय गुरुजी' कहकर सम्बोधित करना आरम्भ किया।

49. संसार रूपी चक्की विच पिसे जाण तो ओ ही बचेगा जो मेरे चरणा विच रहेगा।
    - संसार रुपी चक्की में पिसे जाने से वो ही बचेगा जो मेरे चरणो में रहेगा।
50. चिंता छड्डो, चिंतन करो।
51. मेरे नाल रहोगे ते ऐश करोगे।
52. संगत ही त्वाडा परिवार है।

53. लव माय सोल, नॉट माय बॉडी।
   - मेरी आत्मा से प्यार करो, मेरे शरीर से नहीं।
54. मैं जो त्वानु देंण आया हां ओ तां कोई मंगदा ही नहीं।
   - मैं जो तुम्हें देने आया हूं वो कोई मांगता ही नहीं।
55. गुरु तों कद्दे मंगो नहीं, गुरुजी नूं मन्नो।
   - गुरु से कभी मांगो नहीं, गुरुजी को मानो।
56. गुरु का दर न छड्डीं, काला ना पवीं।
   - गुरु का दर न छोड़ना, काला न पड़ना।

2. तनुज कपूर आंटी

1. हुण गुरुजी मिल गए ने, हुण सब ठीक हो जाणा है।
   - अब गुरुजी मिल गए हैं, अब सब ठीक हो जाना है।
2. गुरुआं नूं इक वारि कहिदा है।
   - गुरुओं को एक बार ही कहते हैं।
3. नारी शक्ति सबतों प्रबल है।
4. माफी माँग लो... उस्तों बाद किसे कोलों नहीं डरना, मैं त्वाडे नाल हां।
   - माफ़ी माँग लो... उसके बाद किसी से नहीं डरना, मैं तुम्हारे साथ हूँ।
5. बहुत चंगा करदे हो - खुश रहणा चाइदा है।
   - बहुत अच्छा करते हो - खुश रहना चाहिए।
6. मीट नहीं खाणा चाइदा।
   - मीट नहीं खाना चाहिए।

3. सुखदेव कौर आंटी

1. जदों तुसी अपने जूते गेट दे बाहर खोलदे हो, उस वक्त अपनी अकल, अपनी शोहरत, अपना रुत्बा, अपना रैंक, सारा कुछ अपना बाहर जुत्ती दे नाल ही रख के आना। मेरे कोल सिर्फ क्लियर हार्टेड (साफ दिलवाले) ही आंदे ने, ते आंदे रहेंगे।
2. मेरे कोल कोई असल चीज़ त लेण आंदा ही नहीं, दुनायवी वस्तुआं दी मंग करदे ने, जिदर कोई फिर चांदा है, मैं उदरों ओनु पासे वल तोड़ देंदा हां। असल चीज़ कोई नहीं लेण आंदा।
   - मेरे पास कोई असल चीज़ को लेने आता ही नहीं, सांसारिक चीजों की मांग करते हैं। जिदर कोई फिर चाहता है, मैं वहां उसकी तरफ मोड़ देता हूं। असल चीज़ कोई नहीं लेने आता।
3. जिन्ना टाइम तुस्सी ऐथे मेरे दरबार विच बैठे हो, उन्ना टाइम तुस्सी समाधि ला के बैठना, ना कि इधर उधर देखना, ना किसी नाल कोई गल करनी है। चौर चुगली बंद।

- जितना समय तुम यहां मेरे दरबार में बैठे हो, उतना समय तुम समाधि लगा के बैठो, ना के इधर उधर देखना है, ना किसी के साथ कोई बात करनी है। चोर चुगली बंद।

4. ऐ मंत्र जाप करेया करो... ॐ नमः शिवाय शिवजी सदा सहाय।

- गुरुजी से जब भी हमने पूछा, के हमें पूछते हैं गुरुजी जाप मंत्र क्या देते हैं... उस समय गुरुजी ने हमें ये ही मंत्र जाप दिया। फिर संगत ने महाराज की आज्ञा लेकर "गुरुजी सदा सहाय" साथ जोड़ लिया।

5. मेरे तों मंगो ना, मैनु मन्नो। मानना है, माँगना नहीं है। सब मैनु पता है कि मैं केड़े भक्त ते, केड़े टाइम दे उत्ते, मैं की देणा है।

- मेरे से मांगो नहीं, मेरे को मानो। मानना है, मांगना नहीं है। सब मेरे को पता है कि मैंने किस भक्त को, किस समय पर, मुझे क्या देना है।

6. जदों मेरे कोल आंदे हो, मेरे दरबार विच आंदे हो, डायरेक्ट घरों चलना, मेरे कोल पहुँचना, ते ऐथों जाके

सिद्धे अपने घर जाणा। किसे दे घर-बार नि जाणा। जेड़ियाँ ब्लेसिंग्स हो गइआं, ओ त्वाडे नाल ही जांगियां, त्वाडे घर तक। फेर मैं देखता अग्गे एह मैनु ही मिलन वास्ते आए सी, ऐना दे कोई अपना बाहर किसी रिश्तेदारी विच कोई कम नहीं सी।

- जब मेरे पास आते हो, मेरे दरबार में आते हो, सीधे घर से चलना, मेरे पास पहुंचना, और यहां से सीधे अपने घर जाना। किसी के घर-बार नहीं जाना। जो आशीर्वाद हो गए, वो तुम्हारे साथ ही जाएंगे, तुम्हारे घर तक। फिर मैं देखता हूं, ये मुझे ही मिलने के लिए आए थे, इनका कोई अपना बाहर किसी रिश्तेदारी में कोई काम तो नहीं था।

7. जे इत्थे दरबार विच आंदे हो, तां सज्जे खब्बे, बाबेयां कोल, ज्योतिषियाँ कोल, कित्थे भी नी घूमना। किसे कोल तैनु कुछ नी लभना, जो लभना तैनु ईश्वर दे नाम विच लभना हा।

- जब यहां दरबार में आते हो, तो बाएं दाएं, बाबो के पास, ज्योतिषियों के पास, कहीं भी नहीं घूमना है।

किसी से तुम्हें कुछ नहीं मिलना, जो मिलना है तुम्हें ईश्वर के नाम में मिलना है।

8. इत्थे कोई वी.वी.आइ.पी. नहीं, सारे इक समान हां। तुसी जो भी कनेक्शन रखना ओ डायरेक्ट मेरे नाल रखना।

- हर एक बंदे का उनके साथ अलग-अलग कनेक्शन था, अलग-अलग वो हर एक को ब्लेसिंग्स देते थे, और हर एक के दिल की भावना को वो जानते थे।

9. जदों तुस्सी मेरे दरबार विच आंदे हो, मेरी दहलीज़ दे उत्ते पैर ही रखदे हो, मैनु उसी वक्त पता लग जांदा है, कि ये किस मक्सद लई आया है।

- जब तुम मेरे दरबार में आते हो, मेरी देहलीज के ऊपर पैर रखते हो, मुझे तब ही पता लग जाता है, कि ये किस मकसद के लिए आया है।

- गुरुजी अक्सर वो कैसेट लगाया करते थे... ऊंघे, सूंघे, चूँगे - तीन तरह के लोग संगत में आते हैं। कोई लोगो को देखते रहते हैं, कोई लोगो के कपड़े देखते रहते हैं,

कोई लोगो को सुंघते रहते हैं, और कोई किसी मकसद को हल करने को आते हैं।

10. अगर तुस्सी मैनु सरेंडर कर दोगे, ता फिर तुस्सी अपनी ज़िन्दगी दा, लाइफ दा नज़ारा देखो।

- अगर तुम मुझे सरेंडर कर दोगे, तो फिर तुम अपनी जिंदगी का नजारा देखना।

11. गुरु वाला बनना बहुत औखा है। गुरु दी कसौटी ते उजना बहुत मुश्किल है। मैं बंदे नु स्क्रीन करके, बंदे नु बहुत अच्छी तरह चेक करके, फिर अपनी शरण दे विच लेंदा हां। फिर मेरी ज़िम्मेवारी बन जांदी है कि मैं उसदा चंगा माढ़ा वक्त, सब वक्त मैं देखांगा।

- गुरु वाला बनना बहुत मुश्किल है। गुरु की कसौटी पर उतरना बहुत मुश्किल है। मैं बंदे को स्क्रीन करके, बंदे को बहुत अच्छी तरह से चेक करके, फिर अपनी शरण में लेता हूं। फिर मेरी जिम्मेवारी बन जाती है, मैं उसका अच्छा बुरा समय, सब वक्त मैं देखूं।

- गुरुजी के कल्याण करने का, बड़ा अच्छा और अलग तरीका है। कोई भी किसी की बिमारी होती, कुछ भी

होता, उसको अपनी हिसाब किताब से कल्याण करते थे। किसी से कोई दन-पुन करा के, किसी से किसी कि मदद करा के। उनका अपना ही तरीका था कि उन्हें तुम्हें किस तरीके से ठीक करना है।

12. जब तक तुस्सी अपने मन नु साफ नहीं करदे, और मेरे कोल इक मन होके नहीं आंदे, फेर तां चक्कर वाली गल्ल है, के आई जाओ-जाई जाओ।

- जब तक तुम अपने मन को साफ नहीं करते, और मेरे पास एक-मन होके नहीं आते, फिर तो चक्कर वाली बात है, के ऐ जाओ-जय जाओ।

4. एयर मार्शल अनिल चोपड़ा अंकल

1. गुरु दे घर कोई वी.आइ.पी. नहीं। सब संगत है। सब सत्संग के लिए आए हैं।
2. गुरु कोल एक्स-रे विज़न है। वो सबको थ्रू एंड थ्रू (आर-पार) देख सकता है।
3. गुरु दूसरों को ठीक करने के लिए अपनी एनर्जी ट्रांसफर करता है। उनकी एनर्जी लूज़ होती है, तां कि आपकी एनर्जी बढ़ जाए और हीलिंग हो।
   - गुरु दूसरो को ठीक करने के लिए अपनी ऊर्जा का स्थानांतरण करता है। उनकी एनर्जी घटती है, ताकी आप की एनर्जी बढ़ जाए और उपचार हो।
4. जब मैं किसी से पैर दबवाता हूँ, वो इसलिए तां कि उनको एनर्जी ट्रांसफर हो जाए।
5. गुरु एक एयर फोर्स के रेडार जैसे है। सब तरफ एनर्जी ट्रांसमिट कर रहा है। लेने वाले का एंटीना टोटली फोकस होना चाहिए उस एनर्जी को लेने के लिए।
   - गुरु एक एयर फोर्स के रेडार जैसे है। सब तरफ ऊर्जा को संचारित कर रहा है। लेने वाले का एंटीना पूरी

तरह से केंद्रित होना चाहिए उस एनर्जी को लेने के लिए।

6. जो लोग गुरु के साथ जल्दी जुड़ जाते हैं, उनकी एनर्जी ट्रांसफर और हीलिंग बहुत तेज़ी से हो जाती है।
7. गुरु के मंदिर में हर तरफ से एनर्जी ट्रांसफर हो रही है। भजनों से, पानी प्रसाद से, चाय प्रसाद से, लंगर प्रसाद से। उस एनर्जी को शांति से लेना सीखो।
8. कुछ लोग मंदिर में पिकनिक मनाने आते हैं। यह कोई पार्क या होटल नहीं है। ब्लेसिंग्स लेने के लिए ध्यान लगाना ज़रूरी है।
9. गुरु की कृपा और ब्लेसिंग्स लेने के लिए दिल साफ होना चाहिए। मेरे साथ बहुत फौजी जुड़े हुए हैं। फौजी को बहुत यंग ऐज पर डिसिप्लिन कर दिया जाता है (उन्हें छोटी उम्र से अनुशासित कर दिया जाता है)। उसका दिल साफ होता है। इसलिए फौजी गुरु की ब्लेसिंग्स जल्दी ले पाते हैं।

10. मेरे नाल बहुत डाक्टर इसलिए जुड़े हुए हैं क्योंकि उनको पता है कि डॉक्टरी की भी सीमाए हैं। और उसके बाद महापुरुष के पास ही जाना पड़ता है।
11. गुरु की एनर्जी लेने के लिए कनेक्शन बनाना बहुत ज़रूरी होता है। फेथ इज़ द स्टार्टिंग एंड एन्डिंग पॉइंट।
    - गुरु की एनर्जी लेने के लिए गुरु से सीधा संबंध जोडना बहुत ज़रूरी होता है। विश्वास ही आरंभ है और विश्वास ही समाप्ति स्थल है।

5. आकाश सेठी अंकल

1. जानवर को खाना जानवर का काम है, मनुष्य का नहीं।
2. लोग हमारे पास दुनियावी चीज़ें माँगने आते हैं और हम भी दे देते हैं। असली दात तो यह है कि माँगने वाला यह माँगे की मेरी तार परमात्मा से जोड़ दो।
3. ऑपरच्युनिटी नॉक्स ओनली वन्स। मौका बार-बार नहीं मिलता।
   - अवसर केवल एक बार ही दस्तक देता है।
4. आदमी अपनी औरत की सेवा करे और औरत अपने आदमी की, इतना धर्म काफ़ी है। महापुरषों के पास तो तब आओ जब इश्वर की राह पर चलना है।
5. पी.एच.डी. (P.H.D.) का मतलब पता है? पागल होने का डर।

6. रशिमा मल्ही आंटी

1. लोकां दियां पुठियां गल्लां ना सुण्या कर।
   - लोगों की उल्टी बातें मत सुना कर।
2. सत्संग कर ते लोकां दे वट कड दे।
   - सत्संग कर और लोगों के संशय निकाल दे।
3. एनां नु दस् कि महापुरुष की होंदे ने।
   - इनको बताओ के महापुरुष क्या होते हैं।
4. दिल्ली विच ना कोई महापुरुष कद्दे आया है ते ना कद्दी आएगा।
   - दिल्ली में कोई महापुरुष ना कभी आया है और ना कभी आएगा।
5. दिल्ली वालेयां नु महापुरषां दी कदर करनी नहीं आंदि।
   - दिल्ली वालों को महापुरुष की कदर करनी नहीं आती।
6. महापुरषां नु कद्दी आज़माना नहीं चाइदा।
7. लोकि मैनु आज़मानदे ने, मैं ओना नु आज़मानदा हां।

8. महापुरषां दे तिन्न ही वचन हुंदे ने।
   - महापुरुष तीन बार ही कहते हैं।
9. अपना भांडा साफ़ रख्या करो, ते रोज़ साफ़ करना चाइदा है।
   - अपना बरतन साफ़ रखा करो; उसे रोज़ साफ़ करना चाहिए।

7. राजेश चोपड़ा अंकल

1. किसी नु दुःख ना देयो, सब दा भला करो।
2. मैनु सब पता है, की हो रया है; जो कुछ होना है ओ वी मैनु पता है।
3. सब भला होजु।
   - सब अच्छा होगा।
4. बेफिक्र रहा कर, सब वदिया ही होवेगा।
5. की तकलीफ है? मैनु दस्स।
6. चिंता ना कर।

8. आरती कपूर आंटी

1. कुछ अचानक नहीं होंदा, सब गुरु दी मर्ज़ी नाल होंदा है।
   - देयर आर नो को-इंसीडंसिस इन गुरुजीस दरबार।
   - गुरुजी के दरबार में कुछ संयोग से नहीं होता। सब गुरु की मर्ज़ी से होता है।
2. इफ/ बट/ लॉजिक/ ईगो उधर छोड़ के आओ, जहाँ जुत्ति छडते हो।
   - अगर/ मगर/ तर्क/ अहं उधर छोड़ के आओ, जहां जूती छोड़ते हो।
3. तुस्सी ज़्यादा पढ़-लिख गए हो। दिमाग खराब हो गया है। रब दे कमां विच दिमाग नहीं लगाइदा।
4. तुम लोग ज़ीरो वॉट के बल्ब हो, मैं करोड़ों वॉट का करंट हां। अगर मैं अपने असली रूप विच आ गया ते तुस्सी सह नहीं पाओगे।
5. मैंने चले जाना है। मेरे दर्शन दुर्लभ हो जाएँगे।
6. बहती गंगा है, मेरे नाल करम कट लो।
7. मन चंगा तो नलके का पानी भी गंगा।

8. मेरे साथ डायरेक्ट कनेक्शन जोड़ो।
   - मेरे साथ सीधा संबंध जोड़ो।
9. अपनी 'मैं' मुझे दे दो।
   - 'मैं' मतलब ईगो/ अहं।
10. माँगा ना करो। अगर तुस्सी मैनु मनदे हो तां मंगण दी लोड़ नहीं।
   - माँगा ना करो। अगर तुम मुझे मानते हो तो माँगने की ज़रूरत नहीं।
   - शुरुआत आस्था से होती है। आस्था बहुत नाज़ुक होती है। लाइफ में ज़रा भी उतार चढ़ाव आता है तो हम हिल जाते हैं, गुरुजी को कहते हैं यह कैसे हो गया, वो कैसे हो गया।
   - यह याद रखें कि एक बार जब उन्होंने हमें बुलाया, तो हममें से प्रत्येक को उससे कहीं अधिक मिल रहा है जितना हम सोच सकते हैं या जिसके लायक हैं। हम सभी किसी न किसी चुनौती से जूझ रहे हैं। अगर उन्होंने हाथ नहीं थमा होता तो हम रुल गए होते।

9. महेंद्र प्रताप सिंह अंकल

1. मैं सो गया तो सृष्टि को कौन देखेगा।
   - जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वे कभी सोते हैं।
   - सीख :- उन्होंने प्रकट किया कि वे कौन हैं।
2. नैवर पुट ऐनीवन बिटवीन यौरसेल्फ एंड यौर गुरु।
   - कभी भी अपने और अपने गुरु के बीच किसी को न रखें।
   - जब मैंने किसी और से पूछने की गलती की, किसी और के माध्यम से, कि गुरुजी ने क्या कहा था।
   - सीख :- सीधा संबंध बनाएं, उनके बारे में किसी और से जानने की कोशिश न करें।
3. आइ विल टेक यौर कॉल ऐनीटाइम, ईवन इफ आइ ऐम डूइंग पाठ।
   - मैं कभी भी तुम्हारा फोन उठाऊंगा, भले ही मैं पाठ कर रहा हूं।
   - मुझे दो फोन नंबर्स देते हुए उन्होंने कहा, “मुझे कभी भी कॉल करलो; मैंने सबसे कहा है कि मैं कभी भी तुम्हारा फोन उठाऊंगा, भले ही मैं पाठ कर रहा हूं”।

- सीख :- भगवान हमेशा हमारे लिए उपलब्ध होते हैं; उनके दरवाज़े सदा हमारे लिए खुले होते हैं।

4. महापुरुषों की कृपा सब पर बराबर।
   - जब मेरे अंकल ने मुझसे निजी तौर पर निराशा व्यक्त की, कि गुरुजी सबको ब्लेस करते हैं, वे पक्षपात नहीं करते कि किसको ब्लेस करना चाहिए और किसको नहीं। तब गुरुजी यह बोले।
   - सीख :- हम सब उनके बच्चे हैं।

10. उषा सिंह आंटी

1. तू डाउट कर रही है – इथे डाउट दा कोई कम् नहीं है, इथे सब कुछ प्रैक्टिकल है।
   - तू संदेह कर रही है – यहां संदेह का कोई काम नहीं है, यहां सब कुछ व्यावहारिक है।
   - पहले दिन जब मैं गुरुजी से मिली, मैं संदेह कर रही थी क्योंकि उनकी उम्र इतनी कम थी और वे दिखने में इतने सुंदर थे।
2. निंदा ते चुगली बंद करो – मेरी ब्लेसिंग्स तभी लगेंगी।
3. अपने गुरु नाल इतना प्यार करो कि तुम जब लिपस्टिक भी लगाओ तो सोचो कि अपने गुरु के लिए लगा रही हूँ।
4. मेरे से टेलिपथी से बात किया कर। जब सिमरन में तू बैठेगी मैं तेरे हर सवाल का जवाब दूँगा।
5. तू रोज़ एक अध्याय शिव पुराण पढ़या कर।
6. सब टेम्पररी है।
   - सब अस्थायी है।

- एक बार मैं किसी बात को लेकर बहुत चिंतित थी और गुरुजी ने मुझे सिंगापुर में फोन करके बस एक वाक्य कहा था, "सब टेम्परी है" और फोन रख दिया था। यह संदेश सबके लिए है।

7. मेरे से डायरेक्ट कनेक्शन जोड़ो। अपने और अपने गुरु के बीच किसी को ना लाओ।
8. तू रोज़ सैर किया कर, लेडीज़ के लिए जिम (व्यायामशाला) ठीक नहीं है।

- उन्होंने यह हमारी सबसे छोटी बेटी को कहा था।

9. बड़े मंदिर का दर्शन करके आ – मेरी सारी शक्ति उधर है।
10. तू जात-पात से ऊपर उठ।
11. तू चिंता ना करीं, तेरा गुरु तेरे नाल है।
12. गुरु को कभी इंतज़ार नहीं कराते।
13. जा ऐश कर। तू जिथे जाए उत्थे मेरा सत्संग किया कर, अपणा भी कल्याण कर ते दूजेया दा भी कल्याण कर।

- जा ऐश कर। तू जहां जाए वहां मेरे सत्संग किया कर, अपना भी कल्याण कर और दूसरों का भी कल्याण कर।
- जब मुझे एहसास हुआ कि वे भगवान हैं, मैंने उनसे पूछा, "अब मैं क्या करूँ गुरुजी, मुझे आप मिल गए हो; मेरे जीवन का क्या उद्देश्य है, मेरे लिए आपका क्या हुक्म है?" उन्होंने मेरी ओर देखा, मुस्कुराये और यह बोले।

14. तू बस मेरा सत्संग किया कर।
    - एक दिन गुरुजी ने मुझसे पूछा, "तू थर्सडे टु सन्डे इथे आंदि है, बाकी दिन की करदी है?" मैंने उनसे कहा कि यहाँ हमारे इतने सारे रिश्तेदार हैं, हम उनसे मिलने जाते हैं। गुरुजी मेरी ओर देखकर बोले, "और उत्थे जाकर निंदा चुगली सुनती है। तू बस मेरा सत्संग किया कर।"
15. स्वरूप से अमृत निकलना मेरी ब्लेसिंग्स है।
16. मैं नहीं होऊँगा मेरी फोटो रख लयी। जिथे मेरी फोटो उत्थे मैं।

- मैं नहीं होऊँगा मेरी फोटो रख लेना।
- जहां मेरी फोटो उधर मैं।
- गुरुजी ने मुझे हमारी बेटी की शादी में अपना स्वरूप रखने के लिए कहा। शादी यहाँ सीएटल में जुलाई २००७ में थी और गुरुजी ने मुझसे यह २००७ में महाशिवरात्रि पर कहा था। शादी का पूरा वेन्यू गुरुजी की दिव्य सुगंध से भरा हुआ था।

17. आंटी जा शॉपिंग करके आ।

- मैं बहुत सादगी से तैयार हुआ करती थी। उन्होंने बस इतना कहकर ही मुझे खूबसूरती से तैयार कर दिया था। वे चाहते थे कि उनकी संगत हर चीज़ का आनंद ले और फिर भी सदैव उनसे जुड़ी रहे।

18. आज से ऐसा ही होगा मेरे दर्शन चाँद-सूरज में होंगे।

- २००६ में गुरु पूर्णिमा के दिन देर रात को कुछ संगत ही रह गई थी। गुरुजी ने हमें जा कर चाँद को देखने के लिए कहा। हम गए और हमें चाँद में गुरुजी का चेहरा दिखाई दिया।

19. तू रोज़ सुबह शिवजी का जाप किया कर।

20. फैमिली की हर रेस्पोंसिबिलिटी (ज़िम्मेदारी) निभा कर तू मेरे साथ जुड़ी रह – मैं फैमिली छुड़ाने नहीं आया हूँ।
21. सिमरण बहुत ज़रूरी है। मेरे साथ जुड़ने के लिए समय निकालो – मैं हमेशा ब्लेस करता हूँ।

11. सुकरात चोपड़ा अंकल

1. महापुरुषां दी गल्ल ना मन्न के पता है ना की हुंदा है।
   - तुम्हें पता है कि क्या होता है जब महापुरुषों के वचन नहीं मानते हैं – महापुरुष जो कहें, वो मानो।

12. सोनिया मल्होत्रा आंटी

1. तैनु पता है मैं अपने शरीर दा इक-इक अंग अलग कर सकदा हां।
   - तुम्हें पता है मैं अपने शरीर का एक-एक अंग, अलग कर सकता हूं।
2. तैनु पता है आत्मा दा साइज़ की हुंदा है? जो माचिस दी तिल्ली अग्गे काला लग्या हुँदा है ना, ओ हुंदा है।
   - तुम्हें पता है आत्मा का साइज क्या होता है? जो माचिस की तीली के आगे काला लगा होता है ना, वो होता है।
3. बाथरूम रोकना नहीं चाइदा, पानी बहुत पीना चाइदा है। जे डाक्टर ए दस् दें, तां उहनां कोल कौन जाएगा।
   - बाथरूम रोकना नहीं चाहिए, पानी बहुत पीना चाहिए। जो डॉक्टर ये बता दें तो उनके पास कौन जाएगा।।
4. केला राति नहीं खाना चाइदा, एह पॉइज़न कर दिंदा है।
   - केला रात को नहीं खाना चाहिए, वे ज़हर कर देता है।
5. मैं बुज़ुर्गां दी, आर्मी दे बन्दियां दी, ते टीचर्स दा कम्म पहले करदा हां। मैं इन्ना नु बहुत प्यार करदा हां।

6. कड़वी चीज़ ज़रूर खानी चाइदी है। एह खून नू साफ करदी है।
7. हनुमान जी वि शिवजी दा ही अवतार हैं।
8. शीशा टूटना चंगा हुंदा है – इस नाल कोई ग्रह ही टल्दा है।
9. पपीता पेट वास्ते चंगा हुंदा है, खाना चाइदा है। लोकि पपीता नहीं खांदे।
10. खाना खुद बनाना चाइदा है नौकर ता गल्लां कर के बनौन्दे ने।
    - खाना खुद बनाना चाहिए। नौकर तो अपमानजनक शब्द निकालते हुए बनाते हैं।
    - खाना बनाने वाले की नकारत्मकता और नकारात्मक बातें खाने में जाती हैं।
11. तू बच्चेयां नू चीनी ना दिया कर, शक्कर दिया कर।
12. संगत ही त्वाडा असली परिवार है, ए मैं मोती जोड़-जोड़ के बनाया है।
13. बेल दा जूस पीना चाइदा है। ए अंतड़ियाँ नू साफ करदा है।

14. परिवार नू इकट्ठे पाठ करना चाइदा है।
- परिवार को इकट्ठे पाठ करना चाहिए।

15. शामि ज्योत ज़रूर जलानी चाइदी है।
- शाम को ज्योत जरूर चलानी चाहिए।

16. ऐना प्यार गुरु दे नाल होना चाइदा है कि लिपस्टिक लगाण वक्त वी ओहिओ याद आवण।
- इतना प्यार गुरु के साथ होना चाहिए था कि लिपस्टिक लगाते वक्त भी वही याद आएं।

17. एकठ विच बहुत ताकत हुंदी है।
- एकता में बहुत ताकत होती है।

18. कनक ज्वारे दा जूस पीना चाइदा है। ए डायरेक्ट ब्लड विच जांदा है। तू सात परात वाले गमले ले लवीं ते ओना विच उगा देइ।

19. रब ही असली खसम हुंदा है।

20. अज्ज-कल लोकि बाहर दा खाण लग पये ने, घर दा लंगर ही सब तों वदिया हुंदा है।

21. मैं त्वाडे वास्ते ता सब कुछ हां, पर अपनी फैमिली वास्ते ज़ीरो हां।

- मैं तुम्हारे लिए सब कुछ हूं, पर अपनी फैमिली के लिए ज़ीरो हूं।

22. मूरख के हम दास।

23. रब तों डरो नहीं, रब नू प्यार करो। डरना ता भैरे करमां तों चाइदा है।
   - रब से डरो नहीं, रब को प्यार करो। डरना तो बुरे कर्मों से चाहिए।

24. घरवाले ते घरवाली को, गुरु नू विच सुलाना चाइदा है।
   - घरवाली और घरवाली को, गुरु को अपने बीच में सुलाना चाहिए।

25. माँ-बाप दी सेवा करनी चाइदी है। उन्ना दे उपकार नहीं भुल्ने चाइदे।
   - माँ-बाप की सेवा करनी चाहिए। उनके उपकार नहीं भूलना चाहिए।

26. रब नू तां कन्नां दा वी शुक्र करना चाइदा है।
   - रब को तो कानों का भी शुकर करना चाहिए।

27. साडे कोल डाकू वी आ जाए ना, अस्सी तां ओदा वी कल्याण करांगे।

- हमारे पास डाकू भी आ गए, तो हम उसका भी कल्याण करेंगे।

28. कलयुग विच रब बहुत जल्दी मिलदा है। त्वानु पुठा नहीं लटकना पैंदा।
 - कलयुग में रब बहुत जल्दी मिलता है। तुम्हें उल्टा नहीं लटकना पड़ता।

29. साडे कोलों फोर्सफुल्ली कुछ ना मंगया करो, सानु देना पै जांदा है।
 - हमारे से जबरदस्ती कुछ ना माँगा करो, हमें देना पड़ जाता है।

30. वेख इंसान दी तां चमड़ी वी कम्म नहीं आंदि - इंसान किस कम्म दा है।
 - देखो इंसान की तो चमड़ी भी काम नहीं आती - इंसान किस काम का है।

31. त्वाडे बस दा कुछ वी नहीं है।
 - तुम्हारे बस का कुछ भी नहीं है।

32. डिस्कशन करण नाल रब नहीं मिलदा।
 - चर्चा करने से रब नहीं मिलता।

33. शिव पुराण पढ़या कर। जद तीन बारी पढेंगी, तां समझ आऊगी।
   - शिवपुराण पढ़ा कर। जब तीन बार पढ़ेगी, तब समझ आएगी।
34. रब नू तां बाथरूम विच वी याद कर सकते हैं।
   - रब को तो बाथरूम में भी याद कर सकते हैं।
35. जे मन चंगा तां नलके दा पानी वी गंगा।
36. माला नहीं फेरनी चाहिए, अहंकार आ जाता है। जिसने अनगिनत सौगाते दी हों, उसको गिन-गिन के कैसे याद कर सकते हैं।
37. करोड़ जन्म भी ले लो तां वी मेरा देना नहीं दे सकदे।
38. गुप्त दान, गुप्त पाठ, गुप्त सेवा करनी चाहिए।
39. ए धरती साडे महापुरुषां करके ही बची हुई है।
40. हमेशा पॉज़िटिव रहना चाइदा है - बी पॉज़िटिव।
   - हमेशा सकारात्मक रहना चाहता है - सकारात्मक रहें।
41. गरीबां कोलों मैं खुद जांदा हां।
   - गरीबो के पास मैं खुद जाता हूं
42. इक चुप सौ सुख।

43. सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं।
44. लोकन राम खिलौना जाना।
45. रब कदें नहीं सोंदा। जे रब ही सो गया तां परलय ना आ जाएगी।
46. ऊपरली दुनिया बहुत सोणी है... चिड़ियाँ चहकदियां हां, मिठा-मिठा संगीत वज्दा है।
   - ऊपर की दुनिया बहुत सुंदर है... चिड़ियाँ चहकती हैं, मीठा-मीठा संगीत बजता है।
47. ऊपरों नीचे औंण नू मन थोड़ी करदा है - मैनु त्वाडे लोक्की करके, कीचड़ विच औंणा प्या।
   - ऊपर से नीचे आने को मन थोड़ा करता है - मुझे तुम लोगों के लिए कीचड़ में आना पड़ा।
48. रब एक है।
49. बड्डा मंदिर देख्या है, एदा दा पूरे वर्ल्ड विच नहीं है।
   - बड़ा मंदिर देखा है, ऐसे पूरी दुनिया में नहीं है।
50. देख जो 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी' विच लिख्या है, मैं तां सब प्रैक्टिकल करके दिखाया हां।

- देख जो 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी' में लिखा है, मैंने सब वास्तविक करके दिखाया है।

51. चंग्या किताबां पढ़नी चाइदी हां – पढ़ेया कर।
   - अच्छी किताबें पढ़नी चाहिए – उन्हें पढ़ा कर।

52. विनाशकाले विपरीत बुद्धि – यह नहीं हुंदा। विपरीत बुद्धि विनाशकाले – पहले बुद्धि विपरीत हुंदी है, फिर विनाशकाल हुंदा है।

53. चंगी चीज़ कोई नहीं मंगदा।

54. किन्ने मना कित्ता, लो वदिया गाड़ियाँ, पर करम चंगे करो।
   - किसने मना किया, लो बढ़िया गाड़ी, पर करम अच्छे करो।

55. रब एक मिनट नहीं लेंदा माफ करन नू, जे दिलों माफी मंगो।
   - रब एक मिनट भी नहीं लेता माफ़ करने में, अगर दिल से माफ़ी मांगो

56. फेथ की हुंदा? कुछ नहीं हुंदा। मैं तेरे ते कर लवां, एथे कर लवां - सब तों वड्डी चीज़ हुंदी है सरेंडर।

- फेथ क्या होता है, कुछ नहीं होता। मैं तेरे पर कर लू, इधर कर लू – सबसे बड़ी चीज होती है समर्पण।

57. निंदा चुगली नहीं करनी चाहिए।
58. मैं अपने भगतां नू बहुत प्यार करदा हां।
59. गुस्सा नहीं करीदा, ए खून नू काला कर देंदा है।
60. प्यार विच बहुत ताकत हुंदी है।
61. रब बहुत वड्डी शक्ति है।
62. भक्ति करणी सौखी है कोई? मैं किन्ने साल भुखा रहया हां, पत्ते वी खादे ने, मैं अपनी निंदा भी कराई होइ है।

- भक्ति करना आसान है क्या? मैं कितना साल भूखा रहा हूं, पत्ते भी खाये हैं, मैंने अपनी निंदा भी कराई हुई है।

13. अश्विनी वशिष्ठ अंकल

1. आंदे रहा करो, ते नाल नाल, नवी संगत नु वी लाया करो।
   - आते रहो करो, और साथ-साथ नई संगत को भी लाया करो।
2. आंदे रहो, प्रसाद खांदे रहो।
   - आते रहो, प्रसाद खाते रहो।
3. बड़े मंदिर जाया करो।

14. नरेन्द्र ढंड अंकल

1. मैं ही महाशिव हां।

- गुरुजी अपनी संगत को याद दिलाते रहते थे कि वे भगवान शिव के अवतार हैं। वे स्वयं को महाशिव कहते थे। वे कहा करते थे कि गुरु दो प्रकार के होते हैं, मन-मुखी (जो मन की बात जान लेते हैं) और मुँह-मुखी (जिन्हें बताना पड़ता है)। वे यह भी बोले कि वे मन-मुखी हैं क्योंकि संगत के मन की बात वे जानते हैं। संगत को क्या परेशानियाँ हैं, गुरु जानते हैं; उन्हें बताने की आवश्यकता नहीं होती।

2. मंग्या नहीं, मन्या करो।

- गुरुजी अक्सर कहते थे कि गुरु से कभी कुछ माँगना नहीं चाहिए, क्योंकि उसमें गुरु का अनादर होता है और हम अपने गुरु को छोटा कर देते हैं। "माँगो नहीं, मानो," गुरुजी कहते थे जिसका अर्थ है, 'मुझसे कुछ मत माँगो, बस मेरा कहा मानो।' वे संगत को याद दिलाते थे कि हो सकता है उन्हें कुछ बड़ा मिलने वाला हो लेकिन हम उनसे कुछ छोटा माँग लेते हैं। गुरुजी

हमें बताते थे कि भौतिकवादी चीज़ें माँगकर और इच्छाएँ रखकर हम गुरु की शक्ति और दिव्यता को छोटा कर देते हैं।

- गुरुजी ने मुझसे पूछा था कि हमें उनसे क्यों नहीं माँगना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि हमें माँगने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि बिना हमारे बोले ही वे हमारे मन की बात जान लेते हैं। फिर गुरुजी बोले कि जब हम कुछ माँगते हैं तो अगर वह हमारे लिए सही नहीं होता है, तब भी उन्हें वह देना पड़ जाता है और वो खुशियाँ अल्पकालिक होती हैं। लेकिन जब गुरुजी अपनी मर्ज़ी से कुछ देते हैं तो वे खुशियाँ चिरस्थायी होती हैं, न केवल इस जन्म में, बल्कि आने वाले जन्मों में भी।
- इसका यही अर्थ है कि गुरुजी जानते हैं कि हमारे लिए बेहतरीन क्या है और हमें केवल हमारे प्रति उनके प्रेम में पूर्ण विश्वास होना चाहिए। उनसे माँगने के बजाय, हमें समर्पण करके सब कुछ उनके हाथों में सौंप देना चाहिए और उन्होंने जो हमें बख्शा है उसका आनंद

उठाना चाहिए। हम इंसान हैं और यह नहीं जानते की हमारी भलाई किसमें है। गुरुजी, हमारे भगवान, सब जानते हैं। गुरुजी को समर्पण कर दीजिए और उनकी कृपा अनुभव करिये।

3. उन्होंने कहा कि उनका पूर्ण आशीर्वाद पाने के लिए संगत को उनसे कुछ दूर ही बैठना चाहिए। आशीर्वाद के लिए पास बैठना ज़रूरी नहीं।
   - गुरुजी ने कहा कि उनसे ज़्यादा आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमें उनसे कुछ दूरी पर बैठना चाहिए। वे अक्सर दिये का उदाहरण देते थे, कि दिये के तले अंधेरा होता है लेकिन रोशनी दूर तक होती है।
4. गुरुजी ने कहा कि उनकी शरण में आए हुए भक्त को किसी मंदिर में जाकर दूध चढ़ाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वे स्वयं ही महाशिव हैं।
   - उनकी शरण में आए भक्त को किसी मंदिर में जाकर शिवलिंग पर दूध चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे स्वयं महाशिव हैं; एक बार कोई उनकी

शरण में आ गया तो वह भगवान शिव की शरण में भी आ गया।

5. उन्होंने बताया कि भारत में बारह ज्योतिर्लिंग शिवलिंग हैं। बड़े मंदिर का शिवलिंग सबसे शक्तिशाली है। जो भक्त सम्पूर्ण निष्ठा व भक्ति से शिवलिंग की पूजा करेंगे, उनकी सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी।
6. गुरुजी द्वारा मनकों की माला का निषेध है।
   - गुरुजी मनकों की माला के साथ जाप करने से मना करते हैं क्योंकि ऐसा करने से अहंकार आ जाता है।
7. उन्होंने मेरी माँ को उनके पावन स्वरूप के सामने प्रार्थना करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उनके स्वरूप को जल में भिगोने के बाद उस अमृत रूप जल का सारे घर में छिड़काव कर दें। ऐसे करने से नकारात्मक ऊर्जा चली जाती है।
   - यह हम इंसानों के लिए आश्चर्यजनक है और हमारी समझ से परे है कि गुरुजी जो करते हैं वो कैसे करते हैं; हमें बस उनमें श्रद्धा बनाए रखनी है और उन्हें पूर्ण समर्पण करना है।

8. गुरुआं दे लाड़ लगके कदे वी बुरा नहीं होंदा। पंडितां नू अपनी लाइफ दा पता नहीं होंदा, ते ओ दूसरेयां दी लाइफ दा किस तरह दसंगे।

- इसका अर्थ है कि जिसका ध्यान गुरुजी रखते हैं और लाड़-प्यार देते हैं, उसे कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकता। ज्योतिषियों को अपनी ज़िन्दगी का तो पता नहीं होता, फिर वह किसी और की ज़िन्दगी के बारे में क्या बताएँगे।

9. भक्त के जीवन में जो कुछ भी होता है, वो गुरुजी की इच्छा और उनके महान निर्णय से होता है।

- गुरुजी के वचन हैं कि कुछ भी संयोग नहीं होता; एक भक्त के जीवन में जो भी होता है वह गुरुजी की मर्ज़ी से होता है और उनके ही सर्वोच्च निर्णय से होता है।

10. उन्होंने कहा कि केवल वे जानते हैं कि कब और कहाँ उनके भक्त को आशीर्वाद दिया जाए।

11. इन्ना टाइम हो गया, फेर वी तू गुरु नू नहीं समझेया।

- गुरुजी का कहना था कि उनका भक्त बने इतना समय हो गया था फिर भी मैं उन्हें और उनकी दिव्यता को

नहीं समझ पाया था। वे बोले कि न तो उन्हें ठंड लगती है और न ही गर्मी और न ही उन्हें पसीना आता है।

12. गुरुजी ने हमें भाग्यशाली बताया कि हमें उनकी सेवा करने का मौका मिला। सेवा करने के लिए मनुष्य में भक्ति, श्रद्धा व समर्पण की भावना होनी चाहिए।

- गुरुजी ने कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें उनकी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ और सेवा करने के लिए अपार भक्ति और समर्पण की आवश्यकता होती है। वे यह भी बोले कि उनकी सेवा करने से, और उनके दर्शन और सुगंध का आशीर्वाद प्राप्त होने से कर्म शुद्धि होती है क्योंकि वे महाशिव हैं।

13. गुरुजी से हमें निर्देश था कि उनकी आज्ञा के बिना कोई सेवा नहीं ले सकता।

14. ज़रूरत पड़ने पर मित्र, रिश्तेदार कोई काम नहीं आता, केवल गुरु ही अपने भक्त की रक्षा कर सकता है। सिर्फ गुरु पर पूरा विश्वास रखो।

15. गुरुजी का सपना उनकी इच्छा से ही आता है, वो उनके दर्शन होते हैं।

- गुरुजी हमेशा कहते थे कि वे किसी के सपने में केवल अपनी मर्ज़ी से आएँगे और सपने में आना उनके दर्शन होते हैं। उनके वचन हैं कि भक्त को उनका सपना आना, मात्र सपना नहीं होता, वास्तव में उनके दर्शन होते हैं।

16. जब भक्त घर से निकलते हैं, गुरुजी की ब्लेसिंग्स साथ रहती हैं जब तक वे घर लौट कर आते हैं।
17. भक्त को गुरु की हर बात माननी चाहिए।
18. पुरानी गाड़ी नहीं लेनी चाहिए
    - गुरुजी पुरानी गाड़ी लेने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि वे कहते थे कि हम नहीं जान सकते हैं कि गाड़ी बेचने वाले का क्या कर्म है, वह गाड़ी क्यों बेच रहा है और गाड़ी बेचते समय उसकी मनःस्थिति क्या है।
19. मैं भक्तों को दर्शन देता रहूँगा।
    - गुरुजी ने अपने भक्तों को ॐ, एक ओंकार और दिव्य प्रकाश के रूप में बहुत बार दर्शन दिए थे और वे कहते थे कि आगे भी वे दर्शन देते रहेंगे।

20. मुझे पता है भक्त के लिए क्या अच्छा है और कब क्या देना है।

21. गुरु नू कौन्ट्राडिक्ट नहीं करदे।
- गुरु की बात का खंडन नहीं करते।
- शिष्य को हमेशा गुरु के वचनों का पालन करना चाहिए।

22. गुरुजी कुछ भी कर सकते हैं। भक्त के बुरे कर्म मिटा सकते हैं। वो ही महाशिव हैं।
- मैं कुछ भी और सब कुछ कर सकता हूं। यदि किसी भक्त का कर्म-लेख ख़राब है तो मैं उसे घटाकर दस प्रतिशत कर सकता हूँ, जबकि नब्बे प्रतिशत का मैं खुद ध्यान रखता हूँ। मैं भगवान हूं, मैं महाशिव हूं।

23. मेरेसे डायरेक्ट कनेक्शन बनाओ। ब्लेसिंग्स लेकर सीधा घर जाओ।
- गुरुजी हमेशा अपने भक्तों से कहते थे कि वे बिना किसी मध्यस्थ के उनसे सीधा संबंध रखें, और इधर-उधर ईश्वर की खोज न करें। उन्होंने इस बात पर भी

जोर दिया कि भक्तों को उनसे आशीर्वाद लेने के बाद सीधे घर जाना चाहिए।

24. गुरुजी ही कर्ता हैं, पर हमें भी अपना कर्म और श्रम अच्छे से करने है।

- करने वाले तो गुरुजी ही हैं लेकिन हमें भी अपने कर्तव्य निभाने हैं और अपने लक्ष्य को पाने की पूरी कोशिश करनी है।

25. सत्संग करने के लिए संगत की ज़्यादा गिनती ज़रूरी नहीं है।

- गुरुजी ने हमें बताया कि सत्संग करने के लिए ज़्यादा संगत होना आवश्यक नहीं है और जब भी कोई संगत उनके साथ बैठकर शबद सुनती है, या दिव्य अनुभव बताती या सुनती है और भोजन करने से पहले उन्हें भोग लगाती है तो वह सत्संग होता है। खाना आशीर्वादित हो जाता है और लंगर प्रसाद बन जाता है। गुरुजी ने हमें याद दिलाया कि जब भी संगत उनका गुणगान करती है और अपने दिव्य अनुभव साझा करती है, वह सत्संग होता है। उन्होंने मुझे यह

भी बताया कि ऐसे समय में संगत जो ग्रहण करती है वह आशीर्वादित लंगर प्रसाद होता है।

26. मेरी आत्मा से प्यार करो, शरीर से नहीं।

- गुरुजी ने हमें बताया कि दिव्यता का संबंध उम्र से नहीं बल्कि कर्मों से होता है। उन्होंने हमें यह भी समझाया कि वे किसी भी समय जितने चाहे रूप ले सकते हैं; हमें उनकी आत्मा से प्यार करना आना चाहिए, शरीर से नहीं।

27. वे बोले कि अगर हमें दिव्यता से एक होना है और उसमें समा जाना है हमें नौ पौड़ियाँ चढ़नी ही होंगी जो हमें गुरु या भगवान से एक करती हैं। गुरुजी ने हमें बताया कि वे आठ पौड़ियाँ तो बहुत जल्दी चढ़ा देते हैं और फिर वह भक्त को बहुत प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि और सेवा के अवसर देते हैं। तब अक्सर भक्त में अहंकार आने लगता है और उसे लगने लगता है कि वह गुरुजी के बहुत करीब है। अक्सर ऐसा होता है कि वह सोचने लगता है कि उसके पास शक्ति है और भगवान के इतना करीब है कि भगवान उसकी कही गई हर बात

पूरी करेंगे। यहाँ तक कि वे महसूस करना शुरू करते हैं की वे गुरुजी जितने सशक्त और प्रभावशाली हो गए हैं। तब गुरुजी आठ पौड़ियाँ भी खींच लेते हैं और ऐसा भक्त कहीं का नहीं रहता और उसे अपनी गलती का एहसास होता है। गुरुजी के वचन हैं कि नौंवी पौड़ी अहंकार की होती है और इसे पार करने के लिए अत्यधिक विनम्र और सरल होना चाहिए ताकि गुरु हमें नौंवी पौड़ी पार करवाकर ऊपर ले जा सकें।

28. जब गुरुजी हमें नौ पौड़ियों के बारे में बता रहे थे, मैंने उनसे कहा कि हम तो उनके चरण कमलों की धूल तक नहीं हैं; तो गुरुजी बोले कि उनके सबसे प्रिय भक्त वो हैं जो सदा उनसे आध्यात्मिक रूप से जुड़े रहते हैं और अगर उन्होंने दोबारा मानव चोला लिया तो ऐसे भक्त उनके साथ वापस आएँगे। फिर उन्होंने मुझे बताया कि उस समय मैं उन प्रिय भक्तों की सूची में नहीं था। मैंने गुरुजी से विनती की कि मुझे अपनी प्रिय संगत का हिस्सा बना लें लेकिन वे बोले कि उस अवस्था में पहुँचना आसान नहीं होता है। केवल अत्यंत

विनम्र भक्त ही उनसे सेवा के अलावा कुछ और न माँगकर ही उस अवस्था तक पहुँच सकते हैं। सबसे सच्चे भक्त भी कभी-कभी निष्ठा की इस कठिन परीक्षा में असफल हो जाते हैं। शिष्य को सदैव विनम्र रहना चाहिए और गुरु की सेवा करनी चाहिए। गुरुजी बोले कि वे अपने भक्त को नींबू की तरह निचोड़ते हैं जब तक उसका सारा रस न निकल जाए। गुरु को पाना आसान और सहज नहीं होता है और भक्त को गुरु की सभी परीक्षाएँ पास करनी होती हैं। कभी-कभी इस कठिन दौर में भक्त को उसके अपने भी नकार देते हैं और अत्यधिक भक्ति के इस मार्ग पर भक्त पूर्ण निष्ठा से अकेला ही चलता है। ऐसे समय में अपने गुरु में सम्पूर्ण विश्वास और गुरु का संरक्षण उसे उम्मीद खोने नहीं देता और यह विश्वास ही अंततः शिष्य को गुरु का दिल जीतने में मदद करता है और हमेशा-हमेशा के लिए उनका पितृत्व दिलाता है।

29. उन्होंने मुझे बताया कि पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों की वजह से सचखंड प्रसाद मिलता है और

गुरुजी वह उनको देते हैं जिनके लिए रचा गया होता है। यह केवल गुरुजी ही जानते हैं कि उसे कब और किसे देना है।

30. गुरुजी ने मुझे बताया कि प्रसाद में उनका आशीर्वाद होता है, इसलिए उसे जेब में नहीं रखना चाहिए बल्कि उसी समय आदरपूर्वक और प्यार साहित उसे ग्रहण करना चाहिए।

31. गुरुजी बोले कि हालाँकि वे अपनी संगत के कर्म ऋण उतारने की कोशिश करते रहते थे, वे लोग अपना मन साफ करने की कोशिश तक नहीं करते और वह भी गुरुजी पर ही छोड़ देते हैं। सिर्फ इसलिए कि वे उनके पास आ गए हैं, वे चाहते हैं कि गुरुजी उनके सारे बुरे कर्म माफ़ कर दें। गुरुजी बोले कि वे जानते हैं कि कौन उनके पास स्वार्थी उद्देश्य से आया है और कौन साफ मन से आया है।

32. एक बार जब हम गुरुजी के साथ बैठे हुए थे, वे बोले कि जब वे जन्म लेने वाले थे, सारे देवी-देवता उनका गुणगान करते हुए उनके पास पहुँचे। गुरुजी ने उनसे

कहा कि पृथ्वि पर मानव रूप में आकर वे सबको आशीर्वाद देंगे लेकिन केवल ०.५% संगत ही पूरी तरह सुधरेगी और धन्य होगी और बाकी तो किन्तु-परन्तु और तर्क-वितर्क में ही अटके रह जाएँगे। वे ०.५% होंगे जो उनको अपना भगवान मानेंगे और उनमें समा जाएँगे।

33. गुरुजी ने मुझे बताया कि आशीर्वाद का वर्षों से कोई संबंध नहीं होता है, बल्कि कर्मों से, भक्ति से और समर्पण की ईमानदारी से होता है।

- अपने अहंकार को त्यागो।

34. गुरुआं तों गुरुआं नुं मंग्या करो। न माँ, न बाप, न पति, न पत्नी, न बच्चे ते न ही रिश्तेदार कम आओंगे। सिर्फ एक गुरु ही है जो हर वक्त त्वाडे नाल खड़ा होएगा। जदों वक्त पैंदा है तां सारे ही त्वानु छड जांदे ने पर गुरु त्वाडी बाँह कदे वी नहीं छडदा। लोकी चीज़ां मंगन लयी ही मेरे कोल आंदे ने, कोई चंगी चीज़ लैन लयी नहीं आंदा। पूरन गुरु दा मिलना वी आसान नहीं है। कोई विरला ही हुंदा जो गुरु तों गुरु नू ही मंगदा है।

जदों तुस्सी गुरु तों गुरु नू मंगदे हो, त्वाडे एग्ज़ाम शुरु हो जांदे ने। मैं त्वानु निम्बू वर्गा निचोड़ देंदा हां, ते चंगी तरह त्वानु टेस्ट करदा हां। फिर मैं त्वानु अपनी पक्की संगत विच एंट्री देंदा हां।

- गुरु से गुरु को ही माँगो। न माँ, न बाप, न पति, न पत्नी, न बच्चे और न ही रिश्तेदार काम आएंगे, सिर्फ एक गुरु ही है जिस पर तुम भरोसा कर सकते हो, जो हर वक्त तुम्हारे साथ खड़ा होगा।
- लोग मेरे पास सिर्फ दुनियावी सुख माँगने आते हैं; कोई मेरे पास आध्यात्मिक ज्ञान के लिए नहीं आता। पूरन गुरु मिलना आसान नहीं होता। कोई विरला ही होता है जो गुरु से गुरु को माँगता है। जब कोई ऐसा करता है तो मैं उसकी श्रद्धा और गुरु के लिए प्रेम की परीक्षा लेता हूँ और उसे नींबू की तरह निचोड़ता हूँ। जब भक्त इन परीक्षाओं में सफल हो जाता है, तो मैं उसे अपने शाश्वत निष्ठावान शिष्य के रूप में स्वीकार करता हूं।

35. ना साडा जनम होंदा है, ना ही मरण होंदा है। असी अपनी मर्ज़ी नाल आंदे हां ते अपनी मर्ज़ी नाल जांदे हां।

- इसका यह अर्थ है कि महापुरुष ना जन्म लेते हैं और ना ही उनकी मृत्यु होती है। वे इस दुनिया में अपनी मर्ज़ी से आते हैं और मानव शरीर भी अपनी मर्ज़ी से छोड़ते हैं।

36. गुप्त पाठ

- गुरुजी सदा अपनी संगत को याद दिलाते हैं कि पाठ ऐसे करना चाहिए कि साथ बैठे हुए को भी पता न चले कि पाठ कर रहे हैं। विनम्र तरीके से किए गए पाठ का फल मिलता है, न कि दिखावा करने और ध्यान आकर्षित करने के इरादे से।
- उनके वचन हैं कि घर की महिला अगर पाठ करते हुए खाना बनाती है तो उस भोजन में सकारत्मकता आ जाती है और सारे परिवार को उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है।

37. गुप्त दान

- गुरुजी बार-बार समझाते कि दान ऐसे करना चाहिए कि दूसरे हाथ को पता न चले कि एक हाथ ने दान किया है। अपने दान के कार्य को प्रचारित करने के वह पूरी तरह खिलाफ थे। अब, जब वे पहले से भी ज़्यादा सर्वज्ञ हैं उनके वचन का पालन करना हमारे लिए सबसे कल्याणकारी होगा।

38. गुप्त सेवा

- गुरुजी कहते हैं कि सेवा अगर नाम, प्रसिद्धि या कोई और फ़ायदे के लिए की जाती है तो उसका उद्देश्य विफल हो जाता है। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि सेवा करते समय या उसके बाद अगर हमने किसी का दिल दुखाया तो निस्स्वार्थता खो जाती है और सेवा करने वाले का कल्याण नहीं होता।

39. फिर गुरुजी ने डिंपल से कहा कि उनसे जुड़ने के लिए ध्यान लगाना ज़रूरी है और इसलिए वे चाहते हैं कि संगत ध्यान लगाए। वे बोले कि ध्यान लगाने और

भगवान से जुड़ने के लिए शांत वातावरण बहुत आवश्यक होता है।

40. मुंडे तां अस्सी बेरां दी तरह वंड दिंदे हां। कुड़ियाँ किसे-किसे नूं दिंदे हां। कुड़ियाँ मैं कर्मा वालियां नूं देंदा हां।

- गुरुजी कहा करते थे कि वे लड़के आसानी से दे देते हैं लेकिन लड़कियाँ बहुत अच्छे कर्मों वालों को ही देते हैं।

41. गुरुआं नाल दिल तों, ते सच्चे मन्नों प्यार करो जे तुस्सी गुरु नूं पाणा है।

- गुरु को पाने के लिए सच्चे दिल से और मन से उन्हें प्यार करो।

42. चमत्कार को नमस्कार है।

- गुरुजी बोले कि आजकल जब तक लोग चमत्कार नहीं देखते, उन्हें गुरु पर विश्वास नहीं होता है और क्योंकि वे सबपर इतनी कृपा बरसाते हैं इसी लिए संगत बड़े मंदिर और सत्संगों में जाती है। फिर वे बोले कि अगर वे वो देना बंद कर दें जो संगत को चाहिए तो संगत

उनके पास आना बंद कर देगी क्योंकि सबको उनसे बस अपनी माँगों की पूर्ती चाहिए। गुरुजी प्रेमपूर्वक मुझसे बोले कि वे सबको और भी अधिक उदारता से देंगे अगर हम उनसे माँगना बंद कर दें, यह केवल वे ही जानते हैं कि किसको कब और क्या देना है।

43. ऐंवई छोटियां-छोटियां प्रॉब्लम्स ते गुरुआं नूं याद नहीं करना चाइदा। तूं रोड ते जांदे हुए मैनु याद कर रहया सी, ऐथे मेरे रूम ते नॉक हो रहया सी, और मैं पाठ विचों डिस्टर्ब हो रहया सी।

- गुरु को छोटी-छोटी बातों के लिए परेशान नहीं करना चाहिए। आज दोपहर तू सड़क पर चलते हुए मुझे याद कर रहा था और तेरी छोटी सी परेशानी मेरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दे रही थी; उससे मेरा ध्यान भंग हो गया। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि वे अपनी संगत के साथ हर पल होते हैं लेकिन हमें उन्हें छोटी-छोटी बातों के लिए परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वे हमारी और औरों की बड़ी परेशानियों का समाधान कर रहे होते हैं। वे बोले कि हमें उनसे तभी मदद माँगनी

चाहिए जब कोई बड़ी परेशानी हो और हम सब कोशिश कर चुके हों और हमसे वो हल ना हो रही हो। उन्होंने मुझे इस तथ्य के प्रति सचेत किया कि कुछ कर्म ऐसे होते हैं कि उनसे बचने के बजाय उनसे निपटना ही अच्छा होता है।

44. अगर हम पूर्ण रूप से उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं तो औरों के लिए प्रार्थना करें, न कि स्वयं के लिए।

- गुरुजी ने सदा इस बात पर ज़ोर दिया कि अगर हमें उनका भरपूर आशीर्वाद चाहिए तो हमें स्वयं के लिए नहीं बल्कि औरों के लिए उनसे प्रार्थना करनी चाहिए। गुरुजी हमें बताया करते कि इंसान बहुत स्वार्थी और स्व-केंद्रित होता है। दूसरों के साथ सहानुभूति रखने कि इच्छा नहीं होती या फिर बहुत कम होती है। गुरुजी, हमारे भगवान, दाता और कर्ता हैं लेकिन हमें पूरी आस्था और भक्ति के साथ विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए।

45. उनकी आत्मा से प्यार करो, शरीर से नहीं।

- गुरुजी अक्सर हमें याद दिलाते थे कि हमें उनकी आत्मा से प्रेम करना चाहिए, शरीर से नहीं। वे हमें बताते थे कि अगर हम उनकी आत्मा से जुड़ेंगे तो वे सदा हमारे साथ होंगे, उसी रूप में जिसमें हम उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं। वे अक्सर कहते थे कि वे स्वयं, भगवान शिव और गुरुनानक जी एक ही आत्मा हैं और संगत को साँस-साँस में उनका नाम जपना चाहिए। गुरुजी हम सबके अंदर हैं, हमें बस अपनी अंतरात्मा पर ध्यान केंद्रित करना है और उन्हें पाना है।

46. गुरुजी बोले कि भविष्य में उनकी संगत बहुत बढ़ जाएगी।

- गुरुजी बोले कि आगे जाकर उनकी संगत बहुत बढ़ जायेगी जिस पर मैंने पूछा कि वे उत्तरी भारत के अतिरिक्त कहीं और नहीं जाते हैं तो उनकी संगत कैसे बढ़ेगी। गुरुजी, स्वयं भगवान होने के नाते, मेरे भोलेपन पर हँस दिए, और बोले कि उनके अनंत रूप हैं, और उनके सच्चे भक्त कहीं भी और किसी भी रूप में

जिसमें उनकी मान्यता हो, उनकी पूजा कर सकते हैं। फिर गुरुजी बोले कि भविष्य में बड़े मंदिर में उनके दर्शन के लिए लंबी लाइनें लगा करेंगी।

47. मैं ते साईं इको हां।
   - मैं और साईं एक हैं।

48. अपने गुरु दा स्वास-स्वास शुक्राना करया करो। त्वानु लोगां नूं पता नहीं मैं त्वाडा की की ध्यान करदा हां।
   - तुम सबको साँस-साँस में अपने गुरु का शुक्राना करना चाहिए; तुम्हें पता ही नहीं मैं कैसे-कैसे तुम्हारा ध्यान रखता हूँ और आशीर्वाद देता हूँ।

49. जब गुरुजी की कोई संगत का मुश्किल समय चल रहा होता है या वे प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रहे होते हैं, गुरुजी उन्हें दूसरे शहर या देश भेज देते हैं, अस्थायी या स्थायी रूप से। जब गुरुजी मानव चोले में थे तब उन्होंने हमें बताया कि वे संगत को दूसरी जगह भेज देते हैं ताकि वे उन्हें आशीर्वाद दे सकें और उनकी प्रतिकूल स्थिति पर काम कर सकें ताकि समय आने पर इसे उनके लिए अनुकूल बनाया जा सके।

50. मैं लाइट हां, तां मैं ही ॐ ते एक ओंकार हां। ब्रह्मा, विष्णु, महेश मेरे विचों आए नें। मेरा न जन्म होंदा है न मैं कभी मरदा हां। मैं अपनी मर्ज़ी नाल ऐस धरती ते आंदा हां, और अपनी मर्ज़ी नाल जांदा हां। तुस्सी सब बड़े किस्मत वाले हो जो मेरी शरण विच हो। मैं तां परमात्मा हां। ना मेरे कोलो पहलां कोई सी, तां ना मेरे अग्गे कोई होवेगा। पहले वी मैं सी, हुण वि मैं हां, तां अग्गे वी मैं ही होवांगा। ना मैं किसीं तों गूढ़ मंत्र लित्ता है, ना किसी नूं दित्ता है। मैं तां तुस्सी लोगां नूं वहम तों कड्ढन लयी तां जागृत करण आया हां।

- मैं उज्ज्वल दिव्य प्रकाश हूँ, और ॐ और एक ओंकार मेरी दिव्यता में समाहित हैं। मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश का निर्माता हूँ। न मेरा कभी जन्म हुआ और न ही कभी मेरा मरण होगा। मैं अपनी मर्ज़ी से पृथ्वी पर आता हूँ और अपनी मर्ज़ी से जाता हूँ। तुम सब बहुत भाग्यशाली हो कि मेरी शरण में हो। मैं सर्वोच्च भगवान हूँ। न मेरे से पहले कोई था और न मेरे बाद होगा। पहले भी मैं था, आज भी मैं हूँ और आगे भी मैं ही

होऊँगा। मुझे किसी से कोई गुप्त मंत्र नहीं मिला है और न मैंने किसी को ऐसा कोई मंत्र दिया है। लोगों को वहमों से दूर करने के लिए और उन्हें जागृत करने के लिए मैंने मानव रूप धारण किया है।

15. बब्बू संधु आंटी और संधु अंकल

1. मूर्खों के हम दास।
2. जेड़ी मंगण वाली चीज़ है ओ कोई नहीं मंगदा।
   - जो माँगने वाली चीज़ है वो कोई नहीं माँगता।
3. जाओ अवतार दिवस दी अनाउंसमेंट करके आओ।
   - हम हमेशा गुरुजी के जन्मदिन की बात किया करते थे। एक दिन गुरुजी ने संधु अंकल को बहुत ही सुखद आश्चर्य दिया जब वे बोले, "जाओ अवतार दिवस दी अनाउंसमेंट (घोषणा) करके आओ।" उस दिन से हम गुरुजी के जन्म दिवस को अवतार दिवस कहने लगे।

16. डॉ. नीलम सिंह आंटी

1. मन चंगा ते सब चंगा।
2. किसी का घर छोटा हो बड़ा हो, कोई फर्क नहीं पड़ता; दिल बड़ा होना चाहिए।
3. अगर डाक्टर्स ऐथे (मंदिर) बैठेंगे तो मरीज़ों का इलाज कौन करेगा।

17. सबीना कोचर आंटी

1. पहले वी मैं, हुण वी मैं, ते बाद विच वी मैं, ऐथे कोई गद्दी नहीं चलदी।
   - पहले भी मैं था, आज भी मैं हूँ, आगे भी मैं ही रहूँगा। मेरा कोई उत्तराधिकारी नहीं है।
   - अनंत काल तक वे ही इस दिव्य गद्दी पर विराजमान रहेंगे।
2. मेरे वास्ते मेरा परिवार वी संगत है।
   - मेरा परिवार भी मेरे लिए संगत के समान है – मेरे परिवार के किसी भी सदस्य के पास कोई दिव्य शक्ति नहीं है। संगत मेरे लिए मेरा परिवार है।
3. मैं अपने भक्त नूं बहुत प्यार करदा हां।
   - मैं अपने भक्तों से बहुत प्यार करता हूँ; मैं उनका बुरा समय हटा देता हूँ।
4. जद जुत्ती बाहर लाहन्दे हो तां अपनी इंटेलिजेंस वी बाहर लाह के आया करो, ओह्दा ऐथे कोई कम्म नहीं।

- जब अपने जूते बाहर उतारते हो तो अपनी अक्ल भी वहीं छोड़ आया करो क्योंकि यहाँ उसका कोई काम नहीं है।

5. जे सेलफोन मेरे नाल यूज़ कित्ता तां तेरी ब्लेसिंग्स उनूं ट्रांसफर हो जांगियां।

- मेरी उपस्थिति में मोबाइल फोन का उपयोग मत करो क्योंकि तुम्हारे हिस्से का आशीर्वाद उसे ट्रांसफर हो जाता है।

6. जे ज़िन्दगी दा घोड़ा मैनु देयो तां मैं बिलकुल सिध्धा हांकांगा।

- अपने जीवन की डोर अगर मुझे सौंप दोगे तो मैं सीधा मुक्ति की ओर ले जाऊँगा।

7. घर दा एक मेम्बर वी जे मेरे कोल आ जावे ते पूरी फैमिली दा कल्याण हो जांदा वे।

- परिवार का एक सदस्य भी अगर मेरे पास आ जाता है तो पूरे परिवार का कल्याण हो जाता है।

8. सिर्फ किताबी पाठ, पाठ नहीं हुंदा।

- सिर्फ किताब से प्रार्थना पढ़ना काफी नहीं होता, आपके दैनिक काम-काज, आपका काम, अपने परिवार का ध्यान रखना भी पाठ होता है।

9. सबतों उच्चा पाठ, घरवाला घरवाली दी सेवा करे, घरवाली घरवाले दी सेवा करे, दोनों मिलके अपने बच्च्यां नूं संवारो, अपने घर नूं कलेश रहित रखो।

- सबसे ऊँचा पाठ होता है कि पति पत्नी की सेवा करे और पत्नी पति की, दोनों मिलकर बच्चों का ध्यान रखें और घर में शांति बनाकर रखें।

10. गुरुजी ने मुझसे कहा, गुरुआं नूं कॉन्ट्रडिक्ट नहीं करदे। फिर वे मुड़े और किसी को बोले, चल भाई लता मंगेशकर दे गाने लगा। हमने गाने सुने। फिर गुरुजी बोले, किन्ना सोणा गांदी है न आशा भोंसले?... इसपर कोई क्या बोले। मैं हैरान थी और चुप रही। उन्होंने सवाल दोहराया। मैंने हाँजी कह दिया, यह सोचते हुए कि गुरुओं को कॉन्ट्रडिक्ट नहीं करते।

- गुरुओं की बात का खंडन नहीं करते।

11. रब कदी नज़र नहीं आंदा।

- मैंने उत्तर दिया, मैनु त्वाडे विच नज़र आंदा है। वे मुस्कुराए।
- भगवान कभी नज़र नहीं आते। उन्होंने यह दुनिया, सौरमंडल, सब कुछ बनाया है।

12. रब नूं प्यार करो, उदे कोलों डरो नहीं।
- भगवान को प्यार करो, उससे डरो नहीं।

13. महापुरुष दे लेवल होंदे ने। जो लोकां दा मर्ज़ अपने उत्ते ले सकदा है ओ यूनिवर्स विच सिर्फ एक होंदा है। ओ सतगुरु होंदा है। ओ मैं हां।
- हर कोई लोगों का मर्ज़ (बीमारी) अपने ऊपर नहीं ले सकता, उन्हें हुक्म नहीं है। वो सिर्फ लोगों का मार्गदर्शन करा सकते हैं। महापुरुषों (संतों) के स्तर होते हैं। सतगुरु सबसे ऊँचा होता है और वो मैं हूँ। एक सतगुरु ही लोगों की बीमारियाँ अपने ऊपर ले सकता है और उन्हें ठीक कर सकता है। संत सिर्फ मुक्ति की ओर मार्गदर्शन कर सकते हैं। मनुष्य होने का फायदा ही क्या, अगर हम भगवान का शुक्राना न करें?

14. कदी किसी दी रीस नहीं करनी चाइदि।
   - कभी दूसरों की देखा-देखी नहीं करनी चाहिए। जो दूसरों के पास है उसे पाने की आकांक्षा मत करो।
15. लोकि बर्थ स्टोन्स ते खुशहाली वास्ते पा लेंदे ने, जे ओहियो स्टोन पुट्ठा असर कर रहा होवे तां की? नहीं पाणे चाइदे।
   - सुख-समृद्धि के लिए बर्थ स्टोन्स नहीं पहनने चाहिए। कभी-कभी उनका उल्टा असर भी हो सकता है। मैंने उत्तर दिया कि हम चारों ने (मेरे पति, मैं और दो बच्चे) कभी नहीं पहने। गुरुजी बोले कि वे आमतौर पर बोल रहे थे।
16. कदी वी हथ न दिखाओ।
   - भविष्य जानने के लिए कभी भी अपना हाथ मत दिखाओ।
17. कदी वी माला नहीं जपदे, माला जपण नाल अहंकार आ जांदा वे।

- माला कभी नहीं जपनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से अहंकार आ जाता है। गिनकर जाप नहीं करना चाहिए।

18. दूर बैठा जो मेरे कोल नहीं पहुँच सक रहया, ओ मेरी फोटो नाल गल करे; मैं सुनदा हां।

- अगर कोई मेरे पास या बड़े मंदिर नहीं आ सकता तो वह मेरी तस्वीर से बात करे – मैं उसकी भी सुनता हूँ।

19. डिस्कशन करन नाल रब नहीं मिलदा।

- भगवान चर्चा करने से नहीं मिलते। गुरुजी ने एक बार मुझे डाँट लगाई थी। जब कोई गुरुजी का सत्संग करता है, तो इसपे चर्चा न करें। गुरु और शिष्य के बीच जो भी होता है, वह उन दोनों के बीच है। कोई नहीं जान सकता कि किसी और का गुरु के साथ क्या कनेक्शन है।

20. ओनली डेड फिश स्विम विथ द टाइड।

- केवल मरी हुई मछलियाँ ही ज्वार के साथ तैरती हैं।

21. सेल्फ प्रेज़ इज़ नो प्रेज़।

- आत्म-प्रशंसा कोई प्रशंसा नहीं होती।

22. हेल्थ इज़ यौर रियल वेल्थ।
   - स्वास्थ्य ही आपका असली धन है।
23. अपने अहंकार को नियंत्रण में रखो।
24. जीवन आसान नहीं होता। प्रार्थना से सब कुछ संभव है। जो प्रार्थना करते हैं वे धन्य हैं।
25. टू मच ऑफ एवरीथिंग इज़ बैड।
   - किसी भी चीज़ की अधिकता बुरी होती है।
26. मनुष्य को कर्तव्यनिष्ठ रहना चाहिए और सही बात के लिए आवाज़ उठानी चाहिए, और सही मार्ग पर चलना चाहिए, भले ही सारी दुनिया अलग दिशा में जा रही हो।
27. डाक्टर अपना काम करेंगे, मैं अपना।
28. दवाई वी तां लगदी है जद मैं ब्लेस करांगा।
   - दवाई का असर भी तब होता है जब मैं आशीर्वाद देता हूँ।
29. चंगे दर्शन हो रहे ने, बाद विच मैं तारेयां वर्गा नज़र आवांगा... संगत वदेगी।

- खुले दर्शन हो रहे हैं, बाद में मैं तारों के जैसा नजर आऊंगा... संगत बढ़ेगी।

30. जिन्नि मर्ज़ी जगह वदा लो (बड़े मंदिर से संबंधित) फिर वी कम पयेगी, एन्नी संगत वदेगी।

- गुरुजी अक्सर कहते थे कि संगत बढ़ेगी और मंदिर चाहे जितना बड़ा बना लें, संगत इतनी बढ़ती जाएगी कि जगह कम ही पड़ेगी। यह तब की बात है जब मंदिर संगत के लिए नहीं खुला था और गुरुजी स्वयं बुलाते थे।

31. हालात बहुत माढ़े आ रहे हैं। जो पाठ करेगा ओ बच जाएगा।

- आगे समय बहुत खराब होने वाला है। जो पाठ करेगा वो ही बचेगा।

32. इस मंदिर विच बारह (१२) तीर्थ स्थानों का धाम है।

- गुरुजी का आश्रम, जिसे हम प्रेम से बड़ा मंदिर बुलाते हैं, इसमें बारह तीर्थ स्थानों की मिलाकर शक्ति है। गुरुजी बोले कि जो भी यहाँ आएगा, उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त होगा।

33. मंदिर दे अंदर सोना नहीं है... कल्याण अधूरा रह जाता है।

- मंदिर में जब प्रार्थना सभा चल रही हो तो कभी सोना नहीं चाहिए, कल्याण अधूरा रह जाता है।

34. गुरु नूं कदी चिट्ठी नहीं लिखी दे, खुश रहा कर। जो होगा अच्छा होगा।

- गुरु को कभी चिठ्ठी नहीं लिखनी चाहिए। खुश रहो – जीवन में जो होगा अच्छा होगा। जो बीत गई सो बात गई।

35. हाड़-मांस का सामने बैठा हां, लोकां ने इंसान समझ लित्ता। लोकां नूं बाद विच समझ आएगी कि मैं की हां। मैं बहुत तप कित्ता है, पत्तेयां ते निर्वाह कित्ता है। बंबई दी सड़कां ते भीख माँगी है। तैन्नु पता है किन्ना मुश्किल होंदा है?

- लोगों ने मुझे हाड़-मांस का देखकर इंसान समझ लिया है। एक दिन आएगा जब उन्हें पता चलेगा कि मैं कौन हूँ। मैंने बहुत तप किया है, बंबई की सड़कों पर भीख माँगी है। पता है कितना मुश्किल होता है? गुरु का

आकार इतना महान होता है कि वह एक समय पर अनेक जगहों पर हो सकता है।

36. त्वानु मैं इंसान नज़र आंदा हां। जित्थे मैं खड़ा हां, मैनु तुस्सि लोग चींटी वर्गे नज़र आंदे हो।

- तुम मुझे इंसान के रूप में देखते हो। मैं जहाँ से तुम्हें देखता हूँ, तुम मुझे चींटी जितने नज़र आते हो।

37. माफ करन ही ते मैं आया हां।

- मैं माफ करने ही तो आया हूँ।

38. मेरे विच सूरज नूं कंट्रोल करन दी शक्ति है। सूरज हुन बुड्ढा हो चला है। मीं वधेगा। लोकी पेड़ कटदे ने।

- मुझमें सूरज कंट्रोल करने की शक्ति है। सूरज अब बूढ़ा हो रहा है। बारिश बढ़ेगी। लोगों को पेड़ नहीं काटने चाहिए।

39. मेरे कोल आण दा रास्ता बहुत पथरीला है। मैं नींबू वाकन निचोड़ांगा। जे ज़रा वी रस रह गया ते फेर की फायदा?

- मुझ तक पहुँचने का रास्ता आसान नहीं है। मैं नींबू की तरह निचोड़ूंगा, हर संभव तरीके से परखूँगा। अगर पूरी तरह से समर्पण नहीं किया तो क्या फायदा?

40. जे कोई मेरी तरफ इक कदम वी बढ़ांदा है तो मैं ओदि तरफ सौ कदम चल कर आंदा हां।

- जो कोई मेरी ओर एक कदम बढ़ाता है, मैं उसकी ओर सौ कदम बढ़ाता हूं।

41. लंगर ते चाय प्रसाद विच मेरी ब्लेसिंग्स ने। लंगर त्वाडी दवाई है। ऐथे पूरा खत्म करना चाइदा है। ऐनु व्रत वाले दिन विच वी खा सकदे हो। ऐनु प्रसाद दी तरह वेखो, पदार्थ (खाना) नहीं। जद तुस्सी ऐथे लंगर खांदे हो त्वाडे घर दे मेम्बर, जो नहीं आए, बच्चे, माँ-प्यो, ओ वी ब्लेस हो जांदे ने।

- लंगर और चाय प्रसाद में मेरा आशीर्वाद है। ये तुम्हारी दवाई हैं और तुम्हारी सभी समस्याओं का हल हैं। व्रत में भी इसे प्रसाद समझकर खाओ, पदार्थ नहीं, चाहे लंगर में जो भी हो। जब परिवार का कोई भी सदस्य

यहाँ इसे खाता है, बाकी सदस्यों को भी आशीर्वाद प्राप्त होता है, चाहे वे घर में हों या अस्पताल में।

42. लंगर दा प्रशाद ऐथे खाओ तां दवाई, बाहर लेकर जाओ तां मिठाई।

- लंगर और चाय प्रसाद में मेरा आशीर्वाद होता है और यहीं पूरा ग्रहण करना चाहिए।

43. लंगर प्रसाद नूं दोबारा गर्म नहीं करदे।

- लंगर प्रसाद को दोबारा गर्म नहीं करना चाहिए।

44. मेरे ब्लेसिंग्स देंण दे बड़े तरीके ने, एक संगत करना है। जो बोलदा है ओदा वी भला, जो सुनदा है ओदा वी भला। वो क्या देता है ज़रूरी नहीं तुम्हें पता हो। किन्ने कल्याण मैं गुप्त करना वा।

- आशीर्वाद देने के मेरे बहुत तरीके हैं, इनमें एक है संगत करना। मैं बहुत गुप्त कल्याण भी करता हूँ। जब आप गुरु का गुणगान करते हैं तो करने वाले का भी भला होता है और सुनने वाले का भी। कभी मैं दूर रखकर भी भला करता हूँ। मैं बहुत तरीकों से आशीर्वाद देता हूँ।

45. एहो जेह्या गुरु मिलेगा किदरे? मैं कोई प्रवचन नहीं करदा, प्रैक्टिकल करके विखाना हां।

- ऐसा गुरु मिलेगा कहीं? मैं कोई प्रवचन नहीं करता, प्रैक्टिकल कल्याण करके दिखाता हूँ।

46. सबतों पॉज़िटिव, सबतों वदिया रंग हैगे ने लाल, क्रीम और काला। फिर आंदे ने जोगिया, संतरी, गुलाबी, पीला, हरा, जामुनी, सफ़ेद। "गूढ़" नीला गुरुआं दा रंग नहीं होंदा, ओ नहीं वरतना चाइदा, नेगेटिविटी और कन्फ्यूशन करदा है पाण वाले नूं। फिरोज़ी, आसमानी, नेवी ब्लू चंगे ने।

- सकारात्मकता और समृद्धि के लिए सबसे अच्छे रंग होते हैं लाल, क्रीम और काला, फिर आते हैं नारंगी, गुलाबी, पीला, हरा, जामुनी और सफ़ेद। "गूढ़" नीला – इलेक्ट्रिक ब्लू, गुरुओं का रंग नहीं होता, उसका उपयोग नहीं करना चाहिए। उससे पहनने वाले को नकारात्मकता और सम्भ्रम होते हैं। फिरोज़ी नीला, आसमानी नीला और नेवी ब्लू अच्छे होते हैं।

- जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वे ऐसा मेरे परिवार के लिए कह रहे थे, तो उन्होंने उत्तर दिया, "जो सुन ले उसका भला"।
- गुरुजी यह भी बोले के त्यागे हुए "गूढ़" नीले कपड़े किसी को देने नहीं चाहिए बल्कि उन्हें नष्ट कर देना चाहिए या फेंक देने चाहिए ताकि किसी गरीब को भी वे गलती से न मिल जायें और उसे भी नुक्सान न पहुँचे। वे ज़ोर देकर बोले कि यहाँ तक कि इस रंग के पर्दे, सोफे के कपड़े और टॉवल भी फेंक देने चाहिए।

47. आँख, नाक, कान सब आगे हैं, पीछे नहीं, ऐदा रब नूं शुक्राना करना चाइदा वे।

- आँख, नाक और कान के लिए भी भगवान का शुक्राना करना चाहिए कि वे आगे की तरफ हैं, पीछे नहीं।

48. इंसान किस कम दा? जानवर मरके भी कम आंदे ने, चमड़े दे बैग, जूते, बेल्ट, खांण दे वी कम आंदे ने, लेकिन इंसान ते मरके किसी कम दा नहीं। जींदे जी सिर्फ पाठ कर सकदा वे।

- इंसान किस काम का है? जानवर तो मर कर भी काम आते हैं, उनके चमड़े से जूते, बैग और बेल्ट बनती है और खाने के भी काम आते हैं लेकिन इंसान तो मर कर किसी काम नहीं आता। अगर वह कुछ लाभदायक कर सकता है तो वह है के जब तक जिंदा है, तब तक वह पाठ कर सकता है।

49. उनके शब्दों में, संगत करना गुरु के वचन याद करना होते हैं।

- संगत करना, यानि अपने व्यक्तिगत आशीर्वादों का व्याख्यान करना शुक्राना होता है जो हमें ज़रूर करना चाहिए। गुरुजी अक्सर कहा करते थे कि मैंने तुम्हारे जो भी कल्याण किए हैं उनका बखान करो।

50. ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय, गुरुजी द्वारा दिया गया बीज मंत्र है और उन्होंने समझाया कि 'शिव' स्वयं सृष्टिकर्ता हैं। गुरुजी ने स्वयं को शिव कहा।

51. जे मैं इक वी बंदा रब पासे पा दित्ता, मेरा कम हो गया।

- अगर मैं एक इंसान को भी भगवान की राह पर डाल सका तो मेरा काम हो गया।

52. जे कर्म चंगे ने, सब कुछ लवो, कोई मनाही नहीं है।
- अगर करम अच्छे हैं, तो सब कुछ लो, कुछ मना नहीं है।
- अगर कर्म अच्छे हों तो भौतिकवाद से लगाव भी रख सकते हो।

53. कदी वी मन्नतां नहीं मंगते।
- आशीर्वाद के लिए कभी विनिमय न करें, जैसे कि आप ऐसा करेंगे तो मैं वो छोड़ दूँगा इत्यादि। सच बोलें तो, हमारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। जब कोई सेवा भी करता है तो अपने लिए करता है, वह गुरुजी पर उपकार नहीं है।

54. लोकी पुत्तर मंगदे ने, जे मेन्टली रिटार्डेड पैदा हो जावे तां?
- लोग बेटे माँगते हैं, और अगर वह मंदबुद्धि निकले तो?

55. जे किसी गरीब नूं खाना देना वे, ते पार्टी तों पहलां उदे वास्ते कड के रखो, बाद विच लेफ्टओवर्स नहीं।

- अगर गरीबों को और घर में काम करने वालों को खाना देना है तो पार्टी से पहले खाना निकालकर रखो, पार्टी के बाद बचा-खुचा नहीं।

56. जे भिखारी नूं कुछ नहीं देना ते कदी वी धुत्कारो ना, हथ जोड़ दित्ता करो; की पता कौन किदे भेष विच आ जावे?

- अगर भिखारी को कुछ न देना हो, तो बस हाथ जोड़ लो, तुम्हें नहीं पता कौन किस भेष में आया हो। उनसे कभी कठोरता से बात न करें।

57. कदी किसी दी निंदा नहीं करनी चाहिए। ओ घर बैठे त्वाडी पॉज़िटिव कमाई ले जांदा है ते अपनी नेगेटिव कमाई त्वाडी झोली विच पा देंदा है।

- कभी किसी की निंदा न करें क्योंकि ऐसा करने पर तुम्हारे आशीर्वाद उन्हें घर बैठे मिल जाते हैं और उनके बुरे कर्म तुम्हारे हिस्से में आ जाते हैं।

58. जद कोई अपना दुखड़ा तेरे सामने रोवे उनूं कवो, 'गुरुजी दे कोल जावो, ओ ठीक करेंगे'। सुनीं ना। ओ

त्वाडी पॉज़िटिविटी ले जाँगे ते अपनी नेगेटिविटी छड जांगे।

- जब कोई अपना दुखड़ा तुम्हारे सामने रोए तो उसको कहो, 'गुरुजी के पास जाओ, वो ठीक करेंगे'। सुन्ना नहीं है। नहीं तो वो तुम्हारी सकारात्मकता ले जायेंगे और अपनी नकारात्मकता छोड़ जायेंगे।
- किसी के दुखड़े मत सुनो, बल्कि उन्हें मेरी ओर निर्देशित करो।

59. जे तू फील करदी है कि कोई तेरे बारे विच की केहंदा है, तां तू उदे कंट्रोल इच हो गई। अपने कंट्रोल इच होना सिख।

- अगर तू महसूस करती है कि कोई तेरे बारे में क्या कहता है, तो तू उसके नियंत्रण में हो गई। अपने नियंत्रण में होना सीखो।
- दूसरा कोई आपके बारे में क्या कहता है, उससे प्रभावित होना छोड़ दें; आपको अपने नियंत्रण में रहना चाहिए, औरों के नहीं।

60. गुप्त पाठ और गुप्त दान कित्ता करो। नाल बैठे नूं ना पता चले कि तुस्सी पाठ कर रहे हो।

- गुप्त पाठ और गुप्त दान किया करो। पाठ ऐसे करना चाहिए कि साथ बैठे हुए को भी न पता चले। गुप्त दान करो; दान करो तो औरों को उसके बारे में न बताया करो।

61. घर विच कैक्टस और बोन्साई (स्टंटेड ग्रोथ प्लांट) नहीं रखना।

- कैक्टस और बोन्साई (रुके हुए विकास वाले पौधे) घर पर नहीं रखने चाहिए।

62. ओ सेवा जिदे पिच्छे मंग है, ओ असल सेवा नहीं। असल सेवा निह-स्वार्थ होंदी है।

- जिस सेवा के पीछे कोई माँग हो, वह असली सेवा नहीं होती। असली सेवा निःस्वार्थ होती है, बिना किसी माँग के।

63. जो कम्म तुसी करदे हो, उदे करन नाल किसी होर दा वी भला हो जावे तां की फर्क पैंदा है।

- अगर आपके दैनिक जीवन में आपके किए गए कार्य से किसी और का भला हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है?

64. गुरुजी का हुक्म था कि उनके बारे में कभी कुछ मीडिया में न छपे। जो प्रवचन करदे ने, बोलदे ने, ओ असल नहीं; असल गुरु हमेशा अपने आप नूं लुकाएगा।

- असली गुरु हमेशा अपने आप को छुपाएगा। जो स्वयं को गुरु घोषित करते हैं, वे असली गुरु नहीं होते।

65. दो जने नाल बैठे होवेंगे; फ्रेग्रन्स इक नूं आएगी दूजे नूं नहीं क्योंकि ए मेरे उत्ते है कि किनु देणी है।

- दो लोग साथ बैठे होंगे; खुशबू एक को आएगी दूसरे को नहीं क्योंकि ये मेरे ऊपर है कि किसे देनी है।
- गुरुजी के शरीर से सुगंध उनकी मर्ज़ी से आती है; वह उनका प्रसाद है। वह किसी को कहीं भी आ सकती है - मंदिर में या घर में।

66. गुरबानी दे टेप (कैसेट) सुनदे हो?

- मैंने उत्तर दिया, हाँ जी गुरुजी, कदी कदी।

- समझ आंदे ने?
- मैंने उत्तर दिया, जी थोड़े थोड़े।
- सुनया करो, चंगे होंदे ने, वे बोले।

67. जद मैं त्वानु डांस कराना वा, त्वाडी बॉडी दा पूरा एक्स-रे खिच जांदा है होर जित्थे खराबी होंदी है, मैं ठीक करना वा।
- जब मैं डांस करवाता हूँ, आपके पूरे शरीर का एक्स-रे मेरे सामने आ जाता है, फिर उसमें जो खराबी होती है मैं उसका इलाज करता हूँ।

68. गुरुजी ने संगत को 'शिव पुराण' पढ़ने के लिए कहा।

69. बोता पैसा चंगा नहीं होंदा। साईं इतना दीजिए जां में कुटुम्ब समाए।
- बहुत पैसा अच्छा नहीं होता। बस इतना होना चाहिए कि परिवार के लिए पूरा हो।

70. गुरु अग्गे अपने कर्म बख्शवा लेने चाइदे ने। ओ कर्म जो त्वानु नहीं पता कि तुस्सी गलत करे ने, ओ वी।

- गुरु के सामने अपने कर्मों की माफी ले लेनी चाहिए। उन करमो के लिए भी जो हमें नहीं पता कि हमने गलत किए हैं।

71. गुरु वास्ते ऐना प्यार होना चाइदा कि सुत्ते, जगते लिपस्टिक लगांदे वेले वी गुरु चेते होवे।

- गुरु के लिए आपका प्रेम इतना होना चाहिए कि आप सोते, जागते, यहाँ तक कि लिपस्टिक लगाते समय भी उन्हें याद करें।

72. मोक्ष मिलदा है? मैंने पूछा।
जे चंगे कर्म करो, तां।

- मानवता के लिए अच्छे कर्म करें।

73. मैं रसिक बैरागी हूँ। तुम्हें भगवान की ओर ले जाता हूँ, लेकिन तुम्हारे पारिवारिक कर्तव्यों से दूर नहीं करता।

74. मैं सृष्टि के फेर में कभी हस्तक्षेप नहीं करदा; लेकिन जिदे उत्ते गुरुआं दी मौज आ जावे, लेख मिटाकर नवा लेख लिख सकना वां।

- आमतौर पर मैं सृष्टि के लेख में दखल नहीं देता, लेकिन जिसके ऊपर गुरु की मौज आ जाए, तो गुरु

लेख मिटाकर नए लेख लिख सकता है। अगर चाहूँ तो तुम्हारा भाग्य बदल सकता हूँ।

75. गुरुआं दी गल्ल, पत्थर दी लकीर।

- गुरु के शब्द परम हैं। जो मैंने कहा है वह होकर रहेगा।

76. नेगेटिव गाने नहीं सुनने चाइदे। हर नेगेटिव सीरियल, पिक्चर नहीं वेखनी।

- उदास और दुःखी गाने नहीं सुनने चाहिए। नकारात्मक फिल्में देखने से बचें।

77. मांगलिक, फ़ज़ूल दे वहम ने।

- किसी व्यक्ति का मांगलिक होना बेकार वहम की बात है, ऐसा कुछ नहीं होता।

78. घर दा लंगर सबतों चंगा होंदा है।

- घर में बना लंगर सबसे अच्छा होता है, बहुत अधिक बाहर खाने से बचें।

79. आत्महत्या करना बहुत वड्डा पाप होंदा है।

- आत्महत्या करना बहुत बड़ा पाप होता है।

80. चढ़ाये हुए फूल नहीं लेने। घर जांदे वक्त नदी विच बहा देना।

- गुरुजी ने हमें आदेश दिया था कि किसी और के चढ़ाये हुए फूल घर नहीं लेकर जाने। पंजाब से दिल्ली वापस घर जाते समय हमें उन्हें नदी में बहा देने के लिए कहा गया।

81. सलवार कमीज़ सबतों चंगी ड्रेस होंदी है।

- महिलाओं के लिए सलवार कमीज़ सबसे उचित पोशाक होती है।

82. भावे सब दे कोल पूरा घर है पर रहना एक बेडरूम विच है। रहण वास्ते घर दा इक कमरा कम्म आंदा है।

- व्यक्ति के पास पूरा घर होता है लेकिन वह वास्तव में उपयोग सिर्फ एक बेडरूम का करता है।

83. जे मेरी फोटो नाल तांबे दा लोटा छुवा देयो तां ओ ब्लेस हो गया। कदी वी डिटर्जेंट दे नाल नहीं धोना। राती नींबू या राख दे नाल धो के, भर के रखो, सवेरे पहले पी लो।

- गुरुजी ने ऐसा तांबे के लोटे के बारे में कहा उन मरीज़ों के लिए जो बड़े मंदिर नहीं आ सकते।
- मेरी तस्वीर तांबे के लोटे को छुआ देने से वह धन्य हो जाता है। उसे कभी भी साबुन से नहीं धोना चाहिए। धोने के लिए केवल नींबू या राख का उपयोग करें। रात को उसमें पानी भर कर रखें और सुबह सबसे पहले उसे पी लें।

84. ऐ कलयुग है, ऐदे विच रब जल्दी मिल जांदा वे। पुट्ठा नहीं लटकना पैंदा।
   - कलयुग में भगवान जल्दी मिल जाते हैं; पेड़ से उल्टा लटककर तप नहीं करना पड़ता। बस प्रार्थना कीजिए और उन्हें याद कीजिए।

85. उनके शरीर से एक मधुर सुगंध निकलती थी। उन्होंने मुझे बताया ऐसा सालों का तप करने से हुआ... भीतर एक स्वर्ग, जिसे सचखंड कहते हैं।

86. उनकी उपस्थिति में नयी या पुरानी संगत जैसा कुछ नहीं था। उन्होंने हमें बताया कि हम कितने सालों से उनसे जुड़े हैं, उनकी गिनती नहीं करनी है क्योंकि यह

केवल वे जानते हैं कि हम उनसे कितने जन्मों से जुड़े हुए हैं। वे हमारा बीता हुआ कल, आज और आने वाला कल जानते हैं। उनसे कुछ भी छिपा नहीं है। वे हमें यह भी बता सकते थे कि किसी ने भोजन में क्या खाया है, यह दर्शाने के लिए कि वे सब जानते हैं।

87. मेरे नाल डायरेक्ट कनेक्शन जोड़ो।
   - मेरे साथ सीधा संबंध बनाओ। मैं पहले उनको आशीर्वाद देता हूँ जो आपको मेरे पास लेकर आए, उसके बाद आपकी अपनी यात्रा है।

88. गुलाब विच भी कंडा होंदा है।
   - गुलाब में भी कांटा होता है।
   - अगर किसी अच्छी चीज़ के साथ कुछ बुरा जुड़ा हुआ है, उसे अपना लो क्योंकि कुछ भी पूर्णतया परिपूर्ण नहीं होता।

89. समय किसी का इंतज़ार नहीं करता।

90. पाठ किदरे वी कर सकदे हो, घर दे किसी वी कमरे विच रब नूं याद कर सकदे हो, टॉयलेट विच वी।

- भगवान को कहीं भी याद कर सकते हैं, घर के किसी कमरे में भी, यहां तक कि शौचालय में भी।

91. समय नूं हमेशा वधा के दसदे ने। पौने-नौ (८:४५) न कवो, अट्ठ-पैंताली कवो।

- समय हमेशा बढ़ाकर बोलना चाहिए, घटाकर नहीं। पौने-नौ मत बोलो, आठ-पैंतालिस बोलो।

92. लोकि एन्ना फालतू खर्चा करदे ने व्याह उत्ते। व्याह सिम्पल होने चाइदे ने। असल सेरेमनी किन्नी जल्दी हो जांदी है।

- लोग शादियों में बहुत अधिक खर्चा करते हैं; विवाह सादे तरीके से होना चाहिए। असल रीति में ज़्यादा समय नहीं लगता।

18. रूपा सूद आंटी

1. पहली सेवा घर वालेयां ते बुज़ुर्गां दी।
   - सेवा की प्राथमिकता अपने परिवार और बुज़ुर्गों को दें। अपने पारिवारिक कर्तव्य छोड़कर मंदिर न आएँ।
2. चंगे सोणे कपड़े पा के आया करो, जिवें बॉस नूं मिलण जा रहे हो।
   - जब गुरु को मिलने जाओ तो अच्छे कपड़े पहनकर जाओ, जैसे अपने मालिक को मिलने जा रहे हो।
3. प्रशाद पूरा खाओ।
   - एक बार एम्पायर एस्टेट में मुझे बर्फी प्रसाद मिला और उसे अपने परिवार के लिए घर लेकर जाने के लिए मैंने अपनी जेब में छुपा लिया। गुरुजी ने मुझे बहुत गहराई से देखा, फिर उन्होंने एक सेवादार अंकल को बुलाकर उनसे कुछ कहा। सेवादार अंकल बोले कि गुरुजी बोल रहे हैं कि जिन्होंने भी प्रसाद जेबों में छुपा लिया है, उसे यहीं पूरा करके जाएँ – यह उनका आशीर्वाद है। गुरुजी से कुछ भी छिपा नहीं है।

19. सोनिया मेहता आंटी

1. मैं अपनी संगत नूं बहुत प्यार करदा हां।
   - मैं अपने संगत को बहुत प्यार करता हूँ।
2. जब मैं गुरुजी से पहली बार मिली, वे मुझसे बोले, "बै जा। लंगर खा के जाइं"। फिर शबद के बाद मेरी माँ की तस्वीर मुझे वापस देते समय उन्होंने दोबारा कहा, "लंगर खा के जाइं। मैं बोली, "हाँ जी गुरुजी"।
   - महापुरुष कोई भी बात बस तीन बार बोलते हैं... चाहे वह हुक्म हो या फिर आशीर्वाद। लंगर का महत्त्व दर्शाने के लिए वे तीन बार ऐसा बोले। यह संदेश सिर्फ मेरे लिए नहीं बल्कि सारी संगत के लिए था।
3. ब्लेसिंग्स लेके सीधा घर जाओ। मैं अपनी संगत नूं तोड तक छडन जांदा हां।
   - जब आप गुरुजी के दरबार से घर वापस जाते हैं तो वे आपकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करते हैं।
4. मैन्नू तां कोई थैंक-यू ही नहीं करदा, कम्म करवा लेंदे हैं।

- मेरी सबसे प्रिय अनमोल और सुंदर स्मृति है उनकी प्यारी शर्मीली मुस्कान; वे लग-भग शरमा रहे थे जब मैंने उनसे "थैंक यू गुरुजी" कहा। जब मेरी माँ बहुत बीमार और कमज़ोर थीं, गुरुजी ने मेरी माँ की तस्वीर देखकर उन्हें आशीर्वाद दिया था जिसके बाद वह बहुत जल्दी स्वस्थ हो गई थीं और पाँच साल बाद देहांत तक चुस्त और स्वस्थ रही थीं। गुरुजी ने उनकी तस्वीर पर पॉंच बार टैप करके मुझे वो वापस दी थी। गुरुजी ने उनका जीवन बढ़ाया।

20. शालिनी खेड़ा आंटी

1. मैं रसिक बैरागी गुरु हां। रसों में रहके बैराग करना है। हर चीज़ एंजॉय करो, अंदर से अंदर ज्योत जलाओ।
   - हमें अंदर से भगवान को प्यार करना है। अंदर से ज्योत अंदर जलानी है। ज़िन्दगी की हर चीज़ का आनंद लेना है।
2. चंगे कपड़े पाओ, घुमेया करो।
   - गुरुजी सबकी ट्रैवल और यात्रा को आशीर्वाद देते थे।
3. तुम बुरे काम करके आते हो, जब तुम आते हो मैं तुम्हारे कर्म काटता हूँ। तुम्हारे भांडे को साफ करता हूँ।
   - यहाँ आत्मा की शुद्धि होती है – आत्मा शुद्ध और निर्मल हो जाती है।
4. त्वाडा हिसाब-किताब मेरे हिसाब नाल होएगा, किसी पंडित या एस्ट्रोलॉजर के हिसाब नाल नहीं होएगा।
   - गुरुजी को हमारा ज्योतिषियों के पास जाना बिलकुल पसंद नहीं था।

5. पुट्ठे कर्म करदी है, नेचर के अगेंस्ट जांदी है, तू एनु बंद कर दे। नो हीलिंग। नो रेखी। नो तांत्रिक।

- उल्टा कर्म करती है, प्रकृति के विरुद्ध जाति है, तू ये सब बंद कर दे। कोई हीलिंग नहीं। कोई रेकी नहीं। कोई तांत्रिक नहीं।
- गुरुजी ने अपने आसन पर बैठे हुए इसके बारे में पैंतालीस मिनट तक बात की। एक आंटी पूर्व जीवन प्रतिगमन (पास्ट लाइफ रिग्रेशन) किया करती थीं; एक आंटी टैरो करती थीं। जो संगत गुरुजी से मिली है उन्हें पता है कि गुरुजी आसान पर पाँच मिनट से ज़्यादा किसी से बात नहीं करते थे। बहुत 'टू द पॉइंट' (मुद्दे पर ही) बात करते थे जब वो आसन पर होते थे। बहुत गुस्से में थे और पैंतालीस मिनट तक इस बारे में बोल रहे थे।

6. जो कोई अपनी समस्याएँ लेकर आता है, उसके लिए प्रार्थना मत करो, उसे मेरी तरफ का रास्ता दिखाओ।

- उसको गुरुजी के बारे में बताओ। फिर वो गुरुजी और उसकी यात्रा है। जब कोई अपनी नकारात्मक बात

आपसे करता है वो आपकी सकारात्मकता ले जाएगा और अपनी नकारात्मकता छड जाएगा। हम सब इंसान की जूनि में हैं और किसी के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। सिर्फ भगवान, हमारे गुरुजी ही सबका कल्याण कर सकते हैं। संगत के तौर पर हम बस यही कर सकते हैं कि उन्हें गुरुजी के बारे में बताएँ, उन्हें मंदिर लेकर जाएँ, सत्संग में लेकर जाएँ, गुरुजी की तस्वीर दें, अपना सत्संग शेयर करें।

7. मेरी महिमा जगह-जगह जाकर करो, हर घर में करो।
   - हमें गुरुजी का गुणगान करना चाहिए, अपने सत्संग बताने चाहिए। सत्संग ही हमारा खज़ाना है जो हमें लोगों को बाँटना है।
8. मेरे को अपना बेस्ट फ्रेंड (सबसे अच्छा दोस्त) बना लो।
   - गुरुजी से सीधा संबंध कैसे बनाएँ... गुड मॉर्निंग गुरुजी के साथ, गुड नाइट गुरुजी के साथ, शॉपिंग, लंच, सब कुछ गुरुजी के साथ। जो भी हम प्यार से भगवान को ऑफर करते हैं, वो स्वीकारते हैं। हमें उनकी ओर

सीधे रास्ते से जाना है। हमें अपने जवाब सत्संग और शबद कीर्तन से मिलते हैं।

9. ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी मेरे अंदर से निकले हुए हैं। सारे देवी-देवता मेरे अधीन होते हैं।
   - वे ब्रह्मांड के सबसे ऊँचे भगवान हैं। जब हम गुरुजी को नमस्कार करते हैं तो पूरे ब्रह्मांड में माथा टिकता है, सारे देवी-देवताओं को माथा टिकता है। उनसे ऊपर कोई भगवान, कोई शक्ति नहीं है।
10. भूखे रहन तों त्वानु कदी रब नहीं मिल सकदा।
    - भूखे रहने से तुम्हें कभी रब नहीं मिल सकता।
    - व्रत के बारे में।
11. मन चंगा ते नलके दा पानी वी गंगा।
    - हमें अंदर से स्वयं को साफ करना है। हमें अच्छा इंसान बनना है। अगर किसी का भला नहीं कर सकते तो बुरा भी मत करो। अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय दिव्यता और आध्यात्मिकता के लिए निकालो।
12. जो पाठ करना है, वो अंदर करो।
    - दुनिया को नहीं बताना कि आप पाठ कर रहे हो।

13. मंत्र जाप, ॐ नमः शिवाय शिवजी सदा सहाय, ॐ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय; यह सबसे ऊपर का मंत्र है।
    - इससे मुर्दे भी जीवित हो सकते हैं। रोज़ पाठ किया करो। कहीं पर भी बैठकर पाठ कर सकते हो। गुरुजी ने किसी बंधन में नहीं बाँधा कि सुबह पहले नहाओ, अगरबत्ती जलाओ, ज्योत जलाओ। गुरुजी कहते थे कलयुग में अंदर-अंदर पाठ चलना चाहिए। साथ वाले को भी नहीं पता चलना चाहिए कि आप पाठ कर रहे हो।
14. जिस वेले तू अपने गुरु नूं याद करे, ओइ अमृत वेला है, ओइ सेवा है, ओइ सिमरन है, ओइ तेरा पाठ है।
    - अगर अमृत वेला के लिए नहीं उठ सकते तो दोषी या बुरा न महसूस करें।
15. अपना पाठ खुद करो, किसी भी पंडित से मत करवाओ। वो तो अपना कल्याण करा जाएगा।
16. तेरह बड़ा वदिया नंबर है।

- १३ सबसे भाग्यशाली नंबर है। १३ नंबर की गाड़ियाँ गुरुजी ने खरीदवाईं, १३ नंबर के घर खरीदवाए। बड़ा मंदिर १३ नंबर फार्महाउस पर है, यह एक बड़ा आशीर्वाद है।

17. रब नूं प्यार करो।

 - भगवान से प्यार करो, उससे डरो नहीं।

18. चंगे इंसान बनो, चंगे कपड़े पाओ।

 - अच्छे इंसान बनो। उन्होंने सारे भ्रम हटाए। किसी कर्मकाण्ड में नहीं बाँधा।

19. बड़ा मंदिर मैं संगत वास्ते छड के जा रहा हूँ। इंदे विच इन्नी शक्ति है जो बारह ज्योतिर्लिंगां विच भी नहीं है।

 - इतना बड़ा तीर्थ स्थान है ये। इधर माथा टिकता है तो ब्रह्मांड में माथा टिकता है। यह कैलाश पर्वत है। इस मंदिर में जो आएगा उसका कल्याण है, जो दूर से भी माथा टेकता है, उसका कल्याण है। इतना तप है, इतनी शक्ति है, इतनी सकारात्मक ऊर्जा है, धरती पर स्वर्ग है तो हमारा बड़ा मंदिर है। रुद्राक्ष का पेड़ है, कुटिया है, गुरुजी की समाधि है।

20. ऊपर से गंगा आएगी और इस मंदिर में लाखों की भीड़ लग जाएगी।
   - यह धरती पर स्वर्ग है।
21. मंदिर ज़रूर आया करो। मंदिर माथा टेक्या करो। मैनु याद रखो।
22. मेरी फोटुआं भी गल्लां करन गियां।
   - मेरी तस्वीरें भी बातें करेंगी।
   - आज हम गुरुजी के स्वरूप से बातें कर सकते हैं, उन्हें अपने मन की सारी बातें कह सकते हैं। सारी बातें गुरुजी से करो। लोगों से अपनी समस्याओं के बारे में बात करने से कुछ नहीं मिलेगा। दिल की बातें गुरुजी से करनी हैं।
23. एवरीथिंग इज़ माय चॉइस एंड नथिंग इज़ कोइनसीडंस इन गुरुजी दरबार।
   - गुरुजी के दरबार में सब कुछ उन की पसंद से है और कुछ भी संयोग से नहीं है।
24. फोटो घोल-घोल के पियो, अमृत बन्नूगा।

- तस्वीर को सादे पानी में डुबोकर पियो, वो अमृत बन जाएगा।

25. शिव पुराण पढ़ेया करो।
    - एक अध्याय, या फिर दो पन्ने या फिर केवल दो पंक्तियाँ। जीवन में आपके साथ कुछ गलत नहीं होगा। समय बहुत खराब है।

26. पाठ ही त्वाडे कम्म आएगा, एही त्वाडा खज़ाना है। मैं अपनी संगत नूं कुछ होंण नहीं देवांगा।
    - चौबीसों घंटे (२४/७) महाशिव की शक्ति हमारे साथ है। हमें कोई भी नकारात्मक ऊर्जा छू तक नहीं सकती, कोई भी बुरी शक्ति हम पर प्रभाव नहीं डाल सकती। हम पर काला जादू असर नहीं कर सकता। गुरुजी की आभा बहुत शक्तिशाली है और वे हर पल हमारी रक्षा कर रहे हैं। गुरुजी आपके साथ हैं तो आप जीवन की हर लड़ाई में विजयी होगे। गुरुजी में १०० प्रतिशत विश्वास का मतलब १०० प्रतिशत परिणाम है।

27. अंदर से मुझे प्यार करो, अंदर से कनेक्ट रहो।

28. डायरेक्ट कनेक्शन रखो।

- किसी और को माध्यम मत बनाओ। अगर कोई आपको गुरुजी का संदेश देता है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके पास गुरुजी की शक्ति है। यह गुरुजी की मर्ज़ी है कि वे आपको उस संगत के माध्यम से आशीर्वाद दे रहे हैं – आपको और उस संगत को ब्लेस करने के लिए। सब इंसान की जूनी में हैं। किसी में कोई पावर, कोई शक्ति नहीं है, गुरुजी से सीधा संबंध रखिए।

29. नीवें बनकर रहो।
    - उन्होंने हमें भ्रमों से निकाला। अहंकार से निकालने आए थे। नीवांपन और इंसानियत उन तक पहुँचने की कुंजी है। नीवें बनकर सेवा करो, इंसानियत रखो।
30. संगत के मोती इकट्ठे किए हैं (तुम्हारे लिए)।
    - गुरु परिवार का आदर कीजिए, गुरु परिवार के लिए प्रेम और करुणा रखिए। यह एक परिवार है जिसके मुखिया गुरुजी हैं। संगत नूं प्यार करो, दुनिया नूं प्यार करो। किसी का दिल मत दुखाओ। अच्छे इंसान बनो।
31. लंगर अमृत है – यह अमृत देवी-देवता भी छकते हैं।

- लंगर में गुरुजी का आशीर्वाद होता है जो हमारा शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर इलाज करता है। यह अमृत हमें मिल रहा है, हम बहुत भाग्यशाली हैं कि गुरुजी ने हमें चुना है।

21. गौरी त्यागी आंटी

1. जो गुरु कहते हैं उसको कहते हैं 'येस'।
2. मेरे से टेलिपेथी से बात करो।
3. शाम की चाय के साथ चना खाना चाहिए।
4. केला खाना सुबह को सोना होता है, दोपहर में चाँदी और शाम को ज़हर।
5. शुगर-फ्री नहीं लेनी चाहिए।
6. लंगर दोबारा गर्म नहीं करना चाहिए।
7. जो हफ्ते में एक बार दूध-जलेबी खाता है, उसको कभी कोई बड़ी बीमारी नहीं लगती।
8. शिव पुराण पढ़ेया कर।
9. वहीं रुक जा, इतनी देर से आके कुछ नहीं होता।
   - गुरुजी से मिलने के लिए और उनका स्वागत करने के लिए समय से पहुँचें।
10. मेरा सत्संग करया कर, लंगर खिलाया कर, लोग हील हो जाएँगे।
11. तू जहाज़ भर-भर के सबको यहाँ लेकर आ।
12. वॉक किया कर आधा घंटा।

13. सब कुछ खाने का थोड़ा-थोड़ा।
14. हवन करने से कुछ नहीं होता है।
15. मैं वैष्णो देवी जा रही थी। गुरुजी बोले – फिर यहाँ क्या करने आई है? वहीं जा।
16. गुरुजी-गुरुजी करते हो, गुरुजी बोलते हैं तो सुनते नहीं हो।
17. अभी तेरी पक्की एडमिशन नहीं हुई।
18. मैंने गुरुजी से पूछा – मैं गीता पढ़ूँ?
    - उनका उत्तर था – नहीं।
    - मैं रामायण पढ़ूँ?
    - फिर से उनका उत्तर था – नहीं।
    - अंततः वे बोले शिव पुराण पढ़ा कर।

22. ऋतु सेठ आंटी

1. नथिंग हैप्पंस बाय चांस। सब कुछ पूर्व नियत और पूर्व निर्धारित होता है।
2. परिवार बहुत ज़रूरी होता है।
3. मैं अमीर और गरीब को समान रूप से आशीर्वाद देता हूँ।
4. फ्लो ऑफ एनर्जी इज़ वेरी इम्पोर्टेन्ट।
   - ऊर्जा का प्रवाह बहुत महत्वपूर्ण है।
5. शिवाइज़्म बढ़ेगा।
   - शैव धर्म बढ़ेगा।

23. डॉ. चंद्रकांत पांडव अंकल और स्मिता पांडव आंटी

1. तुम डाक्टर हो, अपना काम करते रहो।

- गुरुजी से मिलने के बाद हमारा जीवन कई मायनों में बदल गया। अंकल बहुत बार गुरुजी से पूछते, "गुरुजी मेरे लिए आपका क्या संदेश है?" गुरुजी बस मुस्कुरा देते। लेकिन एक बार वे बोले, "तुम डाक्टर हो, अपना काम करते रहो।"

2. गुप्त नाम लिया करो, गुप्त दान करो और संगत बढ़ाओ।

- गुरुजी ने समझाया कि गुप्त नाम लेना चाहिए, "ॐ नमः शिवाय शिवजी सदा सहाय"। किसी को पता भी नहीं चले आप पाठ कर रहे हो। गुप्त दान के बारे में वे बोले कि वह ऐसे करना चाहिए कि किसी को पता न चले।
- और उनका मतलब केवल पैसे या चीज़ें दान देने से नहीं था। वे बोले कि ये चीज़ें अगर आपके पास हैं तो इनका दान करना सबसे आसान होता है। वे बोले कि दान संवेदना का, सहारे का और दूसरों की सहायता

करने का भी होना चाहिए। सेवा और समय का दान सबसे बेहतर होता है। अंत में वे बोले, "संगत बढ़ाओ। मेरे पास लोग लेकर आओ, उनके साथ सत्संग करो, उन्हें मेरे साथ जुड़ने में सहायता करो।" हमें दिया गया यह सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश था।

3. एकदम सिंपल सत्संग करना है। ज़्यादा पैसा खर्च नहीं करना। जो है उसी में करना है। सिर्फ चाय प्रसाद और सिंपल लंगर होना चाहिए। अगर आप ज़्यादा लंगर रखना चाहते हैं, रख सकते हैं... मैं एक दाल और एक सब्ज़ी को आशीर्वाद दूँगा।

- जब गुरुजी ने हमसे कहा की वे हमारे घर आएँगे और वहाँ डाक्टरों और अन्य लोगों को आशीर्वाद देंगे, उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और बताया कि उनके लिए चाय प्रसाद कैसे बनाना है और फिर बताया कि सत्संग कैसे करना है; जितना सादे ढंग से हो सके, वैसा कीजिए और कम खर्चे में कीजिए। यह भी एक बहुत महत्त्वपूर्ण संदेश है जो हमें गुरुजी से मिला।

24. पूनम भसीन आंटी

1. मैं इस मंदिर विच रोज़ नए नज़ारे दिखाने हैं। इक दिन आउगा जदों शिवलिंग विचों दूध अपने आप परगट होवेगा।
 - मैंने इस मंदिर में रोज़ नए नज़ारे दिखाने हैं। एक दिन आएगा जब शिवलिंग में से दूध अपने आप प्रकट होएगा।
2. मंदिर विच इन्ना रश हो जावेगा कि इक दिन गेट तक लाइन लग्या करेगी। फिर गुरुजी चाँद विच नज़र आंगे।
3. जिस दे घर मैं चला जावां, उस नूं सारी उम्र पाठ करन दी लोड़ नहीं।
4. मेरे कोल आके मंगया न करो, मैनु सब पता है किस नूं की देणा है, माँग के नास्तिक न बनो। की पता मैं कोई वड्डी चीज़ देनी होवे, ते तुस्सी छोटी मंग के बैठ जाओ।
5. किसी सोंदे हुए नूं जगाना नहीं चाइदा।
 - किसी सोते हुए को जगाना नहीं चाहिए।

6. मैनु मिलण तों बाद सिद्धे अपने घर जाओ, बिचों कित्थे रुकना नहीं। पॉज़िटिव वाइबरेशंस घर लेके जाया करो।
   - मुझे मिलने के बाद सीधे अपने घर जाओ, बीच में कहीं रुकना नहीं। सकारात्मक ऊर्जा घर ले के जाया करो।
7. फाइनेंस दा काम कदे नहीं करना चाइदा है, किसी दी आह लग जांदी है।
8. तीर्थ पदार्थ तो गुरु ते चरणां विच रुलदे हां।
9. कदे भी पौने विच घर तों न चलो, हमेशा घंटा टपा के चलो।
   - कभी भी पौने घंटे के बाद घर से मत चलो, हमेशा घंटा पूरा होने के बाद चलो।
10. रोज़ एक चैप्टर शिव पुराण दा पढ़या करो। ए मैं कलयुग दा उपाय दसरेया हां। त्वानु समझ नहीं आएगी, जदों चौथी वारि पढ़ोगे तां जाके त्वानु उसदा मज़ा आएगा।

25. उषा भाटिया आंटी और परिवार

1. जद मेरे कोल आवो तां ईगो और लॉजिक बाहर छड के आवो।
   - जब मेरे पास आओ तो अहंकार और तर्क छोड़ के आओ।
2. मैं सारे डाक्टर फेल कर दित्ते।
   - जब मेरी बेटी भावना को टाइफौयड हुआ था, गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, मैं सारे डाक्टर फेल कर दित्ते।
3. आण वाले टाइम विच घर घर सत्संग होंगे, देशां विदेशां विच, गिन वि नहीं सकोगे।
   - आने वाले समय में घर-घर सत्संग होंगे, देश-विदेश में, गिन भी नहीं सकोगे।
4. लाइट तों आया वां, लाइट ते चला जाऊँगा। देखते रह जाओगे।
   - लाइट से आया हूं, लाइट में चला जाऊंगा। देखते रह जाओगे।

5. लाइनां लगण गिया दर्शन वी मुश्किल होंगे।
   - लाइनां लगेंगी दर्शन भी मुश्किल होंगे।
6. हल्ले मीडिया विच नहीं आणा, पहले अपने लोकां दा कल्याण कर लवां।
7. पहला स्थान गुरु का, दूसरा संगत का, फिर भगवान का।
8. मैं बहुत कठिन यात्रा पर आया हूँ, लोगों को वहमों से निकालने पर लोग हैं कि वहमों में फंसते चले जा रहे हैं।
9. तुस्सी मैनु चंद्रमा विच वेखोगे।
   - तुम मुझे चंद्रमा में देखोगे।
10. गुरुजी से आज्ञा लेकर ही नयी संगत ले जा सकते थे। कुछ संगत के लिए गुरुजी कहते, "ऐ हुण नहीं आएगा, ऐ बाद विच आएगा।"
   - ये अभी नहीं आएगा, ये बाद में आएगा।
11. एक दिन गुरुजी बोले, अज्ज मैं चौसठ लख बन्देयां दा कल्याण कित्ता हैगा।
   - आज मैंने चौसठ लाख बंदों का कल्याण किया है।

12. पैंक्रियास दा इलाज रब दे हथ विच हैगा।
   - अग्न्याशय (पैंक्रियास) का इलाज रब के हाथ में है।
13. मैं अपनी संगत नूं घर तक छड के आंदा वां।
14. कभी कुछ मत माँगो – मंगो नहीं, मन्नो।
15. पाठ करेया करो।
16. नो ईगो, नो लॉजिक।
17. अपने-आप को कुछ मत समझो।
18. वी आर नथिंग, जस्ट कीड़े।
19. भीड़ नहीं बनना।
20. गुरु साहिबजी ने मंत्र जाप की दूसरी पंक्ति के लिए अपनी स्वीकृति दी।
    "ॐ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय।"
21. संगत जोड़ो।
22. तबियत खराब हो तो खुद को देखो, मंदिर मत जाओ, फर्स्ट यौर शरीर।
   - पहले अपना शरीर देखो।

26. अनमोल कुमार अंकल

1. स्वर्ग-नर्क सब यहीं है। सब अपने कर्म भुगतते हैं। जो सुखी है वो स्वर्ग भोग रहा है, जो बीमार है या दुःखी है, वो नर्क भोग रहा है।
2. मैं यहाँ किसी को संत बनाने, किसी बंदिशों में बाँधने नहीं आया, न ही किसी का खाना-पीना बंद करवाने आया हूँ। कर्म अच्छे रखो, किसी का दिल मत दुखाओ, रब को हमेशा याद रखो।
3. वहम में मत पड़ो। अगर किसी पंडित या तांत्रिक ने तुम्हें एक बार गलत राह डाल दिया तो सारी ज़िन्दगी नहीं निकल पाओगे।
4. ये कलयुग है, यहाँ पर पाठ करने से रब मिल जाता है। रब को पाने के लिए पुट्ठा नहीं लटकना पड़ता है।

27. बैम्बी आंटी

1. मुझे यह नाम पसंद है, "गुरुजी महाराज"।
2. सिम्पलिसिटी इन लाइफ इज़ द की टू हैप्पीनेस।
   - जीवन में सादगी ही खुशी की कुंजी है।
3. एक शाम गुरुजी ने मेरे पति और मुझे प्रबुद्ध किया के जीवन क्या है और उसे कैसे जीना चाहिए। वे उत्तम अंग्रेजी में पैंतालीस मिनट तक बोले और हमने आश्चर्य से सुना।
   - उसका सार यह था :-

   "टू एन्जॉय एवरीथिंग इन लाइफ।
   टू लर्न एंड ग्रो विथ सॉरो एंड नॉट लेट इट डिस्ट्रॉय यू; दैट आइ विल ऑल्वेज़ बी देयर बाय यौर साइड टू टेक केयर ऑफ एवरीथिंग।"
   - अर्थात :-

   "जीवन में हर चीज़ का आनंद लेना है।
   दुःख के साथ सीखना और बढ़ना है और इसे आपको नष्ट नहीं करने देना;

मैं हर चीज का ख्याल रखने के लिए हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा।"

- यह कथन, सार है हमारे प्यारे गुरुजी महाराज का और यह निर्देश हैं, जिनका पालन उनकी संगत को करना चाहिए।

4. जद तुस्सी मेरे कोल आंदे हो, तुस्सी सारे गंदे घड़े वांगर होंदे हो। फिर मैं त्वानु पहले अंदरों साफ करदा हां, फिर उत्तो चमकांदा हां।

   - जब तुम मेरे पास आते हो, गंदे घड़े की तरह होते हो। पहले मैं तुम्हें अंदर से साफ करता हूँ और फिर बाहर से चमकाता हूँ। अगर मैं सतह (मन या शरीर) साफ करूँगा तो अंदरूनी मैल रह जाएगी। मैं तुम्हें पहले अंदर से साफ करता हूँ ताकि तुम बाहर से चमको।

5. गुरुजी बोले कि भगवान ने इंसान को पाँच चोर दिए हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह ते अहंकार जिनसे इंसान के कर्म बनते हैं। गुरुजी हमें उनसे मुक्त कराते हैं।

6. कम्म करन दे टाइम, कपड़े नूं वट नइयो पैणा चाइदा, न गंदा होना चाइदा।

- काम करते समय कपड़े ना ही गंदे होना चाहिए, ना ही मुचड़े जाने चाहिए। गुरुजी अक्सर कहते थे, "कमल को देखो जो कीचड़ से निकलता है और इतना शुद्ध रहता है कि उसे भगवान को चढ़ाया जाता है।" उसी प्रकार हमारे आस-पास गंदगी होने के बावजूद हमें निर्मल रहना है।

7. मैं भी ब्रह्मांड के नियमों से बंधा हुआ हूँ। उसके कर्म मेरे आशीर्वाद में बाधा बने हुए हैं क्योंकि उसने पिछले जन्म में एक महापुरुष को अपशब्द बोले थे इसलिए मैं उसकी मदद न करने के लिए बाध्य हूँ।

- एक बार एक छोटी बच्ची, करीब 7 साल की, अपनी माँ के साथ पहली बार गुरुजी के यहाँ आई। उसे सफ़ेद दाग (विटिलिगो), एक त्वचा संबंधी समस्या थी। हमें उसके लिए सुहानुभूति महसूस हुई और हमें विश्वास था कि गुरुजी इतने छोटे बच्चे को ज़रूर ब्लेस करेंगे। हमारे मन में यही बात चल रही थी, जब गुरुजी ने हमें बुलाया और फिर हमें समझाया कि वे उस बच्ची को क्यों ठीक नहीं करेंगे।

8. ईश्वर की सार्वभौम इच्छा के बाहर कुछ नहीं होता है। जब हम भगवान के साथ होते हैं, हम अपने जीवन की योजना स्वयं बनाते हैं और हम तय करते हैं कि आने वाले जीवनकाल में कौन सा कर्म-ऋण समाप्त करेंगे। उदाहरण के तौर पर, हम तय करते हैं कि हम किससे शादी करेंगे, किसके साथ काम करेंगे, किसके कर्मिक-ऋण हम छोड़ देंगे, इत्यादि। वह सब पहले से लिखा हुआ है।

- अगला प्रश्न था के जब सब कुछ पहले से लिखा हुआ होता है तो हमारे जीवन में गुरु और प्रार्थना की क्या भूमिका है?

9. (गुरुजी हँसे और बोले) इंसान को अपने जीवन में केवल तीन अवसर मिलते हैं अपने कर्म सुधारने के लिए और जब भी वो समय आए यह एक निस्वार्थ निर्णय होना चाहिए। जब वह निर्णय लेने का समय आएगा, उस व्यक्ति को किसी से मदद नहीं मिलेगी। उसे पूरी तरह से स्वयं निर्णय लेना होगा।

10. जब मेरे पास एक अनुयायी आता है तो पहले साल यह उसका निर्णय होता है कि वह मुझे स्वीकारे या छोड़ दे। जब वह मुझे गुरु के रूप में स्वीकार लेता है, तब वह सदा के लिए मेरा हो जाता है, चाहे वह दुनिया का सबसे बुरा व्यक्ति हो। साथ ही, मैं भी निर्णय लेता हूँ। पहले मैं उस अनुयायी की ईश्वर के प्रति प्रेम और निष्ठा देखता हूँ, फिर उसके पिछले कर्म देखता हूँ और फिर मैं उसकी मेरे प्रति निष्ठा देखता हूँ। अगर वह सचमुच मेरे प्रति समर्पित है, मैं उसे स्वीकारता हूँ और उसके कर्म ले लेता हूँ। मैं उसका सारा बुरा समय (जो एक भक्त के भाग्य में नियत होता है) एक छोटी समय सीमा में देकर उसके कर्म खत्म करता हूँ। मैं उसके सारे बुरे कर्म नहीं ले लेता क्योंकि हम यहाँ सीखने आए हैं इसलिए तलवार की धार को मैं सुई की चुभन में बदल देता हूँ।

11. मानव रोग पिछले कर्मों का परिणाम होते हैं। मुझे सबसे पहले रोग की जड़ को मिटाना होता है जो सदैव शरीर के भीतर गहराई में होता है। अगर मैं पहले

समस्या की सतह का इलाज करूँगा, तो वह समस्या बार-बार आएगी। इसलिए मुझे पहले 'ए' का उपचार करना होता है, न कि समस्या के 'एन' या 'ज़ैड' का।

12. गुरुजी ने कई बार दोहराया कि प्रार्थना बहुत छोटी उम्र से ही सिखाई जानी चाहिए। मूल बातें छोटी-छोटी मात्रा में सिखाई जानी चाहिए ताकि बच्चे के आने वाले जन्मों में भी प्रार्थना की नींव रहे।

13. मैं भाई, बहन, पति, पत्नी को समान प्रेम नहीं करता बल्कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्यार करता हूँ; क्योंकि उनकी मेरे प्रति भक्ति और निष्ठा अलग-अलग स्तर की होगी। कोई भी भाई-बहन या पति-पत्नी मुझे समान रूप से प्यार नहीं करते न ही मेरे प्रति उनकी निष्ठा समान होती है, अतः मेरी कृपा भी सब पर अलग-अलग होती है। मेरे प्रति आपकी बिना-शर्त भक्ति की गहराई ही आपके प्रति मेरे शर्तरहित प्यार में परिणत होती है।

14. जब भी आप कोई पवित्र पुस्तक पढ़ते हैं, माला करते हैं या ध्यान में बैठते हैं, वह एक स्तर से दूसरे स्तर पर

जाने जैसा होता है। गुरुजी ने हमें बताया कि हम जितनी बार पवित्र पुस्तक पढ़ते हैं, हमें कुछ आध्यात्मिक प्राप्त होता है, जिसका निर्णय ईश्वर लेते हैं। गुरुजी ने इन्हें उपहार कहा है, ऐसे उपहार जो ऊर्जा से भरे हुए होते हैं, जिन्हें हमारे शरीर को समायोजित करना पड़ता है।

15. गुरुजी बोले, "थ्रू मी आर ऑल एंड ऑल आर इन मी", और ऐसे उनके भक्तों की सदैव रक्षा होती है।
  - मेरे ही माध्यम से सब है और सब मुझमें ही हैं।
16. भगवान को नियंत्रित नहीं किया जा सकता, उनकी पूजा की जाती है। हर इंसान गुरु बनना चाहता है लेकिन पहले सच्चा भक्त बनना होता है – नो इफ, नो बट एंड नो ईगो।
  - कोई अगर-मगर नहीं, कोई किंतु-परंतु नहीं और कोई अहंकार नहीं।
  - अपनी गुरुआई शुरू करने से पहले, गुरुजी ने मुंबई में एक बहुत गुस्सैल महिला के घर में डेढ़ साल नौकर

बनकर काम किया। अपने अहंकार को पूरी तरह से खत्म करने के लिए उन्होंने ऐसा किया।

17. तुम्हें मुझसे इतना प्रेम होना चाहिए कि लिपस्टिक लगाते समय भी आईने में मैं दिखाई दूँ।

18. हमारे प्यारे गुरुजी ने बहुत कोमलता से बताया, मुझे पता है मुझे एक भक्त कब और कहाँ याद करता है। वह किस जगह मुझे याद कर रहा है उससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि तुम्हारी आत्मा मुझे पूरी पवित्रता से याद करती है।

- यह गुरुजी महाराज की अपने शिष्यों की सभी मूढ़ताओं को स्वीकार करने की गहराई थी।

19. फिर वे बोले, "सुबह तीन बजे प्रार्थना करने का सबसे अच्छा समय होता है। नहाने की ज़रूरत नहीं। बस हाथ-मुँह धो लो, कुल्ला कर लो, बिस्तर के बगल में एक चटाई बिछा लो और उसपर बैठ जाओ। अपने हाथों से चटाई के चारों ओर फर्श पर एक काल्पनिक गोला बनाओ और प्रबुद्ध करने के लिए केवल मुझे आमंत्रित करो। तुम सुबह तीन बजे अगर केवल पाँच

मिनट के लिए भी बैठोगे, यह उस दिन की सबसे प्रभावी और शक्तिशाली प्रार्थना होगी। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है, प्रार्थना का मूल्य घटता जाता है। तीन बजे हीरे का मूल्य होता है, चार बजे सोने का और पाँच बजे चाँदी का।

20. दिन हो या रात हो, मैनु याद करो।

- अगर आप चाहते हैं कि गुरुजी हर समय आपके साथ हों, तो आपको उनसे प्रार्थना करनी चाहिए, उन्हें अपनी ओर मानसिक स्तर पर खींचिये और फिर वे सदा आपके साथ रहेंगे।

21. मैं सबके लिए प्रार्थना करता हूँ लेकिन स्वयं के लिए नहीं कर सकता। मेरी संगत को मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

22. घर विच घी दी ज्योत हमेशा जलनी चाइदि है।

- गुरुजी बोले कि घर में घी की ज्योत जलानी चाहिए, अगर हमेशा नहीं तो दिन में दो बार। ज्योत घी की होनी चाहिए क्योंकि उसकी सुगंध बहुत शुभ होती है।

23. साहिब ने बताया कि सुबह उठकर ईश्वर का शुक्राना करना चाहिए कि रात ठीक निकली और दिन भी अच्छा निकले। शाम को ईश्वर का शुक्राना करें कि उनके आशीर्वाद से दिन ठीक निकला और आप घर वापस पहुँचे। फिर, रात ठीक निकले, उसके लिए आशीर्वाद लें।
24. भोजन करने से पहले धरती माँ से प्रार्थना कीजिए क्योंकि हमें जो भी चाहिए उनसे मिलता है – साँस लेने के लिए वायु, भोजन के लिए खाना और रहने के लिए ज़मीन।
25. मैं त्वाडी खुशी के लिए खांदा हां। महापुरुष को खाने की आवश्यकता नहीं होती। हर संगत जो प्रार्थना करके खाती है, उसका पहला निवाला मुझे आता है।
26. जब तक मैं न कहूँ, 'महा मृत्युंजय' मंत्र बिलकुल न करें।
27. गुप्त पाठ और गुप्त दान – आपके पति या पत्नी तक को पता नहीं चलना चाहिए कि आप पाठ कर रहे हैं।

- गुरुजी बोले कि कलयुग में हमारी जीभ एक आग की तरह है जो हमारे आशीर्वादों को खा जाती है। जब आप किसी को बताते हैं कि आपने कितना पाठ किया है या दान दिया है, आप के अंदर अहंकार और अभिमान आ जाता है और किए हुए पाठ और दान का फल शून्य हो जाता है।
- माला पर गिनती करके जाप करना उन्हें बिलकुल पसंद नहीं है। अगर बिना गिनती किए आप माला पर पाठ कर सकते हैं तो उनके लिए वह स्वीकार्य है क्योंकि गिनती एक मानवीय आवश्यकता है। गुरुजी हमारी प्रार्थना की गहराई और मनोभाव देखते हैं।

28. तुस्सी किताबां (ग्रंथ) सिर्फ पढ़दे हो, पर अगर तुस्सी ध्यान नाल पढ़ो ते उन्हां दे राज़ खुलां।
    - गुरुजी बोले कि हम ग्रंथ सिर्फ पढ़ने के लिए पढ़ते हैं लेकिन अगर हम श्रद्धा से पढ़ें तो हमें कई रहस्य प्रकट हो जाएँगे।
29. ध्यान प्रार्थना का सर्वोच्च रूप है। ध्यान के द्वारा ही आप मेरा दिव्य रूप देख सकते हैं। अन्य सभी प्रकार

की प्रार्थनाएँ, जैसे मंदिर, किताबें, माला जपना, ध्यान की ओर ले जाने वाली सीढ़ियाँ हैं। एक बार ध्यान लगाना आ जाए, फिर और कुछ करने की आवश्यकता नहीं। आपके लिए निर्दिष्ट मंत्र आपके अस्तित्व को तब तक भरता रहेगा जब तक आप इसके प्रति समर्पित नहीं हो जाते। ध्यान केवल शरीर के ऊपर मन की विजय के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है, और हम सब मन के ऊपर शरीर की स्थिति में हैं।

30. मेरे अंदर दी लाइट देख, मेरे अंदर जा।

- मुझे यह बात समझ नहीं आई। उनकी संगत में बैठे हुए मैंने उनसे प्रार्थना की, "आपके शब्द जटिल पहेलियों की तरह हैं और मेरी समझ एक बच्चे की तरह है। मेरा मार्गदर्शन कीजिए कि मैं वो करूँ जो आप चाहते हो।" वहाँ बैठे हुए मैंने सपना देखा के मैं उनके शरीर के अंदर एक पंख के रूप में उनकी सुंदर सुनहरी चाँदी की रोशनी में तैरते हुए, कीर्तन में झूम रही हूं। वह ध्यान का एक और रूप बन गया।

31. हमें सफेद प्रकाश सिखाया जाता है, के हमें उसे पाने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन गुरुजी हँसते हुए कहते थे "पहले हरे और लाल प्रकाश की चमक आती है"। उन्होंने समझया कि वह बिखरा हुआ प्रकाश नहीं होता है बल्कि फ्लैश बल्ब होते हैं और वह भी बहुत सारे।

32. मंगो नहीं – मन्नो। मुझसे कुछ मत माँगो – मुझे स्वयं सब कुछ देने दो। ऐसा नहीं है कि तुम जो माँगोगे वो मैं तुम्हें नहीं दूँगा, बल्कि इसलिए कि तुम्हें माँगना नहीं आता। मुझ पर बिना शर्त भरोसा करो।

33. गुरुआं कोलों मंगदे नहीं, मनदे हैं। मैं एक निश्चित समय पर आशीर्वाद देता हूँ, और अगर उस समय वह मुझसे कुछ माँग रहे होते हैं तो मुझे वह देना पड़ जाता है। अगर उस समय उस आंटी ने रक्त दान करने के लिए कोई व्यक्ति नहीं माँगा होता और उसकी जगह अपने पति के लिए आशीर्वाद माँगा होता तो स्थिति कुछ और होती। तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे लिए सही क्या है क्योंकि तुम्हें नहीं पता कि भविष्य में तुम्हारे

साथ क्या होने वाले है। फिर तुम कैसे कुछ माँग सकते हो? जब तुम माँगते हो, तुम्हारी माँग बहुत छोटी होती है और थोड़े आशीर्वाद में ही झोली छोटी पड़ जाति है। लेकिन अगर तुम सब मुझ पर छोड़ दो तो मैं तब तक आशीर्वाद देता हूं जब तक तुम मेरी कृपा और दिव्य प्रकाश में डूब नहीं जाते।

- एक बार एक संगत अस्पताल में भर्ती थी। उन्हें रक्त दान के लिए व्यक्तियों की आवश्यकता थी और पहले कुछ दिन उनकी आंटी (गुरुजी हर महिला-संगत को आंटी बुलाते थे), उनकी पत्नी को रक्त दान के लिए व्यक्ति आसानी से मिल गए लेकिन एक दिन उन्हें कोई नहीं मिला। उन्होंने गुरु साहिब से प्रार्थना की, "कृपया करके रक्त दान के लिए किसी को भेजिए।" वह अस्पताल के बाहर खड़ी रो रही थीं और उसी समय वहाँ से दो दूध बेचने वाले गुज़र रहे थे। उन्होंने इस आंटी से पूछा कि उन्हें क्या परेशानी थी और वे रक्त दान के लिए तैयार हो गए। उस शाम हम गुरुजी

के साथ बैठे हुए थे जब वह आंटी गुरुजी का शुक्राना करने आईं। अगले दिन अंकल का निधन हो गया।

34. हर रोज़, हर क्षण लोग भगवान से कुछ न कुछ माँग रहे होते हैं और उसमें से अधिकतर माँगें भगवान पूरी भी कर देते हैं। लेकिन भगवान अगर एक भी कीमती चीज़ वापस ले लेते हैं तो आप सब उनसे झगड़ते हैं और उनका नाम लेना छोड़ देते हैं।

35. सब में मैं और मेरे में सब। मुझे हर बात में याद करो और मैं हर बात में नज़र आऊँगा।

36. शरीर से प्राकृतिक सुगंध उत्पन्न करने के लिए मेरी संगत को कभी वैसे पाठ नहीं करना पड़ेगा जैसे मैंने किया है। वह मेरी तरफ से उनके लिए उपहार होगा।

37. सैर करना सब से उत्तम व्यायाम होता है; महिलाओं को जिम नहीं जाना चाहिए क्योंकि इससे प्रजनन अंगों (रिप्रोडक्टिव ऑर्गन्स) पर असर पड़ता है।

38. पाठ करके एकदम मत उठिये बल्कि पहले अपने घुटनों को ऊपर लायें और उन्हें हल्के से गले लगाएँ ताकि रक्त संचालन शुरू हो।

39. शरीर के लिए मालिश बहुत ज़रूरी होती है और हफ्ते में एक बार ज़रूर करवानी चाहिए।
40. स्नान साबुन के बजाय प्राकृतिक चीज़ों के साथ ज़्यादा करना चाहिए।
41. गुरुजी बोले कि भोजन हल्का, सादा और बहुत अधिक मात्रा में नहीं करना चाहिए।
42. जब हम शुरुआत में गुरुजी से मिले तो मैंने उनसे पूछा, "आप हमें मांसाहारी खाना क्यों खाने देते हैं", जिस पर उन्होंने मुझसे पूछा, "अगर मैं तुम्हें आज वो खाने से मनाकर दूँ तो क्या तुम खाना बंद कर दोगे"? और मैंने उत्तर दिया, "नहीं गुरुजी"।

    वे बोले, "कलयुग में पहले गुरु को अपनेआप को साबित करना पड़ता है। जब मैं अपनेआप को साबित कर देता हूँ तब तुम मेरी सुनते हो और सही समय आने पर मैं तुम्हारा मांसाहारी खाना बंद करवा दूँगा।"
43. मेरी फोटो त्वाडे नाल गल्लां करंगी। (मेरी तसवीरें तुमसे बातें करेंगी।)

- गुरु साहिब और उनकी संगत के बीच रिश्ता एक 'वायरलेस फोन कनेक्शन' (बिना तार के फ़ोन कनेक्शन) के जैसा होता है। आप दुनिया में चाहे कहीं भी हों लेकिन जिस क्षण आप मन में गुरुजी से जुड़ जाते हो, उन्हें पता चल जाता है।

44. मुझे सुनने के लिए अपनेआप को बाहर छोड़कर, तुम्हे अपने मन के भीतर जाना होगा, मैं अपने सभी भक्तों के अंदर ही हूँ।

- यह एक-तरफा कनेक्शन नहीं है; अगर गुरुजी आपको सुन सकते हैं तो आप भी उन्हें ज़रूर सुन पाएँगे। वे बोले कि उनके सच्चे भक्त अपने अंदर उन्हें सुन पाएँगे। लेकिन इसके भी कुछ नियम होते हैं; वे बोले कि बायें कान में जो सुनाई दे, उसे नहीं सुनना है, लेकिन दाहिना कान आपका मार्गदर्शन करेगा और केंद्र के भीतर मैं होऊँगा। गुरुजी बोले, "पहले कोई गल्लां नहीं करदे सी, मन तों गल्लां करदे सी", यानि पुराने ज़माने में लोग टेलिपथी से ही बात करते थे न कि बोलकर।

- वे बोले कि यह बात करने का शुद्धतम रूप होता है और आने वाले सालों में उनकी सच्ची संगत एक दूसरे से टेलिपथी द्वारा बात कर पाएँगे। गुरु साहिब ने अपनी संगत के लिए ऐसे मानक (स्टैंडर्ड) निर्धारित किए हैं।

45. ईश्वर को घी की सुगंध बहुत भाती है और अगरबत्ती और धूप की सुगंध परमात्मा को आकर्षित करती है। प्रार्थना के समय वह इंसान की अंतरात्मा को ऊपर उठाती है और हल्का महसूस करवाती है।

46. आरती के लिए उन्होंने पीतल की थाली का उपयोग करने के लिए कहा। गुरुजी को पीतल बहुत पसंद था।

- मुझे आरती की थाली सेट करना सिखाने के लिए एक बार उन्होंने बद्दन आंटी को मंदिर भेजा।
- थाली पर केसर और पानी की बूँदों से ॐ, एक ओंकार, जय गुरुजी और स्वास्तिक चिन्ह बनाना चाहिए।
- घी का दिया सीधी बाती के साथ, मौली, टिक्का जो केसर, कच्चे चावल और पानी की कुछ बूँदें से बना हो, मिठाई के पाँच टुकड़े, धूप।

- पहले हम गुरुजी को मौली बाँधते, टिक्का लगाते और फिर आरती करते - शिवजी की आरती।

47. लोटा चमकता हुआ और बिना किसी डेंट के होना चाहिए।

48. लोटा आपे आप साफ करना है, नौकरां नूं नहीं देना।

- वे बोले कि अगर मैं तुम्हारी समस्याओं के लिए इसे ब्लेस करने के लिए अपनी ऊर्जा खर्च कर सकता हूँ तो तुम भी इसे स्वयं साफ़ करने में अपना समय खर्च सकते हो।

49. लोटा या ते राख नाल साफ करो, या नींबू ते नमक नाल। जद तुस्सी अपने-आप साफ करदे हो तुस्सी मेरा नाम लेंदे हो, मैनु याद करदे हो, उस पल विच त्वाडे कोल आके त्वानु फिर से ब्लेस कर जांदा हां।

- लोटा या तो राख से साफ करो, या नींबू और नमक के साथ। जब तुम अपने-आप साफ करते हो, तुम मेरा नाम लेते हो और मुझे याद करते हो। उस पल मैं तुम्हारे पास आके तुम्हें फिर से आशीर्वाद देता हूं।

- गुरुजी हाथ में लोटा पकड़कर उसे ब्लेस करते थे। फिर वे हमें बताते कि सुबह उठकर सबसे पहले उसका आधा पानी पीना है और बाकी पानी अपने ऊपर डालकर स्नान करना है।

50. सत्संग आपकी दवाई है और बार-बार एक ही सत्संग सुनकर आपको आशीर्वाद की आवश्यक खुराक मिलती है। इसलिए सत्संग धैर्यपूर्वक सुनें क्योंकि आपको उससे फायदा होगा। यह दवाई – सत्संग – अपने मन में नहीं रखने बल्कि सबके साथ साझा करने हैं।

- सत्संग का मतलब, सच्चा साथ। सच्चा यानि कि गुरु, और साथ मतलब संगत। एक सभा जिसमें हम परमात्मा पर चिंतन करते हैं, परमात्मा पर विचार करते हैं, और उस सत्य पर विचार करते हैं जो हमने अनुभव किया है। यह एक कक्षा की तरह होती है जहाँ हमें सिखाया जाता है, हमें ज्ञान प्राप्त होता है और संदेश मिलते हैं, जो केवल हमारे लिए नहीं होते बल्कि सही समय आने पर औरों तक पहुँचाने होते हैं।

51. सारी फैमिली नूं लेकर आओ, तद ही फुल ब्लेसिंग्स मिलदियां ने।

- गुरुजी ने यह बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि सत्संग में सारे परिवार को शामिल होना चाहिए, न कि केवल एक सदस्य को; उन लोगों को छोड़कर जिन्हें उन्होंने स्वयं अलग-अलग दिनों पर आने की अनुमति दी थी। उन्होंने निर्दिष्ट किया कि उनके सत्संग में पूरे परिवार के आने से पूरा आशीर्वाद प्राप्त होता है।

52. मैं लंगर द्वारा आशीर्वाद देता हूँ और उसे दवाई समझकर ग्रहन करना चाहिए और बर्बाद नहीं करना चाहिए।

- लंगर हमेशा सादा होना चाहिए; एक दाल, एक सब्ज़ी, रोटी, आचार या रायता और मीठा। प्याज़ और लहसुन पर पाबंदी नहीं है। केवल एक नियम था कि मिर्ची तेज़ होनी चाहिए और मीठा अत्यधिक मात्रा में होना चाहिए।

53. मेरे नज़ारे देख।

- गुरुजी कहते थे कि अगर मैं समय पर आकर आपके लिए बैठ सकता हूँ तो आप भी समय पर आकर मेरे लिए बैठ सकते हो। दूसरों की तरफ मत देखो कि वे क्या कर रहे हैं या उन्होंने क्या पहना है। बल्कि मुझपर ध्यान केंद्रित करो।

54. जब आप मुझसे मिलने आते हो, स्नान करके और बेहतरीन कपड़े पहनकर आओ, जैसे मैं स्नान करके और तैयार होकर आपके लिए आता हूँ क्योंकि सत्संग ऐसी जगह है जहाँ हम प्रार्थना करते हैं।

55. अकल और रफ़ल बाहर छड के आओ।

- अपने किन्तु-परन्तु और अहंकार अपने जूतों के साथ बाहर छोड़ कर आओ।

56. गुरु दा काम होंदा है परिवार नू जोड़ना ।

- गुरु का काम होता है परिवार के सदस्यों को जोड़ना।
- यह विस्तारित परिवारों के संदर्भ में था।

57. पॉसिटिव सोचो। पॉसिटिव करो। बाकी मेरे ते छड्डो।
- सकारात्मक सोचो। सकारात्मक करो। बाकी मेरे पे छोड़ दो।

58. गुरु सब दा है, मैं सिर्फ तेरा ही नहीं।
- गुरु सब का है, मैं सिर्फ तेरा ही नहीं हूं।

28. नीतू भल्ला आंटी

1. मैं किदरे नहीं गया। जेड़े लोकी समझदे ने मैं चला गया, ओनानु कह दे मैं ऐथे ही हां। और मैं सब कुछ देख रहया हां।
 - मैं कहीं नहीं गया। जो लोग समझते हैं कि मैं चला गया, उन्हें कह दे के मैं यहीं हूं। और मैं सब कुछ देख रहा हूँ।
2. बुरे करमां नूं छोड़ो ते अच्छे कर्म करो। अगर त्वाडे नाल कोई बुरा करता है तो ओदे कर्म ने, तुस्सी अच्छे कर्म करो।
 - बुरे करम छोड़ो और अच्छे करम करो। अगर तुम्हारे साथ कोई बुरा करता है तो उसके करम है, तुम अच्छे करम करो।
3. पुरानी नयी संगत की होंदी है। मेरे वास्ते सब इको जिये हैं। अपने भाव चंगे रखो।
 - पुरानी नई संगत क्या होती है। मेरे लिए सब एक जैसे हैं। अपने भाव अच्छे रखो।

4. मैं हर सत्संग में आणा। जो वी मैनु प्रेम ते भाव नाल बुलावेगा, मैं आवांगा।
 - मैं हर सत्संग में आता हूं। जो भी मुझे प्रेम और भाव से बुलाएगा, मैं आऊंगा।
5. लोकी आजकल फ्रेंड्स दे घर जांदे ने... सत्संग वास्ते, गुरु वास्ते नहीं जांदे। मैं हर सत्संग ते ब्लेसिंग्स देंदा हां, लेण वाले तां बनो।
 - लोग आज कल दोस्तों के घर जाते हैं... सत्संग के लिए, गुरु के लिए नहीं। मैं हर सत्संग में आशीर्वाद देता हूं, लेने वाले तो बनो।
6. हर संगत दे कोल सत्संग है। लोकी कहंदे ने ओ सत्संग करेगा, अस्सी सुनांnगे। बाकियां, या नयी संगत दा सुणन दी लोड़ नहीं है। ऐ गलत है। किस सत्संग विच फायदा, की भला है, त्वानु नहीं पता। हर सत्संग सुनो।
 - हर संगत के पास सत्संग है। लोग कहते हैं वो सत्संग करेगा, हम सुनेंगे। बाक़ियों का, या नई संगत का सुनने की ज़रूरत नहीं है। ये गलत है। किस सत्संग में

फ़ायदा है, क्या भला है, तुम्हें नहीं पता। हर सत्संग सुनो।

7. मेरे नाम ते झूठ नहीं बोलो। अगर कोई मेरा मैसेज दे रहया है, तुस्सी मन्नो, ते अगर देंण वाला झूठ बोल रहया है तां ओदे बुरे कर्म ने। त्वाडा भला ही है।

- मेरे नाम पर झूठ नहीं बोलो। अगर कोई मेरा मैसेज दे रहा है, तुम मानलो। अगर देने वाला झूठ बोल रहा है तो उसके बुरे करम हैं। तुम्हारा भला ही है।

29. जेठरा परिवार

1. नो ए.बी.सी. (No ABC)– नो अब्युसिंग, नो ब्लेमिंग, नो कर्सिंग।
   - दुर्व्यवहार न करें, दोष न दें, अपशब्द न बोलें।
2. निंदा और चुगली मत करो – ये शुभ कर्मों को खा जाते हैं।
3. गुप्त सेवा, गुप्त दान।
4. निष्काम सेवा करो।
5. तोड़ो नहीं, जोड़ो।
   - रिश्तों के संबंध में।
6. पति अपनी पत्नी की सेवा करे और पत्नी अपने पति की सेवा करे; दोनों मिलकर बच्चों का ख्याल रखें, बच्चों के साथ मित्र बनकर रहें।
7. पहले घर के बड़ों और बच्चों का ख्याल रखो, अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी करके फिर मंदिर या सत्संग में जाओ।
8. हर वेले मैंनू याद रखो।
   - हर समय मुझे याद रखो।

9. गुरु नू इंतज़ार नहीं कराईदे हुँदे।
   - गुरु को इंतजार नहीं करवाते।
10. मंदिर आते हो तो अपने गुरु के लिए आओ। रास्ते में काम करते हुए आना और जाना नहीं – ब्लेस्सिंगज ट्रान्सफर हो जाती हैं।
   - आशीर्वाद स्थानांतरित हो जाते हैं।
11. मंदिर और सत्संग में, नो अटेंडिंग टू फ़ोन कॉल्स।
   - मंदिर और सत्संग में फ़ोन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए - ब्लेस्सिंगज ट्रान्सफर हो जाती हैं।
   - आशीर्वाद स्थानांतरित हो जाते हैं।
12. प्रसाद – एथे खाओ ता दवाई है, घर जाकर खाओ ता मिठाई है।
   - यहाँ खाओ तो दवाई है, घर जाकर खाओ तो मिठाई है।
13. एथे राम भी आंदा है ते रावन भी आंदा है।
   - यहाँ राम भी आता है और रावन भी आता है।
14. एथे कोई प्रवचन नहीं, थ्यूरी नहीं; एथे सब प्रैक्टिकल है।

- यहाँ कोई प्रवचन नहीं, सिद्धांत नहीं; यहाँ सब वास्तविक है।

15. ध्यान विच बैठो, सिमरन विच ही कल्याण है।
 - ध्यान में बैठो, सिमरन में ही कल्याण है।
16. माँ बाप की सेवा करो।
17. जिन्देयाँ दी सेवा करो।
 - जिन्दा लोगों की सेवा करो, उनके जाने के बाद श्राद्ध मत करो आत्माएँ अशांत होती हैं।
18. किसी की बरसी नहीं मनानी चाहिए।
19. जो चला गया उसे याद करके रोना नहीं चाहिए – वो सोल्स डिस्टर्ब होती हैं।
 - वो आत्माएँ अशांत होती हैं।
20. जो चले गए हैं, उनकी फोटो घर में नहीं लगानी चाहिए।
21. एथे सत्संग में नो डील्ज़, नो फ्रेंडशिप, नो बिसनेस, नो सोशलाइज़िंग।
 - यहाँ (सत्संग में) कोई लेन-देन नहीं, मित्रता नहीं, व्यापार नहीं, मेल-जोल नहीं।

22. सत्संग में आते और जाते समय, नज़रें नीची रखो।
23. टेलिफ़ोन पर छह मिन्टों से ज्यादा बात नहीं करनी चाहिए।
24. फ़ोन पर किसी का दुखड़ा मत सुनो – नेगेटिविटी (नकारात्मकता) बढ़ती है।
25. सत्संग शोर्ट में (कम शब्दों में) सुनाओ।
26. जब ध्यान लगे, तभी अमृतवेला।
27. मैंनू कोई प्यार नहीं करदा, सब लम्बी लिस्टें लेकर आँदे हैं।
    - मुझे कोई प्यार नहीं करता, सब लम्बी सूची लेकर आते हैं।
28. लोग कल्याण करवाकर भूल जाते हैं।
29. अपनी ब्लेस्सिंग (आशीर्वाद) डायरी में नोट करो।
    - अपने आशीर्वाद डायरी में लिखा करो।
30. शिव ता तेरे सामने बैठा है, तू उथे क्या सीनरी देखन जा रिहा है।
    - शिव तो तुम्हारे सामने बैठा है, तुम वहाँ क्या सैर करने जा रहे हो।

- जब जेठरा अंकल ने गुरुजी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर जाने की आज्ञा लेनी चाही।

31. शबद ध्यान से सुनो – उन्हीं से जवाब भी मिलते हैं और कल्याण भी होता है।
32. सत्संग सिम्पलिसिटी (साधारण तरीके) से करो – लंगर में एक मीठा, एक नमकीन।
33. लंगर घर में खुद बनाओ।
34. बहुत माड़ा टाइम आन वाला है; घर घर में कैंसर, डिवोर्स और डिप्रेशन होंगे।
    - बहुत बुरा समय आने वाला है; घर-घर में कैंसर, तलाक और अवसाद होंगे।
35. मूर्खों के हम दास।
36. गुरु जी के दिए हुए बच्चे बहुत स्मार्ट और इंटेलीजेंट होते हैं (समझदार और बुद्धिमान); उन पर कभी हाथ नहीं उठाना चाहिए।
37. गुरु से माँगकर गुरु को छोटा कर देते हो। माँगो नहीं, मानो।

38. जब सिमरण करते हो, साथ में बैठे हुए को भी पता नहीं चलना चाहिए। जीभ तालू से लगी होनी चाहिए और जाप करना चाहिए। मूँह से बोलकर जाप नहीं करते।
39. शबद के साथ गुनगुनाना नहीं चाहिए।
40. शबद तभी चलाओ जब सब चुप बैठकर सुन रहे हों। शबद चल रहे हों तो बातें नहीं करो।
41. मेरे पास जीरो बनकर आओ।
42. क्या-क्या कर्म करते रहते हो, तुम्हें पता भी है कर्म कटवाना क्या होता है।
    - इफ यू आर चीटिड, समथिंग इस लॉस्ट; इफ यू चीट समवन, एवरीथिंग इस लॉस्ट।
    - अगर आप धोखा खाते हो तो आप कुछ खो देते हो; मगर अगर आप किसी को धोखा देते हो तो आप अपना सब कुछ खो देते हो।
43. मैं देने के लिए बैठा हूँ, तुम लेने वाले तो बनो ।
44. अहंकार कभी नहीं करना चाहिए, अपना अहम खुद खत्म करो, मैं करूँगा तो चीखें मारोगे।

30. अनिल सेठ अंकल

1. एथे आँदे हो ता जूती नाल अकल वी बाहर छडके आया करो।
   - यहाँ आते हो तो जूते के साथ अकल भी बाहर छोड़कर आया करो।
2. दरबार विच फ़ोन कदे वी यूज़ ना करना, नहीं ते ब्लेस्सिंग्स स्लिप हो जांगियाँ। फ़ोन नू ऑफ कर दिया करो।
   - दरबार में फ़ोन कभी भी इस्तेमाल ना करना, नहीं तो आशीर्वाद लेने से चूक जाओगे। फ़ोन को बंद कर दिया करो।
3. एथे आन दे बाद किस्मत दा कोई रोल नहीं।
   - यहाँ आने के बाद किस्मत का कोई योगदान नहीं।
4. तुसी कीचड़ विच फसे होए हो। मैं तुहानू कीचड़ तों बाहर कडन आया हाँ।
   - तुम कीचड़ में फसे हुए हो। मैं तुमको कीचड़ से बाहर निकालने आया हूँ।

5. अपने प्रोब्लम्स किसी नू ना दस्या करो। लोकी मज़ाक उड़ानगे।

- अपनी परेशानियाँ किसी को न बताया करो। लोग मज़ाक उड़ायेंगे।

6. मैंनू वी प्रोब्लम्स दसन दी कोई लोड नहीं। मैंनू सब पता है।

- मुझे भी परेशानियाँ बताने की कोई जरुरत नहीं। मुझे सब पता है।

7. मेरे तो मंगेया ना करो। मंग के लेया ता की लेया।

- मेरे से माँगा ना करो । माँग के लिया तो क्या लिया।

8. तुसी ए, बी, सी विच ही फसे होए हो। जद तुसी सत्संग विच आंदे हो, मैं तुहानू साफ़ करके भेजदा हाँ। तुसी वापिस गंदे होके आजांदे हो।

- तुम ए, बी, सी में ही फसे हुए हो। जब तुम सत्संग में आते हो, मैं तुम्हे साफ़ करके भेजता हूँ। तुम वापिस गंदे होकर आ जाते हो।
- ए से एब्यूज – दूसरों के साथ दुर्व्यवहार नहीं करो।
- बी से ब्लेम – दूसरों को दोष नहीं दो।

- सी से क्रिटिसाईस और कर्स – दूसरों की निंदा नहीं करो। अपशब्द नहीं बोलो।
  नहीं तो आध्यात्मिक उन्नति नहीं होगी।

9. अपना चाय प्रसाद अग्गे किसी नू पास ना करया करो। जो गिलास तुसी चुक लेया, ओ तुहाडा ब्लेस्ड प्रसाद हो गेया।
   - अपना चाय प्रसाद आगे किसी को न दिया करो, जो गिलास तुमने उठा लिया, वो तुम्हारा ब्लेस्ड (आशीर्वादपूर्ण) प्रसाद हो गया।
10. लंगर नू वी एथे ही खाना है। घर लैके नहीं जाना। एथे खादा ता दवाई, घर खादा ता मिठाई।
    - लंगर को भी यहीं खाना है, घर लेकर नहीं जाना। यहाँ खाया तो दवाई, घर जाकर खाया तो मिठाई।
11. नॉन वेज न खाया करो। पुठे कर्म बनदे ने। ऐ पुठे कर्म बहुत औखे मुकदे ने।
    - मांस का सेवन न करो। उल्टे कर्म बनते हैं। ये उल्टे कर्म बहुत मुश्किल से खत्म होते हैं।

12. एथे जो शबद वजदे ने, मेरे ब्लेस्ड शबद है। ऐना नू शांति नाल सुनेया करो, समझ आन या ना आन। ऐ तुहाडे कर्म कट्टनगे। ऐ शबदा दे नाल मैं तुहाडे नाल कम्यूनिकेट करदा हाँ।
  - यहाँ जो शबद चलाये जाते हैं, मेरे ब्लेस्ड (आशीर्वादपूर्ण) शबद हैं। इनको शांति से सुना करो, समझ आएँ या न आएँ। ये तुम्हारे कर्म काटेंगे। ये शब्दों के माध्यम से मैं तुमसे बातचीत करता हूँ, तुम्हारे सवालों का जवाब देता हूँ।
13. कोई इंसान रब तों चंगा नहीं लिख सकदा। ऐ शबद रब दी रचना हैं। ऐना नू बार–बार सुनेया करो।
  - कोई इंसान रब से अच्छा नहीं लिख सकता। ये शबद रब की रचना हैं। इनको बार-बार सुना करो।
14. मेरी फोटो नू फोटो ना समझना। ऐ मेरा स्वरूप है। जिथे मेरा स्वरूप उथे मैं। मेरे स्वरूप नाल अपनी गल्लां शेयर करेया करो। मैं सुन्दा हाँ ते जवाब वी देंन्दा हाँ।

- मेरी फोटो को फोटो मत समझना। यह मेरा स्वरूप है। जहाँ मेरा स्वरूप वहाँ मैं। मेरे स्वरूप के सामने अपने मन के भाव साझा किया करो। मैं सुनता हूँ और जवाब भी देता हूँ।

15. दान हमेशा उल्टे हथ नाल करेया करो।
    - दान हमेशा बाएँ हाथ से करो।
16. जाप वास्ते माला ना फेरिया करो। अहंकार औंदा है। जाप नू काउंट ना करिया करो।
    - जाप करने के लिए माला मत फेरो। अहंकार आता है। जाप की गिनती मत करो।
17. घर विच मूर्तियाँ ना रखेया करो। बहुत नेगेटिविटी आंदी है, तुहानू पता वी नहीं लगेगा।
    - घर में मूर्तियाँ ना रखो। बहुत नकारात्मकता आती है, आपको पता भी नहीं लगेगा।
    - गुरु जी ने यहाँ ये बात घोड़े, डॉल्फिन आदि सजावटी मूर्तियों के सम्बन्ध में कही है और उन्होंने अपने घरों से ऐसे सजावटी सामान को हटा देने की सलाह भी दी।

31. दीपिका गुप्ता आंटी और संजय गुप्ता अंकल

1. ओ साडा डॉक्टर हैगा, लंगर प्रसाद आला। जा ऐश कर।
   - वो हमारा डॉक्टर है, लंगर प्रसाद वाला। जा ऐश कर।
2. ऐथे आंदे हो, किसी नाल गल्लां करन दी लोड नहीं हैगी। घोड़े दे ब्लाईंडर लगा के सिद्धे घर जाया करो।
   - यहाँ आते हो, किसी के साथ बातें करने की जरुरत नहीं है, घोड़े के ब्लाईंडर (घोड़े की आँखों के पास लगी पट्टी) लगा कर सीधे घर जाया करो।
3. फ़ोन ते सेवा ना दित्ता कर। जो तेरी सेवा है, खुद जा के कित्ता कर।
   - फ़ोन पर सेवा ना दिया कर। जो तेरी सेवा है, खुद जा कर किया कर।
4. बहुत कष्ट है; कोई ना, मैं नाल हैगा हाँ।
   - बहुत कष्ट है; कोई नहीं, मैं साथ हूँ।
5. ऐथे आ गए हो, तेरे व्रत पूरे होए। चल उद्यापन कर। खाली पेट सेवा नहीं करनी चाहिदी।

- यहाँ आ गए हो, तेरे व्रत पूरे हुए। चल उद्यापन कर। खाली पेट सेवा नहीं करनी चाहिए।

6. गुरुजी सेड, "किथे! मैं एथे, ते तू उथे किवें?"
   - मेरी मानसरोवर धाम की यात्रा के दौरान गुरुजी ने कहा था, "कहाँ! मैं यहाँ तो तू वहाँ कैसे?"
7. आँदे रिहा करो।
   - आते रहा करो
8. सज्जा हथ कम्म करे ते पुट्ठे नू पता ना लगे।
   - दायाँ हाथ काम करे तो बाएँ को पता नहीं चलना चाहिए।
9. मैंनू मोर पंख बड़ा चंगा लगदा है।
   - मुझे मोर पंख बहुत अच्छा लगता है
10. तेरा शिव बाहर यमराज नू रोक के खड़ा है। कहंदा है कि बहुत जल चड़ाया है, नहीं लैके जाना।
    - तुम्हारा शिव बाहर यमराज को रोक कर खड़ा है। कहता है कि बहुत जल चढ़ाया है, नहीं लेकर जाना।
11. चल कम्म ते लग जा... संगत वधाओ।
    - चलो काम पर लग जाओ... संगत को बढ़ाओ।

12. गुरूजी महाराज ने मुझे एक जगह लिखा हुआ दिखाया "चेंज इज फॉर गुड" (परिवर्तन अच्छा है)।

32. कृष्ण सेतिया अंकल

1. कारोबार नहीं चलदा सब नू नहीं कहना चाहिदा, होर पुठा हो जांदा है। सारी प्रोब्लम्स सिर्फ मैंनू दस। फ़िक्र ना करिया कर, मैं हाँ ना।

- कारोबार नहीं चलता सब को नहीं बताना चाहिए, और उल्टा हो जाता है। सारी परेशानियाँ सिर्फ मुझे बताओ। फ़िक्र न करो, मैं हूँ ना।

2. सब दी फाइल मैं ही खोलदा हाँ, ते मैं ही बंद करदा हाँ। फाइल बंद करन वास्ते ही मैं खोलदा हाँ, बस तू पॉजिटिव सोचिया कर।

- सब की फाइल मैं ही खोलता हूँ और मैं ही बंद करता हूँ। फाइल को बंद करने के लिए ही मैं खोलता हूँ, बस तू सकारात्मक सोचा कर।

3. मेरे कोल आया कर ते होरां नू वी लेके आया कर। उन्हां दा कल्याण होन तों पहलां, तेरा कल्याण हो जायेगा।

- मेरे पास आया कर और दूसरों को भी लेकर आया कर। उनका कल्याण होने से पहले तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

4. सब दे भले दी सोचो तुहाडे वास्ते मैं हाँ ना।
- सब के भले की सोचो, तुम्हारे लिए मैं हूँ ना।

5. किसी नू बुरा भला कहन नाल, चुगली करन नाल... ब्लेस्सिंग्स घटदियाँ ने। सारा मेरे ते छड दो, मैंनू सब पता है।
- किसी को बुरा-भला कहने से, चुगली करने से... आशीर्वाद कम होता है। सब मेरे ऊपर छोड़ दो, मुझे सब पता है।

6. घर विच सब दा ख्याल रखो। इक दूसरे दा ख्याल रखना, साफ़-सफ़ाई रखना, सारा सामान अपनी-अपनी जगाह ते रखना, ते घट तों घट सामान रखना चाहिदा है। सिर्फ जरुरत दा समान होना ही सब तों वड्डा सत्संग है।
- घर में सब का ख्याल रखो। एक दूसरे का ख्याल रखना, साफ़-सफ़ाई रखना, सारा सामान अपनी-

अपनी जगह पर रखना, और कम से कम सामान रखना चाहिए। सिर्फ जरुरत का सामान होना ही सब से बड़ा सत्संग है

7. कलेश ते ऐटीटयूड तों बचो। चुप रहो – इक चुप सौ सुख।

- कलेश और गलत रवैये से दूर रहो। चुप रहो – एक चुप सौ सुख।

8. पानी ज्यादा पीया कर, ते रात नू घट्ट लून मसाले वाला दलिया ही खाना चाहिदा है। कौड़ियाँ चीजां ज्यादा खाया कर।

- पानी ज्यादा पीया कर, और रात को कम नमक-मसाले वाला दलिया ही खाना चाहिए। कड़वी चीजें ज्यादा खाया कर।

9. घर दे कम्म करन वाले और पेट्स, ड्राइवर, मेड, वर्कर दा वी ख्याल रखना चाहिदा है। खान वास्ते देना है तां अपने खान तों पहलां दे देयो।

- घर के काम करने वाले और पालतू जानवर, गाड़ी चलाने वाले, घर के कामों में हाथ बटाने वाले सहायक,

कर्मचारियों का भी ख्याल रखना चाहिए। खाने के लिए देना है तो अपने खाने से पहले दे दो।

10. कोई लोड-मंद दी मदद करो, किसी गरीब दी कुड़ी दा व्याह कराओ, या पाठ करो। ख्याल रखो इह गुप्त होना चाहिदा है। किसी दे आगे शोर ना पाओ।

- किसी जरुरतमंद की सहायता करो, किसी गरीब की लड़की की शादी करवाओ, या पाठ करो तो ख्याल रहे, यह गुप्त होना चाहिए। किसी के आगे शोर न मचाओ।

11. गुरुजी ने मैंनू पुच्छेया, पाठ करदा है? मैंने कहा, हाँजी। गुरूजी कहंदे ने किसदा पाठ करदा है। मैंने कहा, हनुमान जी दा, मंगलवार मैं हनुमान चालीसा दा पाठ करदा वाँ। गुरूजी कहंदे ने करया कर, मैं भी मंगलवार छुट्टी करदा हाँ।

- गुरुजी ने मुझे पूछा, पाठ करता है? मैंने कहा, हाँजी। गुरूजी पूछते हैं किसका पाठ करता है। मैंने कहा, हनुमान जी का, मंगलवार मैं हनुमान चालीसा का पाठ

करता हूँ। गुरुजी कहते हैं, किया करो, मैं भी मंगलवार छुट्टी करता हूँ।

12. गुरूजी इक बार कह रहे सी, एस दुनिया तों ऊपर दी दुनिया ज्यादा सोहनी है। न ऐथे डरो, ना ओथे जान तों डरो। मैं ओथे वी हाँ, बस चंगे करम करो।

- गुरूजी एक बार बोल रहे थे कि इस दुनिया से ऊपर की दुनिया ज्यादा सुंदर है। न यहाँ डरो, न वहाँ जाने से डरो। मैं वहाँ भी हूँ, बस अच्छे कर्म करो।

13. इक वार गुरूजी ने अपना छोटा स्वरूप दित्ता ते कहा, इस्नु गडवी दे उत्ते पकड़कर नवा देयिन्। इक्कठा होया पानी, अपने घर एच ते कम्म-काज दी जगह इच छिडको ते पीओ वी। गुरूजी ने केहा इस नाल सारी नेगेटिविटी दूर हो जाएगी।

- एक बार गुरूजी ने अपना छोटा स्वरूप दिया और कहा, इसको गडवी के ऊपर पकड़कर नहला देना। इक्कठा हुआ पानी, अपने घर और काम करने की जगह में छिडको और पीओ भी। गुरूजी ने कहा कि इस से सारी नकारात्मकता दूर होती है।

33. लीला जोशी आंटी

1. बन्दे बन जाओ।
   - अच्छा इंसान बनो
2. कुछ भी “बाय-चान्स” नहीं होंदा, सब कुछ गुरु के हाथ है।
   - कुछ भी इत्तेफ़ाक से नहीं होता, सब कुछ गुरु के हाथ में है।
3. हस्बैंड वाइफ की, और वाइफ हस्बैंड की सेवा करे।
   - पति पत्नी की, और पत्नी पति की सेवा करे।
4. मन होवे चंगा तो नलके दा पानी भी गंगा।
   - अगर मन अच्छा हो तो नल का पानी भी गंगा जल के समान होता है।
5. मूर्खों के हम दास।
   - बहस न करो।
6. अपना भांडा साफ़ रखो। दुजेयाँ नू ना देखो अपना भांडा देखो।
   - अपना बर्तन साफ़ रखो। दूसरों को ना देखो अपना बर्तन देखो।

7. जे रब सो गया ते प्रलय ना आ जाए गी!
   - अगर रब सो गया तो प्रलय नहीं आ जाएगी!
8. पशु इंसान से ज्यादा अच्छा है, मरने के बाद भी काम आता है।
9. भुलेखों को दूर करते थे – आँख फड़कती थी, तो कहते थे भगवान अक्यूप्रेशर कर रहा है।
10. एक को पकड़ कर रखो।
11. थां-थां ना भटको।
    - जगह-जगह ना भटको।
12. सबके लिए अलग-अलग इंजेक्शन है।
13. दिल्ली के लोग समझते नहीं।
14. जे दस के कित्ता ते की कित्ता।
    - अगर बताकर किया तो क्या किया।
15. आपां तो वेले हैं।
    - हम तो वेले (बिना काम के) हैं।
16. रब तुहाडे अंदर बैठा है।
    - भगवान आपके अंदर बसता है।

34. पंकज गौतम अंकल

1. देखली दुनिया, इथे कोई किसे दा नी, सब एदां इ हुंदे ऐ। मैं पुछेया कैसे चलेगा, फेर गुरूजी ने अपनी पहली ऊँगली आसमान दी तरफ किती और केहा, ओह बहुत वड्डा मास्टर है, उदे कम्म करन दे तरीके अपने है, देखी चल टाइम आन ते सब पता लग्गजू।
   - देखली दुनिया, यहाँ कोई किसी का नहीं, सब ऐसे ही होते हैं। मैंने उनसे पूछा, कैसे चलेगा, फिर गुरूजी ने अपनी पहली ऊँगली आसमान की तरफ़ करके कहा, वो बहुत बड़ा मास्टर है, उसके काम करने के तरीके अपने हैं, देखना समय आने पर सब पता चल जायेगा।
   - जब संगत में से किसी एक से धोखा मिला – दिसम्बर २००९ में स्वपन दर्शन।
2. कोई एदां ही ठीक नी हो जांदा, ऐ सारे कष्ट मैं अपने ऊपर लैंदा ऐ, तां कोई ठीक हुंदा।
   - कोई ऐसे ही ठीक नहीं हो जाता, ये सारे कष्ट मैं अपने ऊपर लेता हूँ, तब कोई ठीक होता है।

- २००८ और २००९ के बीच स्वपन दर्शन – जब उन्होंने मेरे पिता जी को आशीर्वाद दिया।
- जब मेरे पिता जी का अलसर फूटा और उनको हस्पताल में भर्ती किया, वह वेंटीलेटर पर थे। फिर उन्होंने उन्हें आई.सी.यू में भेज दिया और उसके बाद वार्ड में। फिर बारह दिनों के बाद उन्हें घर भेज दिया। हस्पताल से छुट्टी होने के चार-पाँच दिनों के बाद गुरूजी मेरे सपने में आये।
- उन्होंने कहा :- चल सत्संग चलें। मैंने कहा, ठीक है गुरूजी। हम चले गए, गुरूजी दो सीट वाले सोफ़े के ऊपर बैठ गए और मैं उनके कमल चरणों के पास बैठ गया। उन्होंने कहा, आजा ऊपर ही आजा। मैं उनके साथ बैठ गया। फिर उन्होंने कहा कोई ऐसे ही ठीक नहीं हो जाता, ये सारे कष्ट मैं अपने ऊपर लेता हूँ, तब कोई ठीक होता है। मैंने कहा हाँजी गुरूजी। फिर गुरूजी ने कहा, देखोगे? मैंने कहा, हाँजी गुरूजी। फिर गुरूजी ने अपना चोला अपनी छाती के पास से खोल कर दिखाया। जो नलियाँ मेरे पिताजी के वेंटिलेटर पर

लगी हुई थी, वो बिल्कुल वहीं गुरूजी के शरीर पर लगी हुई थीं – मैं देखकर हैरान रह गया। फिर वो भावुक हो गए और बोले, बता मैं कब तक ऐसे करता रहूँगा। मैं भी भावुक हो गया और चिंता न करो गुरूजी मैं हूँ ना.... कहते हुए गुरूजी को गले लगा लिया।

3. क्या बीबियाँ वाँगू चुगलियाँ कर रहियाँ हो। अग्गे हो, सुनो की कह रिहा ओ।

- क्या औरतों के जैसे चुगलियाँ कर रही हो। आगे हो जाओ और सुनो क्या बोल रहा है वो।
- गुरूजी का सत्संग उनके दरबार में सुनने की महिमा : एक बार गुरूजी ने एक संगत को एम्पायर एस्टेट में सत्संग सुनाने को कहा। गुरु जी अपनी गद्दी पर विराजमान थे। हम उनके नज़दीक बैठे थे। हम सत्संग सुनाने वाली संगत के इर्द–गिर्द बैठकर शांति से सत्संग सुन रहे थे और गुरूजी भी सुन रहे थे। परन्तु लगभग तीन आंटी सत्संग नहीं सुन रही थीं, बल्कि बातें करने में व्यस्त थीं। गुरूजी के बिल्कुल पास बीईं तरफ बैठीं थीं। गुरूजी ने बाईं ओर मुड़कर, बिना बोले उन्हें बातें

बंद करने का इशारा किया। गुरूजी ने सिर्फ एक संकेत दिया मगर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। गुरूजी ने दोबारा वैसे ही चुप होने का इशारा किया मगर उनकी ओर से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं हुई, फिर गुरूजी बड़े गुस्से से अपनी बाईं ओर मुड़े और यह कहा। फिर वो आगे आईं और सत्संग सुनना शुरु किया।

4. आ बाहर कड्ड इस्नु, कदों दी चाह दा गिलास चक्क के ऐथे बैठ रही कदे उत्थे, मैं चाह दी दुकान खोली है इत्थे!

- आ बाहर निकालो इसको, कब से चाय का गिलास उठाकर यहाँ बैठ रही कभी वहाँ, मैंने चाय की दुकान खोली यहाँ!
- गुरूजी के दरबार में चाय प्रसाद ग्रहन करने की महत्त्वता।
- एक बार एक महिला कभी बैठ जाती थी, तो कभी खड़ी हो जाती थी। दो-तीन बार उसने आशीर्वादपूर्ण चाय प्रसाद अपने हाथ में लेकर ऐसा किया। वह उस

समय एक–एक घूंट करके पी रही थी। गुरूजी एम्पायर एस्टेट में अपनी गद्दी पर बैठे तीव्र दृष्टि से यह सब देख रहे थे। फिर गुरूजी अपने दाएँ हाथ की तरफ रखे मेज पर रखी घंटी बजाने लगे। उन्होंने सेवादार से यह कहा।

- मतलब यह कि हमें आशीर्वादपूर्ण दिव्य प्रसाद को प्यार और श्रधा से ग्रहन करना चाहिए। गुरूजी में खो जाना चाहिए इस आशीर्वादपूर्ण दिव्य प्रसाद को लेते हुए। ध्यान इधर-उधर नहीं लगाना चाहिए।

35. डॉ बीना सिंह

1. अपनी ईगो चप्पल नाल रख के आयीं।
   - अपने अहं (अहंकार) को चप्पल के साथ रख कर आओ।
2. महाशिव आपके सामने बैठा है ।
3. तुम हो 'पी.एच.डी', पागल होने का डर; हँसते हुए मुझे कहा।
4. घर सब से बड़ा मन्दिर होता है, अगर पति पत्नी शांति से रहते हैं। फिर तन मंदिर, फिर मन मंदिर, और बड़ा मंदिर।
5. मैंने पूछा, आप सबको बड़े मंदिर क्यों बुलाते हो? उन्होंने कहा, तुम्हारी कम्पनी (जहाँ आप कार्य करते हो) तुम्हें दीवाली और दूसरे मौकों पर बोनस (अतिरिक्त लाभ) देती है – ये भी विशेष आशीर्वाद मिलने जैसा है।
6. उन्होंने अपने पैर के अँगूठे में से निकलने वाली नीले रंग की रौशनी के दर्शन करवाए। मैंने सोचा कि उनके मोज़े के ऊपर जुगनू बैठा है, मगर नहीं, वो तो उनके

पैर में से निकलने वाली दिव्य रौशनी थी और मैंने सौभाग्य से इसके दर्शन किए ।

7. जब भी हुकुम हो, तभी जाना चाहिए। मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ, मगर अगर आप बैठे रहोगे तो ये मौका खो दोगे, फिर क्या पता आपकी बारी कितने सालों के बाद आयेगी।
8. सुबह और शाम के समय दीपक अवश्य जगाएँ।
9. मैंने तुम्हें आशीर्वाद दे दिया है – कई सालों के बाद तुम्हें आभास होगा।
10. बिना तुम्हारे जाने, मैंने तुम्हें आशीर्वाद दे दिया है और तुम्हारा कठिन समय खत्म कर दिया है।
11. सिर्फ मैं तुम्हारी किस्मत लिख सकता हूँ, और कोई नहीं।
12. मैं कभी कुदरत और आत्मा की यात्रा में कोई हस्तक्षेप नहीं करता, मगर अगर जरुरत पड़े तो तुम्हारे कर्मों के अनुसार बदलाव कर सकता हूँ।

36. सुकृति वंदना शर्मा आंटी

1. ऐ वेखो, ऐ मेरी परीक्षा लेन आ गयी है।
   - यह देखो, ये मेरी परीक्षा लेने आ गई है।
   - गुरूजी ने मुझे पहली बार देखते ही कहा था, जब मैं पहली बार गुरूजी से मिलने जलंधर मंदिर 1993 में गयी थी, तब मैं वहाँ आधे-अधूरे मन से गयी थी।
2. जोर लगा, दम नहीं हैगा।
   - जोर से दबाओ, ताकत नहीं है?
   - गुरूजी के हाथ दबाते हुए।
3. यह मेरी एक्सरे मशीन है।
   - उनके द्वारा चम्मच के साथ मेरे उपचार के दौरान।
4. ॐ नमः शिवाय बोलते रहना।
   - उपचार करते हुए उन्होंने मुझे हिदायत दी।
5. तेनू की लगदा ऐ, मैं क्यों अपने हत्थ पैर दबवांदा हाँ।
   - तुम्हें क्या लगता है, मैं क्यों अपने हाथ पैर दबवाता हूँ।
   - तुरंत उन्होंने अपने आप बताया... मेरी पॉजिटिव एनर्जी (सकारात्मक उर्जा) संगत के कष्ट दूर करती है।

6. औरतें सब से पहले अपने पति, बच्चे और पूरे परिवार के लिए सोचती हैं, उनको ही पहले आशीर्वाद दिलवाना चाहती हैं, अपने लिए कुछ नहीं माँगती, इसलिए मैं उनको पहले सेवा का मौका देता हूँ।

- संगत में से जब किसी ने पूछा कि उनके कंधे, हाथ और पैर दबाने की सेवा ज्यादातर औरतें ही क्यों करती हैं, तो गुरूजी ने यह जवाब दिया।

37. उमेश जैन अंकल और जूही जैन आंटी

1. निंदा कभी किसी की ना करो।
2. जिसने कभी किसी का भला नहीं किया, उसका मैं क्या भला करूँगा।
3. जो शबद यहाँ सुन रहे हो, उनमें ही सब समस्याओं का हल मिलेगा।
4. मुझ से अपने लिए कुछ न माँगना; जब भी माँगना औरों के लिए माँगना।
5. किन्तु-परन्तु को जोड़ों के साथ छोड़ कर आया करो।
6. शुकराना और सिमरन करते जाओ, बाकि मैं हूँ ना।
7. माँगो नहीं, मानो।
8. जो तुम मुझसे माँगते हो, क्या तुम जानते हो कि वो तुम्हारे आने वाले समय के लिए ठीक है? मुझे पता है कि क्या ठीक है तुम्हारे लिए।
9. सत्संग के बाद सीधे घर जाओ, और कहीं नहीं।
10. मुझे पता है के कब क्या कल्याण करना है तुम्हारा।
11. एक तुम्हारा गुरु ही सस्ता है, बाकि सब महंगा है।

38. अक्षय भल्ला अंकल

1. गुरूजी ने हमेशा कहा है, कभी किसी संगत का दिल ना दुखाओ।
2. अगर किसी की सहायता कर सकते हो तो जरुर करो।
3. गुरूजी हमेशा साफ़ सफाई और अनुशासन पसंद करते है।
4. जब भी तुम गुरूजी के दरबार में जाते हो, जहाँ अपने जोड़े उतारते हो, वहाँ अपना दिमाग भी छोड़ कर आया करो। ताकि वह तुम्हारे दिमाग में वही रखें जो तुम्हारे लिए अच्छा है।
5. जब तुम गुरूजी की शरण में हो, तो सिर्फ उनके सामने समर्पण करो और वह तुम्हे सँभाल कर देखभाल करेंगे।

39. मेलोडी आंटी (रेनू शर्मा आंटी)

1. गुरुजी हमेशा कहते थे कि कभी किसी संगत का दिल न दुखाओ।
2. मैं कभी भी चमत्कार नहीं करता। मैं तांत्रिक नहीं, गुरु हूँ, कल्याण करता हूँ। मैं कोई बाबा नहीं।
3. अपनी सोच उच्ची रखो। लोगों की उल्टी बातें ना सुना करो।
4. गुरु नू सब पता हुंदा है।
   - गुरु को सब पता होता है।
5. सब कुछ मेरी मर्जी नाल हुंदा है।
   - सब कुछ मेरी मर्जी से होता है।
6. जद तुसी मेरे चरना ते मत्था टेकदे हो ता गुरु तुहाडे ९०% कर्म कट देंदा हाँ, १०% तुसी भुगतदे हो।
   - जब तुम मेरे चरणों में माथा टेकते हो तो गुरु तुम्हारे ९०% कर्म काट देते हैं, १०% तुम भुगतते हो।
7. मैं ही सब कुछ हाँ। मैं ही शिव, मैं ही हमेशा अपनी संगत दा कल्याण करदा हाँ। मेरा कोई वारिस नहीं। मैंनू नहीं चाहिदा कुछ; सब कुछ ट्रस्ट नू दे दो।

- मैं ही सब कुछ हूँ। मैं ही शिव, मैं ही हमेशा अपनी संगत का कल्याण करता हूँ। मेरा कोई वारिस नहीं। मुझे कुछ नहीं चाहिए, सब कुछ ट्रस्ट को दे दो।

8. कोई मंदिर नहीं चाहिदा। मेरे बाद बहुत भीड़ होगी लेकिन मेरी संगत मुट्ठी भर ही रहूगी।
   - कोई मंदिर नहीं चाहिए। मेरे बाद बहुत भीड़ होगी लेकिन मेरी संगत मुट्ठी भर ही रहेगी।
9. गुरूजी कहंदे ने सवेरे उठके शबद बाणी लगाकर सारे कामकाज करो। पहले खाओ पीओ फेर चंगी तरां सुनो।
   - गुरूजी कहते थे, सवेरे उठकर शबद बाणी लगाकर सारे कामकाज करो। पहले खाओ पीओ फिर अच्छी तरह सुनो।
10. गुरूजी लई कोई वी.आई.पी. नहीं गुरु नू तां सब प्यारे हैं। गुरु ने तां चोर डाकू दा वी कल्याण करना है।
   - गुरूजी के लिए कोई वी.आई.पी. (V.I.P) नहीं, गुरू को तो सब प्यारे हैं। गुरु को तो चोर डाकू का भी कल्याण करना है।

11. सत्संग सुनेया कर, तेरा कल्याण होगा। सत्संग करन वाले दा वी कल्याण ते सुनन वाले दा वी कल्याण।
    - सत्संग सुना कर, तेरा कल्याण होगा। सत्संग करने वाले का भी कल्याण होता है और सुनने वाले का भी कल्याण होता है।
12. गुरूजी आंटी नू कहंदे, तू तां कुछ नहीं मंगदी, तेरे गुरु ने तेनू सब कुछ दिता है। तू तो बड़ी भोली है, तेरे नाल डायरेक्ट कनेक्शन है। तू तां अपने रिश्तेदारां दा वी कल्याण करा लेंदी हैं।
    - आंटी तू तो कुछ नहीं माँगती है, तेरे गुरु ने तुझे सब कुछ दिया है। तू तो बड़ी भोली है, तेरे साथ डायरेक्ट कनेक्शन है। तू तो अपने रिश्तेदारों का भी कल्याण करा लेती है।
13. मुंदरी ते पत्थर ना पाया कर। गुरूजी ने कहा, पत्थर उतार के सुट दे।
    - मुंदरी और पथर ना पहना कर। पत्थर उतार कर फेक दे।

14. गुरु नाल जूडो। गुरु ने ही तुम्हारा कल्याण करना है। नग्गों ने नहीं।
15. अगर किसी की मदद कर सकते हो तो जरूर करो।

40. कमांडर शर्मा अंकल

1. गुरूजी ने कहा कि मंदिर में फूल न लाएं।
2. अपना सीधा सम्बन्ध अपने गुरु से बनाएं।
3. कनेक्शन एक से एक होना चाहिए – कोई मध्यस्थ नहीं।
4. कुछ कहने कि ज़रूरत नहीं, गुरूजी ने कहा कि वह सब कुछ जानते हैं।
5. गुरूजी से मांगो नहीं, गुरूजी को मानो।
6. गुरूजी अंगूठी और नग पहनने को मना करते हैं।
7. गुरूजी ने कहा कि माला जपकर प्रार्थना न करें। उन्होंने कहा कि इससे अहंकार आता है।
8. अपने घर कि महिलाओं का सम्मान करें, अपने पति से प्यार करें और उनका सम्मान करें। वही सर्वोत्तम गुरु सेवा है।
9. सत्संग सरल होना चाहिए, किट्टी-पार्टी जैसा नहीं। एक मीठा, एक दाल, एक सब्जी और चटनी।

10. गुरूजी ने कहा कि व्रत-उपवास आदि किसी भी अनुष्ठान का पालन न करें, इससे जीवन में बाधाएं आती हैं।

41. गोल्डी रंधावा आंटी

1. सच्चे प्यार में रब जेडी ताकत होंदी है।
   - सच्चे प्यार में रब जैसी ताकत होती है।
2. शिव पुराण पढ़ा करो।
3. संगत ही तुम्हारा परिवार है।
4. पहले का टाइम कैसा भी हो, लास्ट का टाइम बढ़िया होना चाहिए।
5. पाठ :- गृहस्थ इस्त्री को सबसे पहले अपने परिवार, और अपने बच्चों को पहले देखना चाहिए। फिर वो कहीं भी पाठ करे, घूमते फिरते, खाना बनाते, कभी भी।

42. शिव अंकल

1. शिव पुराण पढ़ो, तुम्हारा कल्याण होगा और आशीर्वाद मिलेगा।
2. अपने करम करो।
3. १९८० में जब गुरूजी पांच दिनों के लिए ध्यान में गए थे, गुरूजी ने कहा: "शिव, मैं तो इस दुनिया में नहीं था। न मेरे को भूख लगी थी, न मेरे को प्यास लगी थी। मैं किस दुनिया में था मैं तेरे को क्या बताऊ। लेकिन तू मेरे को कितना प्यार करता है, तू समझता होगा मेरे को भूख लगी होगी, मैं प्यासा हूँ। तू मेरा कितना ख्याल रखता है। जा तेनू ब्लेस्स किया, तेरा कल्याण किया, तू सदा खुशियों नाल जियेगा।"
4. जो मेरे आगे आता है, उसका टेवा/ पत्री सब मेरे आगे खुल जाता है।
5. मैं इस मंदिर (बड़े मंदिर) में, १२ (बारह) ज्योतिर्लिंग की शक्ति डाल रहा हूँ। जो भी कोई इंसान इस मंदिर के अंदर से, श्रद्धा से, दिल से, गुरूजी का ध्यान लगा कर, अंदर मंत्र जाप करते हुए, परिक्रमा करते हुए निकल

जाएंगे, उसके रोग कट जाएंगे, उसका कल्याण हो जायेगा।

6. मैंने तो आगे ब्लेस्स करने जाना है।
7. सत्संग के बाद लंगर प्रसाद जरूर लो।
8. लैना (लाइन्स) लगा करेंगी।
9. मंत्र जाप गुरूजी का ध्यान लगा कर करना है।
10. लंगर प्रसाद यहाँ पर खाओगे तो ब्लेस्सिंग्स हैं, दवाई है; घर जा कर मिठाई है।
11. जल प्रशाद की शक्ति को समझो।

43. रघुबीर अंकल

1. मैंने अपना कोई धरम नहीं चलाना, जिस धरम विच तुस्सी पैदा होए हो, उसी धरम दा पूजा पाठ करो, पर करो जरूर।
2. तुम आते हो, पहले तुम्हारा दिमाग पढ़ता हूं, फिर तुम्हारा करम पढ़ता हूं, उसके हिसाब से तुमसे डील करता हूं।
3. मेरे पे डाउट मत करना, 'इफ-एंड-बट' मत करना, 'लेट अस ट्राई' में ना आना। जीरो होके आओ, अपना दिमाग ना चलाओ।
4. तुस्सी मैनु याद करो, ते मैं तुहाडे कम्म करूंगा।
   - तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हारा काम करूंगा।
5. तुस्सी मैनु कीड़े मकोड़े दिखदे हो।
   - तुम मुझे कीड़े मकोड़े जैसे दिखते हो।
6. मैं अपने-आप विच आप पैदा होयां, मेरा कोई गुरु नहीं। मैं वेखन आया जगत तमाशा। मैं तुहाडे कल्याण करण वास्ते आया, करवालो जिना-जिना ने कल्याण करवाना है।

- मैं अपने-आप में आप पैदा हुआ हूं, मेरा कोई गुरु नहीं है। मैं जगत का तमाशा देखने आया हूं। मैं तुम्हारे कल्याण करने के लिए आया हूं, करवालो जिस-जिसने कल्याण करवाना है।

7. [गुरुजी ने मुझे कहा]
   जब तू उदास हो, जब तेरा मेरे को मिलने को दिल करे, ऐसे ही बैठ के मेरे को याद कर लिया कर, मैं तुरंत तेरे को आके टेलीपैथी से मिलके जाऊंगा, जैसे आज आया हूं।
8. तू अपनी संभाल, तेनु दूज्या नाल की।
   - अपने आप को संभालो, दूसरों को मत देखो।

जय गुरुजी

जब चारों तरफ अंधेरा हो
यकीन उठ गया तेरा हो
गुमसुम न हो, मत हो परेशान
रुके तेरे बनेंगे सारे काम
जीवन में कर बस गुरुजी का ध्यान।

शुक्राना

आपके अनन्त प्रेम और मार्गदर्शन के लिए

अनन्तम् शुक्राना गुरुजी महाराज।

गुरुजी के प्यारे संगत परिवार का शुक्राना

के अपना दिल खोल कर उन्हेंने

इस अमूल्य खज़ाने को

वैश्विक संगत परिवार के साथ साझा किया।

लेखक की टिप्पणी

गुरुजी महाराज की कृपा से हम सभी एक सामान्य दिव्य लक्ष्य की ओर अपनी-अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं। इस यात्रा में हमारे मार्ग अनोखे और एक-दूसरे से भिन्न हैं। दिव्यता की ओर कोई एक पथ नहीं होता। जो संदेश किसी एक संगत के लिए सही है, वह किसी और के लिए गलत हो सकता है या फिर उनकी इस यात्रा में किसी और समय पर उपयुक्त हो सकता है।

दिव्य पुस्तकों, गुरुबानी शबद, वचन, सत्संग इत्यादि बार-बार पढ़ने और सुनने से प्राप्त हुई ऊर्जा का हम सबने अनुभव किया है। हम उनके अंदर गहरे अर्थ पाते हैं और उन शब्दों में छुपे संदेश हमारे अस्तित्व में व्याप्त होने लगते हैं और हमारा हिस्सा बन जाते हैं। वे जीवन में और ईश्वर की ओर हमारी यात्रा में मार्गदर्शक बनते हैं।

महाराज बोले, मेरे से डायरेक्ट कनेक्शन रखो। हर संगत का उनके साथ अपना व्यक्तिगत संबंध है। वे हमारे मन

की बात जानते हैं, हमारा बीता हुआ कल, हमारा आज, और हमारा आने वाला कल भी जानते हैं। तदनुसार, वे आशीर्वाद देते हैं और सही समय पर अलग-अलग तरीकों से सभी का मार्गदर्शन करते हैं। और हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद है कि हम दिव्यता की ओर बढ़ रहे हैं।

नदर करे ता सिमरेया जाए।

उनकी नदर से ही हम उनका नाम जप सकते हैं।

बहुभाषीय दृष्टिकोण

"वैश्विक गुरु संगत को बहुभाषीय तरीके से जोड़ना।"

गुरुजी के सेवादार, गुरुजी की महिमा, उनके वचन, उनका प्रकाश और उनके यश का प्रचार व्यापक रूप से कर रहे हैं। प्रादेशिक और अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के माध्यम से, शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल सेवादार, सभी धर्म, जाति, पंथ और भाषाओँ के गुरु परिवार तक लिखित और मौखिक रूप द्वारा पहुँच रहे हैं; बिलकुल वैसे जैसे गुरुजी महाराज अपनी संगत को समान रूप से प्रेम करते हैं और आशीर्वाद देते हैं।

सुरेश वासन अंकल को, २४ जुलाई २०२० की सुबह स्वप्न दर्शन द्वारा गुरुजी महाराज की कृपा और मार्गदर्शन प्राप्त हुए और एक बहुभाषीय अवधारणा की शुरुआत हुई। गुरुजी महाराज ने उन्हें एक फाइल सौंपी जिसमें गुरबाणी शबद थे और कुछ खाली कागज़ थे। तेज़ गति से बात करते हुए गुरुजी महाराज ने उन्हें दो बार कहा,

"इस कम्म नूं अग्गे वधाओ" (इस काम को तीव्र गति से आगे बढ़ाओ)। उन्हें ईश्वर से यह हुक्म मिला और यह मार्ग दर्शाया गया।

महाराज से इतना धन्य हुक्म मिला।

फलस्वरूप बहुभाषीय अवधारणा की ओर यह एक विनम्र पहल थी जिससे आध्यात्मिकता की बेहतर समझ का प्रसार हो सके और वैश्विक स्तर पर सभी धर्मों, जाति, पंत और भाषाओं में दिव्यता के प्रति विश्वास विकसित किया जा सके। यह औरों की सहायता के बिना मुमकिन नहीं था और गुरुजी महाराज के आशीर्वाद से सुरेश वासन अंकल वैश्विक संगत से जुड़े। जुलाई २०२० में विश्वमारी के दौरान संगत के सहयोग, फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म द्वारा, शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल ग्रुप, पेज निर्मित किया गया। गुरुजी महाराज की कृपा से बहुभाषीय सेवादार आगे आए और कई भाषाओं में निम्नलिखित विविध गतिविधियों में भाग लिया:-

1.संगत जी, दिसम्बर २०२० में ७-पृष्ठ का अंग्रेजी-भाषा वर्णन, जिसका शीर्षक है, "प्रोस्ट्रेशन गुरुजी" ("गुरुजी को साष्टांग प्रणाम"), जीतू अंकल (जितेंद्र पंत अंकल), गुरुजी की जीवनकाल संगत, द्वारा प्रदान किया गया।

2.गुरुजी के आशीर्वाद से वर्ष २०२१ में "प्रोस्ट्रेशन गुरुजी" की अनुवाद सेवा वैश्विक सेवादारों द्वारा कई भाषाओं में की गई; जैसे हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली, तमिल, मलयालम, तेलुगु, पंजाबी, हरयाणवी, असामी, कांगरी, गढ़वाली, सिंधी, जर्मन, स्पैनिश, इटैलियन, पॉर्च्युगीस, फ्रेंच, पर्शियन, जापानी, नेपाली, अरेबिक, मैंडरिन और लिटुआनी भाषाएँ।

3.सहज श्रवण हेतु हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश और बंगला भाषाओं में दिव्य ग्रंथ "शिव पुराण" और दिव्य पुस्तक "ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी" को पढ़ने की सेवा शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल फेसबुक पेज द्वारा की जा रही है।

4.मार्च २०२१ में गुरुजी के अपार आशीर्वाद से, वैश्विक बहुभाषीय संगत द्वारा, दिव्य ग्रंथ "लाइट ऑफ डिविनिटी" की अनुवाद सेवा पंजाबी, बंगाली, मराठी, गुजराती और आसामी भाषाओं में आरंभ की गई। उनकी कृपा से, "लाइट ऑफ डिविनिटी" दिव्य ग्रंथ की अनुवादित पांडुलिपियाँ पंजाबी, बंगाली, मराठी और असमिया भाषा संस्करण में आदरणीय गौरव अंकल, बड़े मंदिर प्रबंधन को फरवरी २०२३, अप्रैल २०२३, जून २०२४ और दिसंबर २०२४ में क्रमशः प्रस्तुत किए गए हैं।

5.गुरुजी की कृपा से गुजराती और कन्नड़ भाषा क्षेत्र से शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल सेवादार "लाइट ऑफ डिविनिटी" के अनुवाद कार्य में व्यस्त हैं।

6.शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल फेसबुक पेज द्वारा पुरानी संगत नरिंदर ढंड अंकल की पुस्तक "मास्टर ऑफ लाइफ एंड डेथ" का अनुवाद और पढ़ने

की सेवा वैश्विक संगत द्वारा ७ भाषाओं में करी जा रही है।

7.उनकी कृपा से, सितम्बर २०२१ में शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल फेसबुक पेज द्वारा १३ भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में गुरुबाणी शबद व्याख्या का कार्य आरंभ किया गया।

8.वर्ष २०२२ में पुरानी संगत कमांडर शर्मा अंकल की पुस्तक "ब्लेसिंग्स रेडी फॉर डिविनिटी" की अनुवाद सेवा और पठन सत्र का आयोजन किया गया।

9.वर्ष २०२२ में मल्टीलिंगुअल होस्टिंग प्रो के ज़ूम प्लेटफार्म पर कमेलश मेहता आंटी की पुस्तक "द फ्लावर्स ऑफ ग्रेटिट्यूड" के पठन सत्र का आयोजन किया गया।

10.गुरुजी महाराज द्वारा अपनी जीवनकाल संगत को कहे गए सुनहरे वचन आसानी से पढ़ने, साझा करने

और भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास किया गया है।

11.मार्च २०२१ से मल्टीलिंगुअल होस्टिंग प्रो – ज़ूम प्लेटफार्म पर गुरुजी की वैश्विक संगत द्वारा सत्संग साझा करने की सेवा जारी है।

12.वर्ष २०२३ में मल्टीलिंगुअल होस्टिंग प्रो के ज़ूम प्लेटफार्म पर बाम्बी सिंह आंटी की पुस्तक "गुरुजी महाराज" के पठन सत्र का आयोजन किया गया।

13.२२ जुलाई २०२४ से १५ दिसंबर २०२४ तक, मल्टीलिंगुअल होस्टिंग प्रो - ज़ूम प्लेटफार्म पर गुरुजी की संगत द्वारा दिव्य ग्रंथ "लाइट ऑफ डिविनिटी" का विशेष पाठ साझा करने की सेवा जारी की गयी। जिनके साथ ये सत्संग अनुभव हुए हैं, वो ही संगत ने इन्हें विस्तार से साझा किया है।

14.गुरुजी के आशीर्वाद से वर्ष २०२५ में दिव्य ग्रंथ लाइट ऑफ डिवाइनिटी के वाचन-सत्र क्षेत्रीय भाषाओं में शुरू करने की योजना है।

15.शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स द्वारा गुरुजी की जीवनकाल संगत, डॉ. नीलम सिंह आंटी, विविध गतिविधियों में योगदान दे रही हैं और वैश्विक संगत को प्रेरित कर रही हैं।

16.गुरुजी की अपार कृपा से, २४ जुलाई २०२५ (2025) को शुक्राना गुरुजी महाराज दा मल्टीलिंगुअल ग्रुप के पाँच वर्ष पूरे होंगे। मल्टीलिंगुअल टीम हर सदस्य का धन्यवाद करना चाहती है जिन्होंने इन सत्संगों में भाग लिया और पठन सत्र सुने, विख्यात लेखक, अनुवादक और पर्दे के पीछे के सेवादार, जिनके परिश्रम और योगदान के बिना यह सब कभी मुमकिन नहीं हो सकता था।

शुक्राना गुरुजी महाराज दा,

अनन्तम् अनन्तम्

हर पल

मेरे मालिका मेरे दातेया।